चैत्र मास शुक्ल पक्ष, 22 वर्ष, अंक 105, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | रविवार 14 मई 2023 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

कर्नाटक में कांग्रेस ही किंग!

कर्नाटक में पूर्ण बहुमत से कांग्रेस सरकार, पीएम मोदी ने कांग्रेस पार्टी को जीत की दी बधाई, कहा- लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए मेरी शुभकामनाएं

नई दिल्ली। कर्नाटक विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी बड़ी जीत दर्ज की है। कांग्रेस ने 136 सीटों पर जीत दर्ज की हैं। । कर्नाटक विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने स्पष्ट बहुमत के साथ सत्ता में वापसी की है। 2024 लोकसभा चुनाव के पहले कर्नाटक विधानसभा चुनाव में पार्टी का ये प्रदर्शन निश्चित रूप से कार्यकताओं में जोश भरेगा। दक्षिण भारत में बीजेपी के सामने कर्नाटक की सत्ता को बचाए रखने की चुनौती थी, तो कांग्रेस के लिए वापसी का चैलेंज भी था। बसवराज बोम्मई के सहारे बीजेपी ने अपनी सत्ता को बरकरार रखने की पूरी कोशिश की, जबकि कांग्रेस डीके शिवकुमार-सिद्धरमैया की जोड़ी को आगे कर सत्ता में वापसी की कोशिश में लगी थी।

शनिवार दोपहर 12 बजे कर्नाटक कांग्रेस चीफ डीके शिवकुमार घर की बालकनी पर आए, कांग्रेस का झंडा फहराया और कार्यकर्ताओं के सामने हाथ जोड़े। मीडिया के बीच पहुंचे तो भावुक हो उठे। कहा- जेल में सोनिया गांधी मिलने आई थीं, उनसे जीत का वादा किया था। एक बजे के आसपास भाजपा ने हार मान ली। मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई सामने आए और कहा- नतीजों का एनालिसिस करेंगे, पार्टी लोकसभा चुनाव में दमदार वापसी करेगी। दोपहर 2:30 बजे राहुल गांधी दिल्ली में मीडिया के सामने आए। 6 बार मीडिया से नमस्ते कहा और 2 मिनट का वक्त मांगा। फिर बोले- हमने नफरत से लड़ाई नहीं लड़ी। कर्नाटक ने दिखा दिया कि देश को मोहब्बत पसंद है।

भ्रष्टाचार के आरोपों ने पहुंचाया बीजेपी को नुकसान

ये मुद्दा पूरे चुनाव में हावी रहा। चुनाव से कुछ समय पहले ही भाजपा के एक विधायक के बेटे को रंगे हाथों घूस लेते हुए पकड़ा गया था। इसके चलते भाजपा विधायक को भी जेल जाना पड़ा। एक ठेकेदार ने भाजपा सरकार पर 40 प्रतिशत कमिशनखोरी का आरोप लगाते हुए फांसी लगा ली थी। कांग्रेस ने इस मुद्दे को पूरे चुनाव में जोरशोर से उठाया। राहुल गांधी से लेकर मल्लिकार्जुन खरगे और प्रियंका गांधी तक ने इस मुद्दे को खूब भुनाया। जनता के बीच भाजपा की छवि धुमिल हुई और पार्टी को बड़ा नुकसान उठाना पड़ा।

दक्षिण बनाम उत्तर की लड़ाई का भी असर : इसे भी एक बड़ा कारण मान सकते हैं। इस वक्त दक्षिण बनाम उत्तर की बड़ी लड़ाई चल रही है। भाजपा राष्ट्रीय पार्टी है और मौजूदा समय केंद्र की सत्ता में है। ऐसे में भाजपा नेताओं ने हिंदी बनाम कन्नड़ की लड़ाई में मौन रखना ठीक समझा। वहीं, कांग्रेस के स्थानीय नेताओं ने मुखर होकर इस मुद्दे को कर्नाटक में उठाया। नंदिनी दूध का मसला इसका उदाहरण है। कांग्रेस ने नंदिनी दूध के मुद्दे को खूब प्रचारित किया। एक तरह से ये साबित करने की कोशिश की है कि भाजपा उत्तर भारतीय कंपनियों को बढ़ावा दे रही है, जबकि दक्षिण के लोगों को किनारे लगाया जा रहा है।

आरक्षण का मुद्दा पड़ा भारी : ये भी एक बड़ा कारण हो सकता है। कर्नाटक चुनाव में भाजपा ने चार प्रतिशत मुस्लिम आरक्षण खत्म करके लिंगायत और अन्य वर्ग में बांट दिया। पार्टी को इससे फायदे की उम्मीद थी, लेकिन ऐन वक्त में कांग्रेस ने बड़ा पासा फेंक दिया। कांग्रेस ने अपने चुनावी घोषणा पत्र में आरक्षण का दायरा 50 प्रतिशत से बढ़ाकर 75 फीसदी करने का एलान कर दिया। इसने भाजपा के हिंदुत्व को पीछे छोड़ दिया।

पूरी ताकत झोंकने के बाद भी कर्नाटक में क्यों हारी भाजपा?

कर्नाटक में क्यों हारी भाजपा? 'विधानसभा चुनाव के दौरान ही कर्नाटक चुनाव की तस्वीर काफी हद तक साफ हो गई थी। इस बार चुनाव में भाजपा बैकफुट पर नजर आ रही थी और कांग्रेस काफी आक्रामक थी। ऐसे में भाजपा की इस हार का मतलब साफ है।' प्रो. सिंह ने आगे भाजपा की हार के पांच बड़े कारण बताए।

आंतरिक कलह बनी मुसीबत: ये सबसे बड़ा कारण है। चुनाव के दौरान ही नहीं, बल्कि इससे काफी पहले से भाजपा में आंतरिक कलह की खबरें सामने आ चुकी थीं। कर्नाटक भाजपा में कई धड़े बन चुके थे। एक मुख्यमंत्री पद से हटाए गए बीएस येदियुरप्पा का गुट था, दूसरा मौजूदा मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई का, तीसरा भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) बीएल संतोष और चौथा भाजपा प्रदेश नलिन कुमार कटील का था। एक पांचवा फ्रंट भी था, जो पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव सीटी रवि का

था। इन सभी फ्रंट में भाजपा के कार्यकर्ता पिस रहे थे। सभी के अंदर पॉवर गेम की लड़ाई चल रही थी।

टिकट बंटवारे ने बिगाड़ा बाकी खेल : पार्टी आंतरिक कलह से जूझ रही थी। ऐसे समय टिकट बंटवारे को लेकर भी बड़ी गड़बड़ी हुई। पार्टी के कई दिग्गज नेताओं का टिकट काटना भाजपा को भारी पड़ा।

जिम्मेदार विपक्ष के रूप में काम करेंगे : बसवराज बोम्मई

नई दिल्ली: कर्नाटक के मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई ने विधानसभा चुनाव के आ रहे परिणाम को देखते हुए हार स्वीकार कर ली। उन्होंने कहा कि विधानसभा में अब भारतीय जनता पार्टी जिम्मेदार विपक्ष के रूप में काम करेगी। बसवराज बोम्मई ने शनिवार को कहा कि विधानसभा में अब भाजपा जिम्मेदार विपक्ष के रूप में काम करेगी। इसके साथ ही उन्होंने वर्ष 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव में वापसी की बात कही है। चुनाव परिणाम पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए बोम्मई ने कहा कि कर्नाटक के विधानसभा चुनाव में भाजपा असर नहीं छोड़ पाई। हम पार्टी को दोबारा संगठित करेंगे और लोकसभा चुनाव में मजबूती के साथ वापसी करेंगे। फिलहाल कर्नाटक विधानसभा चुनाव के नतीजों में कांग्रेस 138 और भाजपा 62 सीटों को अपने-अपने पाले में करती दिखाई दे रही है। देर शाम तक पूरे परिणाम के आने की संभावना है।

कर्नाटक में नफरत का बाजार अब बंद: राहुल

नई दिल्ली: कर्नाटक विधानसभा चुनाव के परिणाम आने शुरू हो गए हैं। रुझानों में कांग्रेस स्पष्ट बहुमत के साथ सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी को पटखनी देती दिख रही है। कर्नाटक चुनाव में कांग्रेस की सफलता को भारत जोड़ो यात्रा के सकारात्मक परिणाम के रूप में देखा जा रहा है। राज्य में कांग्रेस की बढ़त की खबरें आते ही राहुल गांधी कांग्रेस मुख्यालय पहुंचे और मीडिया को संबोधित करते हुए कर्नाटक की जनता का आभार व्यक्त किया और नेताओं-कार्यकताओं को बधाई दी। कर्नाटक में कांग्रेस की बंपर जीत के बाद पार्टी नेता राहुल गांधी ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि इन चुनावों में हमें जीत दिलाने के लिए कर्नाटक की जनता को शुक्रिया। कर्नाटक में नफरत का बाजार बंद हुआ है। बता दें कि कर्नाटक में कांग्रेस 130 से अधिक सीटें जीतती नजर आ रही है। राहुल ने आगे कहा कि कर्नाटक में नफरत का बाजार बंद हुआ और अब मोहब्बत की दुकान खुल गई है। कर्नाटक की जनता से हमने पांच वादे किए थे, हम इन वादों को पहले दिन पहली कैबिनेट में पूरा करेंगे। राहुल गांधी पत्रकारों से बात करते हुए बार-बार एक ही बात पर जोर दे रहे थे कि वह अपने पांच वायदों को सबसे पहले पूरे करेंगे। उन्होंने आगे कहा कि कांग्रेस पार्टी कर्नाटक में गरीबों के साथ खड़ी हुई है। हमने प्यार से ये लड़ाई लड़ी है।

कांग्रेस की जीत, जनता की जीत है : खड़गे

बंगलुरू: कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कर्नाटक विधानसभा चुनाव में पार्टी को अपार बहुमत के बाद राज्य की जनता के प्रति आभार व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि चुनाव में कांग्रेस की यह जीत, जनता की जीत है। खड़गे ने शनिवार को पत्रकारों से बातचीत के दौरान कहा कि कांग्रेस सरकार बनाने के बाद राज्य की जनता से किए अपने पांचों वादे को पूरा करेगी। पार्टी पर भरोसा जताने के लिए हम कर्नाटक की जनता को धन्यवाद देते हैं। आगे उन्होंने कहा कि कांग्रेस की जीत जनता की जीत है। कर्नाटक की जनता ने भ्रष्ट सरकार को नकार दिया है। हमने जो वादे किए हैं, उसे पूरा करेंगे। उन्होंने कहा कि आने वाले दूसरे राज्यों में भी कांग्रेस सरकार बनाएगी। एक सवाल का जवाब देते हुए खड़गे ने कहा कि विधायक दल की बैठक के बाद कर्नाटक के मुख्यमंत्री के नाम की घोषणा की जाएगी।

जीत के बाद कांग्रेस के सामने क्या हैं चुनौतियां?

बेंगलुरु: कर्नाटक की जनता ने इस बार रोटी पलट दी। बजरंग दल और बजरंगबली के मुद्दे के सहारे चुनाव जीतने की भाजपा की कोशिश काम नहीं आई। कांग्रेस के लिए अच्छी खबर यह है कि हिमाचल के बाद कर्नाटक भी उसकी झोली में आ गया है। छत्तीसगढ़ और राजस्थान में वह पहले से सत्ता में है। बिहार, झारखंड और तमिलनाडु में उसकी गठबंधन सरकार है। बहरहाल, कर्नाटक की जीत के बावजूद कांग्रेस के सामने कुछ चुनौतियां हैं। आइए इन चुनौतियों के बारे में जानते हैं...

पहली चुनौती : कौन बनेगा सीएम?: कांग्रेस के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह रहेगी कि मुख्यमंत्री किसे बनाया जाए? कांग्रेस के पास कर्नाटक में दो चेहरे हैं- पूर्व सीएम सिद्धारमैया और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डीके शिवकुमार। कांग्रेस के लिए यह स्थिति 2018 जैसी है, जब मध्यप्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में उसके पास दो-दो चेहरे थे।

सिद्धारमैया बनाम शिवकुमार: कर्नाटक में पूर्व सीएम सिद्धारमैया कुरबा समुदाय से आते हैं। वहीं, शिवकुमार वोक्कालिगा समुदाय से हैं और प्रदेश अध्यक्ष हैं। दोनों नेताओं के अलग-अलग धड़ों को एक रखने में कांग्रेस आलाकमान अब तक कामयाब रहा है, लेकिन नतीजों के बाद जिस धड़े को सत्ता में हिस्सेदारी नहीं मिलेगी, उसे कैसे संतुष्ट किया जाएगा, यह कांग्रेस को देखना होगा। सिद्धारमैया पहले ही कह चुके हैं कि यह उनका आखिरी चुनाव है, ऐसे में वे मुख्यमंत्री पद पर एक आखिरी मौका भी आजमाना चाहेंगे। उनके पास पूरे पांच साल सरकार चलाने का अनुभव भी है। वहीं, डीके शिवकुमार चुनाव जीतने के बाद ही बोल चुके हैं कि उन्हें डिप्टी सीएम पद का ऑफर ठुकराकर जेल जाना मंजूर था। इस तरह वे आलाकमान के सामने अपनी मजबूत दावेदारी पेश कर रहे हैं।

दूसरी चुनौती : विधायकों को एकजुट रखना: रिपोर्ट्स के मुताबिक, कांग्रेस बेंगलुरु के एक पांच सितारा होटल में कई कमरे बुक कर चुकी है। उसने जीते हुए नेताओं को रात को ही होटल पहुंचने को कहा है

। यहीं पर रविवार को कांग्रेस के नवनिर्वाचित नेताओं की बैठक होगी। कुछ खबरों में तो यह भी दावा किया जा रहा है कि कांग्रेस कुछ हेलीकॉप्टर भी बुक कर चुकी है ताकि नेताओं को शिफ्ट करने की नौबत आने पर उनका इस्तेमाल हो सके।

हैदराबाद में भी रिजॉर्ट बुक होने की खबरें आईं, लेकिन शिवकुमार ने वहां नेताओं को ले जाने की संभावनाओं से इनकार कर दिया।

प्रदेश के सभी नगर निगमों में भाजपा सरकार, 2017 में भाजपा ने जीती थी 16 में से 14 सीटें, इस बार सभी 17 सीटों पर कब्जा

निकाय चुनाव: उप्र में योगी का जलवा

लखनऊ: उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की लोकप्रियता बरकरार है। नगरीय निकाय चुनावों के नतीजों ने आज इसे एक बार फिर सिद्ध कर दिया। मुख्यमंत्री योगी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने प्रदेश के सभी 17 नगर निगमों में प्रचंड जीत दर्ज की है। वर्ष 2017 में हुए निकाय चुनाव में भाजपा ने नगर निगम की 16 सीटों में से 14 पर कब्जा किया था। उस बार अलीगढ़ और मेरठ नगर निगम की सीटें बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की खाते में गई थीं। इस बार के निकाय चुनाव में शाहजहांपुर के नगर निगम बनने से

महापौर सीटों की संख्या 17 हो गई। भाजपा ने क्लीन स्वीप करते हुए नगर निगम की सभी 17 सीटों को जीतने में सफल रही। बसपा, सपा और कांग्रेस सहित अन्य दल खाता खोलने को तरसते रह गये। हालांकि नगर निगम महापौर की सभी सीटों के चुनाव नतीजों की आधिकारिक घोषणा अभी नहीं हुई है लेकिन अब तक मतगणना के जो आंकड़े मिले हैं, उनके अनुसार महापौर की हर सीट पर भाजपा उम्मीदवार अन्य दलों के उम्मीदवारों से काफी आगे हैं। उत्तर प्रदेश के सभी 75 जिलों में सुबह आठ बजे से नगरीय निकाय के लिए मतगणना का कार्य जारी है। 17 नगर निगम, 199 नगर पालिका परिषद और 544 नगर पंचायत समेत कुल 760 सीटों के लिए प्रदेश भर में 353 मतदान केंद्रों पर वोटों की गिनती हुई ।

भाजपा के प्रदेश कार्यालय पर जश्न: उत्तर प्रदेश के निकाय चुनावों में प्रचण्ड जीत पर भाजपा के प्रदेश कार्यालय पर जश्न का माहौल है। पार्टी के कार्यकर्ताओं से लेकर प्रदेश के शीर्ष नेता भाजपा कार्यालय पहुंच रहे हैं।

शासन की रीढ़ हैं सिविल सेवाएं : उपराष्ट्रपति

नई दिल्ली: उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने कहा कि सिविल सेवाएं शासन की रीढ़ हैं और देश में सरकारी नीतियों के कार्यान्वयन में एक मौलिक भूमिका निभाई है। वह शनिवार को अपने सरकारी निवास में भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के 1984 बैच के अधिकारियों द्वारा सह-लिखित पुस्तक 'रिफ्लेक्शंस ऑन इंडियाज पब्लिक पॉलिसीज' के विमोचन के अवसर पर वरिष्ठ अधिकारियों और अन्य गण्यमान्य व्यक्तियों को संबोधित कर रहे थे। उपराष्ट्रपति ने कहा कि भारत का शासन मॉडल, पारदर्शिता, जवाबदेही, डिजिटलीकरण, नवाचार और उद्यमिता पर केंद्रित है इससे दुनिया ईर्ष्या करती है। उन्होंने कहा- कमजोर वर्गों का सशक्तिकरण और उत्थान सफल योजनाओं से प्रभावित हुआ है, यह सुनिश्चित करते हुए कि सबसे हाशिये पर रहने वाले नागरिकों की भी आवश्यक सेवाओं तक पहुंच है। उपराष्ट्रपति धनखड़ ने लोकसेवकों से गर्व के साथ राष्ट्र की सेवा करने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि व्यक्तिगत पक्षपात के बिना सार्वजनिक सेवा, जमीनी स्तर पर लागू कानून का शासन, जनता के साथ व्यवहार में ईमानदारी, कर्तव्य के प्रति समर्पण और नीतिगत लक्ष्यों को प्राप्त करने में दक्षता का तात्पर्य है। धनखड़ ने उस भूमिका पर भी प्रकाश डाला जो सेवानिवृत्त सिविल सेवकों द्वारा एक अद्वितीय मूल्यवान राष्ट्रीय मानव संसाधन के रूप में निभाई जा सकती है। उपराष्ट्रपति ने रेखांकित किया- सेवानिवृत्त सिविल सेवकों को हमारे संवैधानिक संस्थानों और लोकतांत्रिक मूल्यों को गलत तरीके से कलंकित करने और विकृत करने की कोशिश करने के भीतर और बाहर से, झूठे और राष्ट्र-विरोधी आख्यानों को बेअसर करने के लिए तैनात किया गया है।" उपराष्ट्रपति ने माना कि लोकतांत्रिक शासन की अपनी अनूठी चुनौतियां हैं।

यूपी में सरकार के प्रति जनता का विश्वास जीता : राजनाथ

लखनऊ। केन्द्रीय रक्षा मंत्री और लखनऊ से सांसद राजनाथ सिंह ने उत्तर प्रदेश के नगर निकाय चुनाव में भाजपा की शानदार जीत को मुख्यमंत्री योगी तथा प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी की मुक्त कंठ से सराहना की और इसके लिए उन्हें हार्दिक शुभकामनाएं भी दी है। राजनाथ सिंह ने ट्वीट किया है कि यह शानदार जीत मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली प्रदेश सरकार में जनता के विश्वास और प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी की संगठनात्मक कुशलता का प्रतीक है।

देश में अब 4 राज्यों में कांग्रेस की सरकार

नई दिल्ली: कर्नाटक विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने स्पष्ट बहुमत के साथ सत्ता में वापसी की है। 2024 लोकसभा चुनाव के पहले कर्नाटक विधानसभा चुनाव में पार्टी का ये प्रदर्शन निश्चित रूप से कार्यकर्ताओं में जोश भरेगा। दक्षिण भारत में बीजेपी के सामने कर्नाटक की सत्ता को बचाए रखने की चुनौती थी, तो कांग्रेस के लिए वापसी का चैलेंज भी था। बसवराज बोम्मई के सहारे बीजेपी ने अपनी सत्ता को बरकरार रखने की पूरी कोशिश की, जबकि कांग्रेस डीके शिवकुमार-सिद्धरमैया की जोड़ी को आगे कर सत्ता में वापसी की कोशिश में लगी थी। कर्नाटक उन राज्यों में शुमार है, जहां हर पांच साल पर सरकार बदल जाती है। कर्नाटक में ये सिलसिला 1985 से चल रहा है, यहां की

जनता पांच साल एक पार्टी को तो अगले चुनाव में दूसरी पार्टी को मौका देती है। इस बार भी कर्नाटक की जनता बीजेपी के साथ यही सिलसिला दोहराते हुए पार्टी को दूसरा मौका देने के मूड में नहीं दिखी।

कांग्रेस के लिए कर्नाटक को जीतना अहम: कांग्रेस के लिए कर्नाटक को जीतना एक तरह से अस्तित्व बनाए रखने के लिहाज से बेहद जरूरी था। कर्नाटक में कांग्रेस अकेले अपने दम पर स्पष्ट बहुमत हासिल कर सरकार बनाने में कामयाब हो गई है तो ये उसके लिए किसी भी तरह संजीवनी से कम नहीं है।

पिछला एक दशक चुनावी राजनीति के लिहाज से कांग्रेस के लिए बहुत ही बुरा रहा है। इस दौरान कांग्रेस को चुनाव दर चुनाव हार का सामना करना पड़ रहा था। 2014 और 2019 लोकसभा चुनाव में कांग्रेस का प्रदर्शन बहुत ही खराब रहा था। इसके साथ ही यदि इस दौरान हिमाचल, छत्तीसगढ़ और राजस्थान को छोड़ दें, तो पार्टी को कई राज्यों में हार का सामना करना पड़ा है।

2018 में कांग्रेस ने जेडीएस के साथ मिलकर बनाई थी सरकार: आपको बता दें कि 2018 कर्नाटक विधानसभा चुनाव के बाद जब परिणाम आए तो भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी थी।

उप्र में आयी ट्रिपल इंजन की सरकार

हिट रही, 'नो कर्फ्यू, नो दंगा, यूपी सब चंगा' की पंचलाइन

लखनऊ। 24 अप्रैल को नगरीय निकाय के लिए चुनावी दौरे पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की एक जनसभा आयोजित थी। उसमें उन्होंने एक पंचलाइन बोली थी, नो कर्फ्यू, नो दंगा, यूपी सब चंगा। उनके संबोधन का यह हिस्सा खूब हिट रहा। इसका निहितार्थ वह सुशासन है जिसमें अपने पहले कार्यकाल से ही अपराधियों, माफिया एवं भ्रष्टाचारियों के प्रति उनकी जीरो टॉलरेंस नीति के प्रति प्रतिबद्धता रही। यह प्रतिबद्धता प्रदेश सरकार के एक्शन में दिखती

भी है।

कानून-व्यवस्था और विकास के मुद्दे को जनता का भरपूर समर्थन: निकाय चुनाव में मुख्यमंत्री योगी जहां भी गये स्थानीयता को जोड़ते हुए उन्होंने कानून व्यवस्था और विकास को ही केंद्र में रखा। मसलन कानपुर में कहा कि पहले यहां कट्टा बनता था।

खबर संक्षेप

10वीं और 12वीं के परीक्षा परिणाम में महावीर पब्लिक स्कूल के छात्रों का कायम रहा दबदबा

झूंसी। सी0बी0एस0ई0 द्वारा घोषित परीक्षा परिणामों में महावीर पब्लिक स्कूल के 10वीं और 12वीं के छात्रों ने बेहतर प्रदर्शन कर संस्था का मान बढ़ाया दसवीं कक्षा की छात्रा साक्षी सिंह ने 91.00% अंक के संग विद्यालय में सर्वाधिक अंक प्राप्त किया वहीं इजमा अनवर 87.60% मोहम्मद जुबेर 84.60 अर्पित केसरवानी 84.20% शनि यादव 82.00% शिवांशु सिंह 81.40 और अल आयात मन्नन 81.40 संग उत्तीर्ण हुए शत-प्रतिशत परिणाम के संग समस्त दसवीं के छात्र छात्राएं उत्तीर्ण हुए साथ ही साथ बारहवीं कक्षा में साक्षी गुप्ता 89.20% अंशिका सिंह 87.00% धर्मेश श्रीवास्तव 87.00 अनामिका मिश्रा 86.00% अनिरुद्ध सिंह 83.00% अनुप्रिया चौरसिया 80.00% और अर्पित कुमार सरोज 76.00% के संग उत्तीर्ण हो संस्था का नाम रोशन किया । इस अवसर पर संस्था सचिव डॉ0 पंकज त्रिपाठी संस्था निदेशक इंजीनियर प्रणव त्रिपाठी प्रधानाचार्य श्रीमती प्रज्ञा पांडे बृजेश त्रिपाठी समस्त शिक्षकों ने छात्रों को उनके उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दी यह जानकारी पब्लिक स्कूल के प्रशासनिक अधिकारी अवनीश गर्ग ने दी।

अमरनाथ यादव के सिर बंधा नगर पंचायत अध्यक्ष पद का ताज, समर्थकों में खुशी

अखंड भारत संदेश

5510 मत प्राप्त कर 908 मतों से हुए विजयी

फूलपुर। फुलपुर नगर पंचायत अध्यक्ष पद का ताज भाजपा नेता अमर नाथ यादव के सिर बंधने से समर्थकों में खुशी ब्याप्त रही। मंडी समिति फूलपुर में शनिवार सुबह 8 बजे से शुरू हुई मतगणना में सभी प्रत्याशियों के समर्थक भारी संख्या में निर्धारित स्थान पर जमे रहे। भाजपा उम्मीदवार अमरनाथ यादव ने मतगणना के शुरूआती दौर में ही बढ़त बनाए रखा। आखिरी दौर की मतगणना के बाद भाजपा उम्मीदवार अमरनाथ यादव को 5510 वोट मिले। उन्होंने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी बसपा के इलियास अहमद को 908 वोटों से कड़ी शिकस्त देते हुए विजयश्री अपने नाम कर लिया। वहीं बसपा उम्मीदवार इलियास अहमद 4602 वोट पाकर दूसरे नंबर पर रहे। निर्दलीय प्रत्याशी जय प्रकाश को 1393 वोट मिले तो सपा की काजमीन जहां 1251 मत प्राप्त कर चौथे नंबर पर रहीं। कांग्रेस प्रत्याशी शायरा बानो को 68 व निर्दलीय प्रत्याशी हरिमोहन को 42 मतों से ही संतोष करना पड़ा। फूलपुर नगर पंचायत सदस्य के 15 वार्डों की हुई मतगणना में भाजपा के 7 सपा के 2 बसपा के 2 तथा 2 निर्दलीय प्रत्याशी सविरोध विजयी रहे। वहीं पूरे अच्छई की निर्दलीय प्रत्याशी रोजी फात्मा व जाफरगंज की भाजपा उम्मीदवार फोटो देवी निर्विरोध सभासद चुनी गईं। शेषपुर पश्चिमी वार्ड नंबर 3 से भाजपा समर्थित उम्मीदवार बलवंत कुमार 851 तथा इस्माइलगंज वार्ड नंबर 9 से भाजपा उम्मीदवार राहुल विश्वकर्मा 265 मत प्राप्त कर विजयी रहे। वहीं भाजपा समर्थित सभासद पद के अन्य उम्मीदवार रामकरन 443, कुलदीप केसरी 202,राजेश कुमार 288,अजय कुमार 696, लोचनगंज से संगीता 363 मत प्राप्त कर विजयी रहीं। कैथाना वार्ड नंबर 7 से सपा प्रत्याशी सुबुही सिद्दकी 290 व शेषपुर पूर्वी से अरशद उल्ला ने 400 मत प्राप्त कर विजयश्री अपने नाम किया। वहीं बसपा से सभासद उम्मीदवार मतंशा ने 600 कोहना से मो सिराज अंसारी ने 510 मत प्राप्त कर जीत का प्रमाण पत्र प्राप्त किया। रिटर्निंग ऑफिसर ने मतगणना के पश्चात सभी विजयी प्रत्याशियों को जीत का प्रमाण पत्र दिया। वहीं विजय जुलूस की पाबंदी पर पुलिस भी मुस्तैद रही। कही कोई अप्रिय घटना न हो इसके लिए सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम रहे।

दबंगों ने महिला को मारा पीटा, महिला ने थाने मे दी तहरीर

उतरांव। उतरांव थाना क्षेत्र के ग्रामसभा महटिकर गांव मे दबँगो द्वारा महिला को मारा पीटा। पीड़ित महिला आशा देवी50वर्ष पत्नी राकेश कुमार उतरांव थाने पहुंचकर दी तहरीर। बताया जाता है। की हर रोज की तरह शुक्रवार रात को खाना खाने के बाद महिला सो गयी। वहीं महिला ने बताया की गांव के दबँगो ने रात करीब 12 बजे आये और धमकी देते हुए महिला को मारने पीटने लगे। जिससे महिला के शरीर और हाथ मे चोटे आयी है।पीड़ित महिला शनिवार को सुबह उतरांव थाने पहुंचकर नामजद दबँगो के खिलाफ तहरीर दी। उतरांव पुलिस तहरीर लेकर जांच कर कार्यवाही की बात कही।

संदिग्ध परिस्थितियों में महिला की मौत खून से लथमथ मिला शव

अखंड भारत संदेश

सिरसा। मेजा के कुंवर पट्टी गांव में एक महिला की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। उसके घर पर खून से लथपथ शव पाया गया। हत्या की आशंका जताई जा रही है। सुचना पर पंहुची इलाकाई पुलिस जांच पड़ताल में जुटी हुई है। मिली जानकारी के अनुसार मेजा थाना क्षेत्र के जेवनिया पुलिस चौकी अंतर्गत कुंवर पट्टी गांव निवासी विजय कुमारी (50) पत्नी राकेश सिंह की संदिग्ध परिस्थितियों में घर में खून से लथपथ शव पाया गया। जिससे इलाके में हड़कंप मच गया। सुचना पर पंहुची इलाकाई पुलिस जांच पड़ताल में जुटी हुई है। सूत्रों के अनुसार महिला के पास करंट लगने व पिटाई से मौत की आशंका जताई जा रही है। फिलहाल महिला की मौत कैसे हुई, यह पुलिसिया जांच के बाद ही स्पष्ट हो पाएगा।

शंकरगढ़ में त्रिकोणीय मुकाबला होने से बिगड़ा समीकरण, निर्दल ने पहना जीत का सेहरा

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। नगर पंचायत शंकरगढ़ में त्रिकोणीय मुकाबले में निर्दल प्रत्याशी पार्वती कोटार्य ने जीत का सेहरा पहना है। जबकि शंकरगढ़ में सपा व बसपा को मजबूत दावेदार माना जा रहा था। बारा तहसील परिसर में शनिवार को हुई मतगणना में नगर पंचायत शंकरगढ़ से निर्दल प्रत्याशी पार्वती कोटार्य को विजेता घोषित किया गया है। पार्वती कोटार्य को कुल 2716 मत मिले हैं, जबकि निकटतम प्रतिद्वंद्वी भाजपा प्रत्याशी अंजू देवी 2313 मत के साथ दूसरे स्थान पर रहीं। नगर निकाय चुनाव में सत्ताधारी दल भाजपा व सपा को मजबूत दावेदार माना जा रहा था, लेकिन इन दोनों के बीच एक निर्दल प्रत्याशी ने ऐसी इंट्री मारी कि सभी के होश उड़ गए।शनिवार को हुई मतगणना में नगर पंचायत शंकरगढ़ से निर्दल प्रत्याशी पार्वती कोटार्य को विजेता घोषित किया गया है। पार्वती कोटार्य को कुल 2716 मत मिले हैं, जबकि निकटतम प्रतिद्वंद्वी भाजपा प्रत्याशी अंजू देवी 2313 मत के साथ दूसरे स्थान पर रहीं।

इसी तरह समाजवादी पार्टी की प्रत्याशी कंचन देवी ने 2066 मतदाताओं का समर्थन प्राप्त किया है। शंकरगढ़ के त्रिकोणीय मुकाबले में निर्दल प्रत्याशी पार्वती की 403 मतों के अंतर से जीत हासिल हुई है। चौथे स्थान पर आम आदमी पार्टी की प्रत्याशी शिखा समद्दार रहीं। आप प्रत्याशी शिखा को कुल 597 मत मिले हैं। इसी तरह निर्दल प्रत्याशी के रूप में किस्मत आजमाने वाली कुसुम कली को 204, लीला देवी को 48 वोट मिले।जीत के बाद दिनेश तिवारी,अनूप केसरवानी,अनिल केसरवानी,डॉ विनोद केसरवानी, सचिन वैश्य,सूर्यनिधान पांडेय,मूलचंद्र गुप्ता,सौरभ श्रीवास्तव, पूर्व चेयरमैन रेखा केसरवानी,अनुपमा वैश्य, पायल केसरवानी,दिलीप सिंह आदि ने जीत की बधाई दिया।

नोटा और अवैध मतों की संख्या रही 500 के ऊपर

अपनी जीत को लेकर आशान्वित भाजपा प्रत्याशी अंजू देवी आधे समय तक आगे चल रही थीं, लेकिन दोपहर होते-होते चुनाव उनके हाथ से जाता दिखा। वार्ड तीन, चार, आठ और 12 से भाजपा को काफी कम वोट मिले हैं। नगर पंचायत शंकरगढ़ में एक और खास बात देखने को मिली। यहां पर नोटा और वैध मतों की संख्या हार जीत के अंतर से कहीं अधिक रही। यहां पर हार-जीत का फैसला महज 403 मतों के अंतर से हुआ, लेकिन शंकरगढ़ में नोटा और अवैध मतों की संख्या को मिला दें तो यह सख्या 500 से अधिक रही। हालांकि नोटा पर मुहर लगान वालों की संख्या इकाई में ही रही। कुल 26 मतदाताओं ने नोटा पर मुहर लगाई थी, लेकिन सभी वार्डों में अवैध मतों की सख्या 40-50 के इर्द-गिर्द घूमती रही। इससे यह भी अंदाजा लगाया जा सकता है कि यदि उक्त मत अवैध नहीं होते तो परिणाम कुछ और हो सकता था।

सभासद में भी निर्दलियों का जलवा

नगर पंचायत शंकरगढ़ में कुल 12 वार्ड हैं। इन सभी वार्डों पर भाजपा ने अपने दमदार प्रत्याशियों को उतारा था। शुरूआती समीकरण ठीक ठाक ही चल रहा था। पर, आज के परिणाम ने सभी को चौंका दिया। सभासद की दर्जनभर सीटों में दो सीट सपा और तीन सीट भाजपा की झोली में गई है। वार्ड आठ में सपा प्रत्याशी मोहित लाल सिंह (293 मत) और वार्ड 12 से मोहम्मद सफीक उर्फ जानू (218 मत) जीते हैं। इसी तरह भाजपा से तीन वार्ड एक की पूजा साहू (291 मत), वार्ड नौ से सतीश कुमार त्रिपाठी (310) और छह से रामपाल (306) ने जीत हासिल की। इसके अलावा निर्दल प्रत्याशी के रूप में वार्ड दो से आर के पटेल (238 मत), वार्ड तीन से रंजना भारतीय (372), वाड चार से अतुल प्रकाश (234 मत), पांच से कमलेश (278 मत), सात से प्रकाशचंद्र गुप्ता (219 मत), दस से पुष्पा सिंह (262) और 11 से निहारिका गुप्ता (308 मत) ने जीत हासिल की है।

वार्ड 11 की रिकाउंटिंग में बदल गया परिणाम

बारा तहसील परिसर में हुई मतगणना के दौरान दिनभर गहमागहमी का माहौल देखने को मिला। मतगणना के दौरान वार्ड 11 से सभासद प्रत्याशी वैशाली पत्नी सुजीत केसरवानी को पहले विजयी घोषित कर दिया गया, लेकिन विरोध पर पुनर्गणना करवाई गई, जिसमें निहारिका गुप्ता पत्नी दीपक केसरवानी को विजयी घोषित किया गया। नगर पंचायत शंकरगढ़ की गणना के लिए बारा तहसील परिसर में कुल तीन टेबल लगाई गई थी। टेबल संख्या एक पर बूथ संख्या एक, चार, सात और 11 के मतों की गिनती की गई। इसी क्रम में टेबल संख्या दो पर बूथ संख्या 2, 5, 8, 9, 12 और टेबल संख्या तीन पर बूथ संख्या तीन, छह और 10 के मत गिने गए। मतगणा के दौरान प्रेक्षक ने मतगणना स्थल का जायजा लिया। आरओ-एसडीएम अबदुल्लाह सुदन ने सभी को जीत का प्रमाणपत्र दिया। इस दौरान एसीपी संतलाल सरोज, तहसीलदार रमेशचंद्र पांडेय, बीडीओ रामविलास राय, एसओ शंकरगढ़ मनोज कुमार सिंह, एसओ बारा अनिल वर्मा समेत पुलिस फोर्स लगी रही।

नगर पंचायत कोरांव :

निर्दल उम्मीदवार ओमप्रकाश केसरी ने बीजेपी के नरसिंह केसरी को 608 मतों से हराया

अखंड भारत संदेश

रत्योरा। नगर पंचायत कोरांव में बीजेपी का अंतर्कलह चुनावी नतीजे में स्पष्ट देखने को मिला। बीजेपी ने निवर्तमान चेयरमैन नरसिंह केसरी को अपना उम्मीदवार बनाया था। निर्दलीय उम्मीदवार ओमप्रकाश केसरी ने भाजपा के सिंबल के लिए काफी जद्दोजहद की थी। अंततः उन्हें टिकट नहीं मिला। टिकट न मिलने के बाद से भाजपा पदाधिकारियों एवं कार्यकताओं में खेमेबाजी देखी जा रही थी। जिसका नतीजा हुआ कि भाजपा उम्मीदवार को बागी उम्मीदवार ओमप्रकाश केसरी ने कड़े मुकाबले के बीच 608 मतों से पटकनी दे दी। नगर पंचायत कोरांव में अध्यक्ष पद के लिए लड़ाई इस बार बहुत रोचक थी। भारतीय जनता पार्टी से ओमप्रकाश केसरी व नरसिंह केसरी ने दावेदारी पेश की थी। नरसिंह केसरी भाजपा के सिंबल पर तो ओमप्रकाश केसरी निर्दल चुनावी जंग में कूदे थे। इसी क्रम में समाजवादी पार्टी ने महिला उम्मीदवार पर दांव खेलते हुए पूजा चतुवेर्दी को अपना प्रत्याशी बनाया था। निर्दलीय उम्मीदवार अवध नारायण तिवारी व आम आदमी पार्टी के उम्मीदवार पुष्पराज सिंह ने चुनावी जंग में अपनी किस्मत आजमाने से नहीं चूके। नगर पंचायत कोरांव में अध्यक्ष पद के लिए कुल 10 उम्मीदवार चुनावी मैदान में थे। जिनमें निर्दल उम्मीदवार ओमप्रकाश केसरी ने सर्वाधिक 3256 मत प्राप्त कर भाजपा के नरसिंह केसरी को 608 मतों से पराजित कर दिया। इस प्रकार भाजपा उम्मीदवार को कुल 2648 मत मिले। इसी प्रकार समाजवादी पार्टी की उम्मीदवार पूजा चतुवेर्दी ने 1466 मत प्राप्त कर तीसरे पायदान पर रहीं। निर्दल उम्मीदवार अवध नारायण तिवारी को 646 मतों से संतोष करना पड़ा। आम आदमी पार्टी के उम्मीदवार पुष्पराज सिंह को महज 63 वोट मिले। इसी प्रकार शिवकुमार को 06, प्रेमचंद्र को 24, सुरमिला देवी को 91, व सुशील कुमार तिवारी को 23 मत मिले हैं। इसी प्रकार 13 मतदाताओं ने किसी भी उम्मीदवार का चयन न करते हुए नोटा का प्रयोग किया है। पड़े हुए मतों में प्रतिक्षेपित मतों की संख्या 450 रही। मत करना समाप्ति के बाद निर्वाचन रिटर्निंग अधिकारी एसडीएम कोराओं सुदामा वर्मा ने अध्यक्ष पद पर विजई उम्मीदवार समेत सभी सदस्यों को प्रमाण पत्र दिया। मतगणना के दौरान थाना प्रभारी धीरेंद्र सिंह सुरक्षा व्यवस्था के मद्देनजर दल बल के साथ मुस्तैद रहे। मतगणना के दौरान किसी भी प्रकार का कोई विवाद नहीं हुआ। शांतिपूर्ण तरीके से मतगणना संपन्न हुई।

जीत मेरी नहीं जनता की जीत है : ओम केसरी

नगर पंचायत कोरांव में अध्यक्ष पद पर जीत हासिल करने के बाद ओमप्रकाश केसरी जैसे ही गोपाल विद्यालय इंटर कॉलेज के प्रांगण से बाहर आए। समर्थकों का हुजूम स्वागत करने के लिए उमड़ पड़ा। मतदाताओं एवं नगर वासियों के स्वागत से गदगद होकर निर्वाचित चेयरमैन ओमप्रकाश केसरी ने कहा कि यह जीत मेरी नहीं जनता की जीत है। कहा कि जनता ने मुझे सेवा करने का अवसर दिया है पूरे 5 वर्ष तक नगर के विकास व नगर वासियों की सेवा में कोई कोर कसर नहीं छोडूंगा। जीत का जश्न मनाने के लिए भारी संख्या में नगर वासी निर्वाचित चेयरमैन के घर पर एकत्रित हुए थे।

11 वार्डों के सभासदों में कौन जीते कौन हारे

नगर पंचायत कोरांव में कुल 11 वार्ड सभासद भी निर्वाचित हुए हैं। जिनमें वार्ड नंबर एक सुभाष नगर से बृजेंद्र प्रसाद तिवारी 245 मत पाकर अजय कुमार पांडेय, को 9 मतों से पराजित किया। वार्ड नंबर दो अंबेडकर नगर से रेखा देवी 469 मत पाकर कंचन देवी को 322 मतों से पराजित किया। वार्ड नंबर तीन गोविंद नगर से सचिन केसरी ने 329 मत प्राप्त कर बृजेंद्र सिंह को 72 मतों से पराजित किया। वार्ड नंबर चार चमनगंज से संजय कुमार पांडेय उर्फ चुलबुल 281 मत प्राप्त कर 5 मतों से विद्यासागर द्विवेदी को पराजित किया। वार्ड नंबर पांच मालवीय नगर से राजकुमार केसरी 366 मत प्राप्त कर दिनेश केसरी को 81 मतों से पराजित किया। वार्ड नंबर छः शास्त्री नगर से शैलेश सिंह शैलू ने 408 मत प्राप्त कर 120 मतों से गेंद लाल सिंह को पराजित किया। इस प्रकार शैलू ने सभासद के लिए दूसरी बात जीत हासिल की। वार्ड नंबर सात आजाद नगर से सूफिया बेगम ने 329 मत प्राप्त कर अस्करी बेगम को 34 मतों से पराजित किया। वार्ड नंबर आठ शहीद नगर से सुमन देवी ने 425 मत प्राप्त कर रश्मि केसरी को 162 मतों से पराजित किया। वार्ड नंबर नौ बहादुरशाह नगर से सरला देवी जायसवाल ने 336 मत प्राप्त कर अंशु सोनी को 146 मतों से पराजित किया। वार्ड नंबर दस शहीद आरके तिवारी नगर से धर्मराज पटेल ने 260 मत प्राप्त कर संजीव प्रजापति को 117 मतों से पराजित किया। आखिरी वार्ड 11 गांधीनगर से मुस्तफा उर्फ गांधी ने 147 मत प्राप्त कर जहां जीत हासिल की, वही कमला शंकर व व मोहम्मद आरिफ दोनों उम्मीदवार 124 मत प्राप्त किए।

कर्नाटक में विजय श्री हासिल होने पर कांग्रेसियों में हर्ष

सहसों। कर्नाटक में कांग्रेस पार्टी को पूर्ण बहुमत हासिल होने पर पार्टी कार्यकताओं में खुशी की लहर है। कांग्रेस पार्टी की इस शानदार जीत पर क्षेत्र के देवनहरी गांव में कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं अधिवक्ता देवराज उपाध्याय की अध्यक्षता में कार्यकताओं ने खुशी का इजहार करते हुए एक दूसरे का मुंह मीठा कराकर शीर्ष नेतृत्व को बधाई दी। इस अवसर पर देवराज उपाध्याय ने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि जनता भाजपा की जन विरोधी नीतियों से परेशान हो चुकी थी एवं प्रदेश में महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, कानून व्यवस्था ठीक ना होना एवं कमीशन खोरी आदि समस्याओं से आम जनता ऊब चुकी थी। जिसके परिणामस्वरूप जनता ने एकमत होकर एक साथ जातिवाद धर्म वाद से पुष्कर कांग्रेस पार्टी को एकमत होकर अपने मत का प्रयोग करते हुए विजय दिलाई जिससे पार्टी जनता का शुक्रगुजार है। उन्होंने कहा कर्नाटक विधानसभा का यह चुनाव आने वाले 2014 के लोकसभा चुनाव का सेमी फाइनल है यदि इसी तरह से झूठ गुंडाराज रहेगा तो निश्चित रूप से 2024 की आम चुनाव में जनता भाजपा शासन को नकारते हुए उखाड़ फेंकने की काम करेगी। इस अवसर पर अशफाक अहमद, कमला कांत मिश्र, अखंड प्रताप सिंह, सुभाष चंद्र, शकील अहमद मोहम्मद रजा, संजय कुमार एवं प्रवीण कुमार सहित आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

मुंह मीठा कराकर महापौर की शानदार जीत पर कार्यकताओं में हर्ष

सहसों। नगर निकाय चुनाव में प्रयागराज भाजपा के महापौर प्रत्याशी गणेश केसरवानी की शानदार जीत पर कार्यकताओं ने खुशी का इजहार करते हुए बहुत ही हर्षोल्लास के साथ एक दूसरे को गले मिलते हुए मुंह मीठा कराकर बधाई दी । सहसों बाजार के भाजपा कार्यकर्ता जयेश केसरवानी के नेतृत्व में व्यापारियों एवं पार्टी के युवा कार्यकताओं ने इस शानदार जीत पर लड्डू बांटे और पटाखे बजाकर खुशियां मनाई। इस मौके पर दिलीप केसरवानी, आकाश केसरवानी, पिंटू केसरवानी, कल्लू जयसवाल, अमन केसरवानी, रितेश केसरवानी, निखिल केसरवानी, सूरज केसरवानी सहित आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहें।इसी तरह नगर निकाय चुनाव में प्रचंड जीत पर भाजपाई गदगद होकर बड़े ही हर्ष के साथ पूरे प्रदेश में भाजपा की शानदार जीत से राम जानकी मंदिर सहसों पर भाजपा के वरिष्ठ नेता जय प्रकाश दूबे की अध्यक्षता में भाजपाइयों ने एक दूसरे को लड्डू खिलाकर हर्ष व्यक्त करते हुए एक दूसरे को बधाई दी। इस अवसर पर भाजपा के वरिष्ठ नेता राजधर दूबे ने कहा जनता ने विकास के मुद्दे सहित गांव से लेकर शहर तक विभिन्न क्षेत्रों में किए गए जनकल्याणकारी कार्य को वरीयता देते हुए सरकार के कार्यों पर आस्था एवं विश्वास जताया है। प्रयागराज में मेयर पद पर प्रचंड बहुमत प्राप्त होने पर वहां की जनता को बधाई दी है। इस अवसर पर रजवंत सिंह, बब्बू सिंह,राजेंद्र प्रसाद पांडे, अरविंद सिंह, बृजेश त्रिपाठी, लाल प्रताप सिंह, फूल चन्द्र साहू उर्फ विधायक, मनोज पाल सहित आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

मऊआइमा में अध्यक्ष पद पर सपा के शोएब अंसारी ने चौथी बार दर्ज की जीत

अखंड भारत संदेश

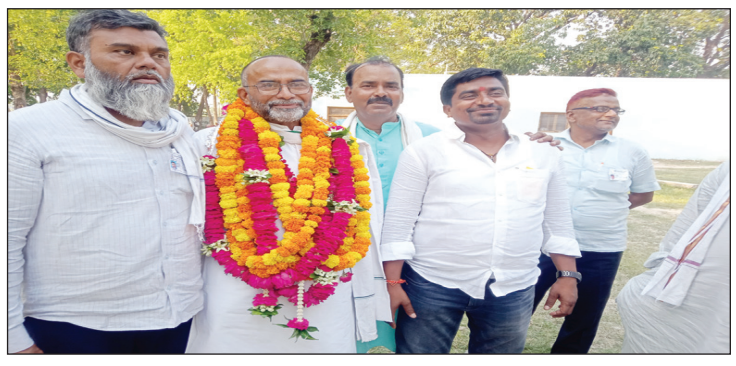

मऊआइमा। मऊआइमा में सपा के शोएब अंसारी ने भाजपा के मोहम्मद आलम को भारी मतों से पराजित कर चौथीबार अध्यक्ष पद का लगातार सपा का झंडा फहराया। जिसे सुनकर जनता की भीड़ ने मतगणना स्थल के बाहर जम कर शोएब अंसारी जिंदाबाद के नारे लगाए।बसपा की झोली इस बार भी खाली रही। मऊआइमा नगर पंचायत अध्यक्ष पद व सभासद के लिए सोरांव के मेवा लाल इन्टर कालेज में सुबह आठ बजे से गणना शुरू हुई। सपा के शोएब अंसारी ने शुरूआती दौर में जब बढत बनाई। वह आखिर तक जारी रही। शोएब अंसारी को चौदह वार्डों की गणना में कुल 5446 मत मिले जबकि भाजपा के मोहम्मद आलम को 2902मत प्राप्त हुए। कुल मत गणना में 564 मत अवैध पाए गए। बसपा के अय्यूब अंसारी 113 मत पाकर सिमट गए।अन्य निर्दलयों की जमानत जब्त हो गई।बताया गया है कि इसके पूर्व शोएब अंसारी ने स्वर्गीय हाजी मोहम्मद नोमान को पराजित किए थे। उसके बाद फिर स्वर्गीय हाजी मोहम्मद नोमान को फिर पराजित किए। उसके बाद 2017 में चुनाव में महिला सीट हो जाने से हुए चुनाव में शोएब अंसारी की पत्नी फात्मा अंजुम को कुल 4977 मत हासिल हुए। बसपा की उजमा फात्मा को 1762 मत तथा निर्दल मोहम्मद नोमान की पत्नी 1221 मत प्राप्त की जबकि भाजपा की सावित्री देवी 509मत मिले थे। इस प्रकार शोएब अंसारी की पत्नी फात्मा अंजुम 3215 मतों से जीती थीं। शनिवार को हुए गणना में पिछडी जाति आरक्षण होने के बाद सपा ने शोएब अंसारी को फिर लडाया वह 5446 मत हासिल किए जबकि भाजपा ने पहली बार मुस्लिम प्रत्याशी मोहम्मद आलम पर दांव लगाया। वह 2902 पर सिमट गए। बसपा के अय्यूब अंसारी फिर बुरी तरह हारते हुए 113 मत हासिल किए। गणना में 564 मत अवैध पाए गए। इस प्रकार सपा के शोएब अंसारी चौथीबार 2644 मतों से जीत दर्ज कर मऊआइमा का ताज पहन कर अव्वल नागरिक बनने का इतिहास रचे। पूरा क्षेत्र जीत के जश्न में डूबा हुआ है। चारों ओर खुशी से मिष्ठानों का वितरण हो रहा है। उनके निवास स्थान आजमपुर में बंधाई देने वालों का तांता लगा रहा।

चौदह सदस्यों में एक सदस्य ने मारी जीत की हैट्रिक एक सदस्य ने मात्र पांच मतों से हासिल की जीत

मऊआइमा। नगर पंचायत के वार्ड संख्या एक शाहगंज से निर्दल सभासद प्रत्याशी असगरी बेगम को 354मत मिले वही दूसरे नम्बर सत्यपथी देवी को324मत मिले।वार्ड संख्या दो मुस्तफाबाद से सोनी देवी 346मत हासिल कर जीत गई जबकि दूसरे नम्बर पर रीना भारतीय 298 मत से संतोष करना पडा। वार्ड संख्या तीन पूरा काजी पसियान से भाजपा के रवि साहू 346मत पा कर जीते दूसरे नम्बर पर सपा की शबाना 113 मत हासिल की। वार्ड चार मौलाना से भाजपा के राहुल 221 मत पाकर विजयी रहे। दूसरे नम्बर पर मोहम्मद अकरम निर्दल 194 पर रह गए। वार्ड संख्या पांच आजमपुर नया पूरा से फिरोजा बानों 393 मत हासिल कर लगातार तीसरी बार जीत की हैट्रिक बनायी। जबकि दूसरे नम्बर पर राफिया रूहानी रहीं।सबसे अधिक मतों से जीतने वाली फिरोजा बानों 267 से सभी वार्डों में अव्वल रही। वार्ड नंबर छह कजियाना कलां से मोहम्मद मुजीब 172 वोट पाकर जीते। दूसरे नम्बर पर नसीम112 पर रहे। वार्ड नंबर सात पूरे मियां जी उत्तरी से अफरोज जहां 317मतों से जीतीं। दूसरे नम्बर पर नाहिदा 216 मत पायी। वार्ड आठ पूरे मियां जी दक्षिणी मोहम्मद मोबीन 261पाकर जीते। सुनील 180 मत पा कर दूसरे नम्बर रहे। वार्ड आठ महतवाना से शकीला बानों 454 मत पा कर जीत का सेहरा पहनीं।दूसरे नम्बर पर हुस्ना फात्मा 230 मत हासिल की।वार्ड दस आजमपुर पूर्वी से तबस्सुम शकील 346 पा कर जीतीं। दूसरे नम्बर पर सचिन कुमार 152 मत पाए। वार्ड ग्यारह हजियाना से सपा के कौशरगयास 316 मत पाकर जीते जबकि जबी उल्ला 153 मत पा कर दूसरे नम्बर पर रहे। वार्ड 12 पूरा काजी से भाजपा के प्रदीप केसरवानी 206 मत पाए जबकि विनीत कुमार 201 पा कर दूसरे नम्बर पर रहे। मात्र पांच मतों से भाजपा के प्रदीप केसरवानी जीते। वार्ड तेरह अबू हलीम पटटी से दिलशाद अहमद 339 मत पा कर जीते।दूसरे नम्बर पर शमीम उद्दीन 228 पर रह गए। वार्ड चौदह आजमपुर पश्चिमी से अतीक अहमद 303 मत से जीते । दूसरे स्थान पर शमीम अहमद को 149 मत मिले।

जीते हुए पार्षद प्रत्याशियों की सूची

वार्ड नं.	प्रत्याशी	पार्टी
1.	रूबी	निर्दलीय
2.	रीना	भाजपा
3.	तारावती देवी	भाजपा
4.	गीता देवी	निर्दलीय
5.	दीपक जैसल	भाजपा
6.	सुजाता सरोज	सपा
7.	भाष्कर	निर्दलीय
8.	माया देवी	भाजपा
9.	कन्हई लाल	सपा
10.	सुबेदार	भाजपा
11.	अनारा देवी	भाजपा
12.	मोमिना सिद्दीकी	निर्दलीय
13.	आकाश सोनकर	भाजपा
14.	राम कुमार	सपा
15.	दीपक कुमार कुशवाहा	भाजपा
16.	तारा देवी	सपा
17.	अनूप कुमार	भाजपा
18.	शिव कुमार	भाजपा
19.	राम मिलन	भाजपा
20.	राकेश जायसवाल	निर्दलीय
21.	शाह फहेद अहमद	सपा
22.	संजय कुमार	भाजपा
23.	ज्ञानेन्द्र मिश्रा	भाजपा
24.	मोहित कुमार	भाजपा
25.	सियाराम	भाजपा
26.	अमित	भाजपा
27.	राजू शुक्ला	भाजपा
28.	सरस सुनीता दरबारी	भाजपा
29.	बलराज	भाजपा
30.	मुकेश कुमार	भाजपा
31.	रणविजय सिंह	भाजपा
32.	प्रीति गुप्ता	भाजपा
33.	अनुराधा सिंह	निर्दलीय
34.	कमलेश तिवारी	भाजपा
35.	प्रीती गुप्ता	भाजपा
36.	कृष्ण कुमार पाठक	बसपा
37.	सुरेन्द्र	निर्दलीय
38.	द्रौपदी देवी	सपा
39.	आरती देवी	भाजपा
40.	पूजा	निर्दलीय
41.	विजय विश्वास रावत	भाजपा
42.	हीरा लाल	भाजपा
43.	रितेश मिश्रा	भाजपा
44.	जहाँआरा	सपा
45.	शिव नारायण निर्बल इण्डियन शोषित हमारा आम दल	
46.	विनय कुमार मिश्र सिन्टू	भाजपा
47.	सरिता देवी	निर्दलीय
48.	उमेश चन्द्र	भाजपा
49.	रिया केशरवानी	भाजपा
50.	बबिता	सपा
51.	कामिनी कुशवाहा	भाजपा
52.	ख्वाजा खुदा दाद खान	निर्दलीय
53.	रोमा	भाजपा
54.	मिथलेश कुमार सिंह	भाजपा
55.	आशा देवी	भाजपा
56.	निशा गुप्ता	निर्दलीय
57.	सतीश केसरवानी	निर्दलीय
58.	संतोष कुमार सिंह	भाजपा
59.	दीपू देवी	भाजपा
60.	रूखसाना बेगम	कांग्रेस
61.	आनन्द घिल्डियाल	निर्दलीय
62.	किरन जायसवाल	भाजपा
63.	सोनिका अग्रवाल	भाजपा
64.	मीनू तिवारी	कांग्रेस
65.	आशीष कुमार द्विवेदी	भाजपा
66.	हसीना बेगम	निर्दलीय
67.	दिलीप कुमार	भाजपा
68.	पंकज जायसवाल	भाजपा
69.	शिव सेवक सिंह	निर्दलीय
70.	प्रेम शंकर	सपा
71.	गुलाब सिंह	भाजपा
72.	नीलम	भाजपा
73.	सुप्रिया दास	भाजपा
74.	दिग्विजय कुशवाहा	भाजपा
75.	अनिल कुमार	निर्दलीय
76.	नीरज टंडन	निर्दलीय
77.	इरफाना वसीम	सपा
78.	अजय यादव	सपा
79.	सुनीता सिंह	भाजपा
80.	कुसुम लता	निर्दलीय
81.	मयंक	भाजपा
82.	परवीन बेगम ए.आई.एम.ए.ई.एम	
83.	फसाहत हुसैन	सपा
84.	राधा निषाद	भाजपा
85.	सुमित निषाद	भाजपा
86.	विद्या द्विवेदी	भाजपा
87.	सहिल अरोरा	भाजपा
88.	नीरज कुमार गुप्ता	भाजपा
89.	अनुपमा पाण्डेय	भाजपा
90.	साबरीन बानो	कांग्रेस
91.	असमा फातिमा	बसपा
92.	रमीज अहसन	सपा
93.	अब्दुल समद	सपा
94.	रूद्रसेन जायसवाल	भाजपा
95.	नेम कुमार यादव	सपा
96.	रिजवाना बेगम	निर्दलीय
97.	सुनीता चोपडा	भाजपा
98.	मुमताज अंसारी	कांग्रेस
99.	नाजिश परवीन ए.आई.एम.ए.ई.एम	
100.	सरफराज अहमद	सपा

गणेश केसरवानी बने प्रयागराज के मेयर

1.29 लाख वोटों से सपा के अजय श्रीवास्तव को हराया, तीसरे नंबर पर कांग्रेस के प्रभा शंकर मिश्र रहे

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। भाजपा मेयर प्रत्याशी गणेश केसरवानी ने एक लाख 29 हजार 394 वोटों से सपा के अजय श्रीवास्तव को हराया। केसरवानी को दो लाख 35 हजार 636 वोट मिले, जबकि अजय को एक लाख 62 हजार 42 वोट मिले। तीसरे नंबर पर कांग्रेस प्रत्याशी प्रभा शंकर मिश्र, चौथे नंबर पर बसपा के सईद अहमद, पांचवे नंबर पर ओवैसी की पार्टी एआईएमआईएम के नकी खां और छठे नंबर पर आम आदमी के मोहम्मद कादिर रहे।

मंत्री नंदी के वार्ड में भाजपा की करारी हार, निर्दल कुसुम जीतीं : कैबिनेट मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी के वार्ड 80 में भाजपा की हार हुई है। निर्दल प्रत्याशी कुसुम लता गुप्ता 1674 वोट पाकर चुनाव जीतीं हैं। दूसरे नंबर पर सपा के इशरत अली को 1289 वोट मिले।वहीं तीसरे नंबर पर भाजपा पार्षद प्रत्याशी विजय वैश्य को 1275 वोट मिले। अपने बूथ पर भी मंत्री नंदी भाजपा प्रत्याशी को नहीं जिता पाए। मंत्री नंदी की पत्नी अभिलाषा गुप्ता नंदी का टिकट कटने से मंत्री का खेमा नाराज था।

मिनी सदन में भी भाजपा ने हासिल किया पूर्ण बहुमत, 100 वार्डों में आधे से ज्यादा पर कब्जा : प्रयागराज नगर निगम के चुनाव में 100 वार्डों में भाजपा प्रत्याशियों ने 54 सीटों पर जीत दर्ज की है। सपा को 16 सीटों पर जीत मिली है जबकि 18 वार्डों में निर्दलियों ने बाजी मार ली है। पिछले चुनाव में असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी एआईएमआईएम को एक सीट मिली थी, जबकि इस बार एआईएमआईएम ने दो सीटों पर जीत हासिल की है इसी तरह कांग्रेस को तीन, बसपा को दो और निषाद पार्टी को एक सीट पर जीत मिली है। पिछले चुनाव में नगर निगम क्षेत्र में कुल 80 वार्ड थे। नए परिसीमन के बाद 20 वार्ड बढ़ गए, जिससे कुल संख्या 100 हो गई।

प्रयागराज नगर निगम में भाजपा का परचम, सवा लाख मतों से जीते गणेश

प्रयागराज। नगर निगम महापौर के लिए शनिवार को घोषित नतीजे में भाजपा के उमेश चन्द्र गणेश केसरवानी ने सवा लाख से अधिक मतों के भारी अंतर से जीत हासिल की है। गणेश को नगर निगम महापौर के लिए शनिवार को घोषित नतीजे में भाजपा के उमेश चन्द्र गणेश केसरवानी ने सवा लाख से अधिक मतों के भारी अंतर से जीत हासिल की है। गणेश को 2,35,675 मत मिले हैं और उन्होंने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी समाजवादी के अजय श्रीवास्तव को 1,29,386 मतों से शिकस्त दी है। दूसरे स्थान पर रहे अजय को 1,06,289 मिले हैं। कांग्रेस के प्रभाशंकर मिश्र 40,486 वोट के साथ तीसरे स्थान पर हैं। बहुजन समाज पार्टी के सईद अहमद 36,799 मतों के साथ चौथे जबकि असदुद्दीन ओवैसी की अगुवाई वाली ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) पार्टी के नकी खां ने चौंकाते हुए 24,023 मत पाकर पांचवां स्थान हासिल किया है। आम आदमी पार्टी के प्रत्याशी मो. कादिर 14,253 मतों के साथ छठवें स्थान पर हैं। पार्षद की 100 सीटों में से आधे से अधिक 56 पर भाजपा प्रत्याशियों की जात हुई है। जबकि सपा को 16, कांग्रेस को चार, बसपा व एआईएमआईएम दो-दो, निषाद पार्टी को एक सीट मिली है। 19 निर्दलीयों ने सदन का सफर तय किया है। 2017 के महापौर चुनाव में भाजपा की अभिलाषा गुप्ता नंदी को 131297 मत मिले थे और उन्होंने सपा के विनोद चन्द्र दुबे को 63384 वोटों के अंतर से हराया था। वहीं दूसरी ओर 2017 में 80 वार्डों के लिए हुए चुनाव में सपा को 24, भाजपा 22, निर्दल 18, कांग्रेस 11, बसपा तीन, शिव सेना व को एक-एक सीटें मिली थीं।

जीत पर कही उत्सव तो कही छाई रही मयूषी

अखंड भारत संदेश

झूंसी। नगर निगम के चुनाव में भाजपा ने प्रदेश के साथ प्रयागराज में भी ऐतिहासिक जीत हाशिल की है। जीत की वजह से जहा एक ओर उत्साह का माहौल है तो वही चुनाव में शिकस्त खाये प्रत्याशियों के घर मयूषी छाई है। भाजपा महापौर प्रत्याशी उमेश गणेश केशरवानी ने सपा के अजय श्रीवास्तव को एक लाख से अधिक मतो से हराकर अपनी ऐतिहासिक जीत दर्ज कराई है। जिसकी वजह से भाजपाइयों में उत्सव का माहौल है। वही झूंसी के कोहना में निर्दल पार्षद प्रत्याशी अनिल यादव ने भाजपा के पंकज ओझा को हराया। छतनाग में सपा, बसपा, भाजपा के साथ निषाद पार्टी भी चुनाव मैदान में थी। निषाद पार्टी के उम्मीदवार पूर्व जिलापंचायत सदस्य शिव नारायण यादव उर्फ घुंनु ने भाजपा प्रत्याशी बहादुरपुर ब्लाक प्रमुख के भाई अवरुद्र यादव (जीतू) का करारी शिकस्त दी है। हवेलिया में भी निर्दल प्रत्यशी गुलफिरोज ने सपा के राजेश यादव को हराया। वार्ड 85 आजाद नगर भाजपा प्रत्याशी सुमित निषाद ने भाजपा के बागी प्रखर रवि उर्फ टोनू को हराया। कटका से सपा की बबिता यादव विजई हुई है। मालवा में भाजपा के उम्मीदवार सियाराम मौर्य ने बसपा प्रत्याशी पूर्व प्रधान बब्बू को हराया है। अमरसापुर में भाजपा प्रत्याशी अनार देवी ने निकटतम प्रतिद्वन्दी सपा के सत्येन्द्र वर्मा को पराजित किया है। अंदावा से भाजपा के राम मिलन पासी विजई हुए। कनिहार से सपा की सुजाता सरोज विजई हुई है। सोनवटी से सपा के कन्हैया लाल ने अपनी जीत दर्ज की।

चंद्रशेखर आजाद पार्क में महिला की हत्या

मजार के समीप खून से लथपथ मिला शव, बच्चों को स्कूल छोड़कर घूमने गई थी

प्रयागराज। प्रयागराज में चंद्रशेखर आजाद पार्क के अंदर स्थित मजार के पास शनिवार दोपहर 32 वर्षीय महिला की लाश पाई गई। उसके सिर पर चोट के निशान हैं। महिला अपने बच्चे के स्कूल में होने वाली टीचर पैरेंट्स मीटिंग में शामिल होने गई थी। वहां से निकलने के बाद वह चंद्रशेखर आजाद पार्क में घूमने गई थी। स्कूल छूटने के कोलाहल के बीच कत्ल किसने और क्यों किया, यह अभी साफ नहीं हो सका है। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम हाउस भेज दिया है।

ईरम सिद्दीकी अपने जेठ के साथ बच्चे को लेकर स्कूल गई थी : प्रयागराज नगर के अतरसुइया थानांतर्गत मालवीय नगर मोहल्ला निवासी साहान असद जमशेदपुर में काम करते है। उनकी पत्नी ईरम सिद्दीकी (32) अपने इकलौते बेटे फाज सिविल लाइंस स्थित सेंट जोसेफ स्कूल में यूकेजी का छात्र है। शनिवार को बच्चे के स्कूल में पैरेंट्स मीटिंग थी। जिसमें शामिल होने के लिए के लिए ईरम सिद्दीकी अपने जेठ सारिक के साथ बच्चे को लेकर स्कूल गई थी। बच्चे को छोड़ने के बाद वह मीटिंग में शामिल हुई। फिर कंपनी बाग (चंद्रशेखर आजाद पार्क) में घूमने चली गई। वहां से वह वापस नहीं लौटी। दोपहर में जब बच्ची की छुट्टी हो गई तो बच्चे को लेने स्कूल कोई नहीं गया। घंटों इंतजार के बाद भी जब कोई नहीं आया तो घरवालों ने पहले बच्चे को मां, फिर पिता और घर संपर्क करके बच्चे को स्कूल से ले जाने के लिए कहा गया। उसके बाद इरम सिद्दीकी की खोज शुरू हुई।कोई पता न चलने पर पुलिस को सूचना दी गई। हत्या का कारण नहीं हो सका स्पष्ट।

पुलिस जांच में जुटी : इसी दौरान दोपहर में इरम सिद्दीकी की लाश कंपनी बाग (चंद्रशेखर आजाद पार्क) के अंदर स्थित मजार के समीप पाई गई। लाश खून से लथपथ थी। महिला के सिर पर चोट का निशान था। जिससे स्पष्ट हो रहा था कि उसकी हत्या की गई है, लेकिन हत्या किसने और क्यों की यह भी स्पष्ट नहीं हो पाया। पुलिस ने उसकी लाश को पोस्टमॉर्टम हाउस भेज दिया है। परिवार वालों ने चीर घर पहुंच कर उसकी पहचान भी कर ली है। पोस्टमॉर्टम रविवार को किया जाएगा। इंस्पेक्टर कर्नलगंज राममोहन राय का कहना है कि अभी हत्या का कारण और कत्ल करने वालों के बारे में पता नहीं चल सका है। जांच की जा रही है।

सिरसा से लखन केशरी और भारतगंज से फरा बेगम ने मारी बाजी

अखंड भारत संदेश

मेजा। शनिवार को जवाहर नवोदय विद्यालय मेजा खास में नगरीय निकाय सामान्य निर्वाचन 2023 की मतगणना के बाद सिरसा से पहली बार भाजपा प्रत्याशी विपिन केशरी उर्फ लखन केशरी ने 3281 मत लेकर कमल खिलाया।उन्होंने अपने प्रतिद्वंदी विगत 2 पंचवर्षीय से सिक्का जमाए बैठे श्याम कृष्ण यादव उर्फ पप्पू यादव को कांटे की टक्कर में 432 मतों से हराया।8 रौंद की मतगणना में पप्पू यादव आगे चल रहे थे।जब बाजार का बक्शा खुला तो विपिन केशरी ने बढ़त बनाया और अंत तक बढ़त बनए रखा। अन्य प्रत्याशियों में बसपा से आनंद जैसल को 169 मत, आप से धैर्य प्रकाश को 37 मत, अर्चना यादव निर्दली को 13 मत, मोहन लाल सोनकर जन अधिकार पार्टी को 14 मत, रजनी केशरी निर्दलीय को 14 मत और श्यामल मंडल निर्दलीय को 11 मत मिले।इसी क्रम में नगर पंचायत भारतगंज से निर्दलीय प्रत्याशी फरा बेगम 4928 मत लेकर जीत दर्ज की।उन्होंने अपने प्रतिद्वंदी सबकदून को 2937 मतों से हराया।इसी प्रकार भाजपा की अनिता सोनी तीसरे नंबर पर रही इनको 1480 मत मिले। खुशनूमा को 221 मत,नूरबानो को 774 मत,फिरदौस बानो को 27,यास्मीन को 37 और सलमा को 22 मतों से संतोष करना पड़ा। सिरसा के निर्वाचन अधिकारी/उपजिलाधिकारी करछना राजेश श्रीवास्तव ने निर्वाचित प्रत्याशी विपिन केशरी उर्फ लखन केशरी को प्रमाण पत्र सौंपा।वही निर्वाचित सदस्यों को निर्वाचन अधिकारी तहसीलदार करछना ने प्रमाण पत्र सौंपा। भारतगंज के निर्वाचन अधिकारी/उपजिलाधिकारी मेजा अनुभव कन्नौजिया ने निर्वाचित अध्यक्ष फरा बेगम को प्रमाण पत्र सौंपा।वहीं निर्वाचित सदस्यों को तहसीलदार मेजा विशाल शर्मा ने प्रमाण पत्र दिया।मतगणना के दौरान एसीपी मेजा विमल किशोर मिश्र के नेतृत्व में प्रभारी निरीक्षक मेजा ज्ञानेश्वर मिश्र की टीम की देखरेख में सकुशल संपन्न हुआ।

प्रयागराज में डाक्टरों ने रोका महिला का पोस्टमार्टम

शरीर पर थी दो दर्जन से ज्यादा चोटें, पुलिस ने हत्या को लिखा था हादसा

प्रयागराज। प्रयागराज पुलिस कमिश्नरेट के स्वरूपरानी नेहरू चिकित्सालय स्थित पोस्टमार्टम हाउस में एक महिला का पोस्टमार्टम अचानक डाक्टरों ने रुकवा दिया। वजह पुलिस ने जो पंचायत नामा भरा था, उसमें मौत की वजह करंट बताया गया था। जबकि महिला के शरीर पर दो दर्जन से ज्यादा धारदार हथियार से वार किया गया था। पेट पर जलने का निशान था और उसी में बाल थे, जो सीधे हत्या की ओर इशारा कर रहे थे।डॉक्टरों ने लाश को दोबारा सील करवाया। उसके बाद पुलिस को बुला कर पंचायत नामा सुधरवाया गया। तब जाकर 2 डॉक्टरों के पैनल ने वीडियोग्राफी के मध्य महिला का पोस्टमार्टम किया। इस प्रकरण में सबसे ज्यादा लापरवाही पुलिस की सामने आई जो बिना लाश को देखें पंचायत नामा भरकर पोस्टमार्टम हाउस भेज दिया।

कर्नाटक की जीत पर कांग्रेसियों ने मनाय जश्न

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। कर्नाटक के सामान्य विधानसभा चुनाव में मिली बंपर जीत के बाद कांग्रेस पार्टी के कार्यकताओं ने गंगापार कांग्रेस के जिलाध्यक्ष सुरेश यादव के नेतृत्व में पटाखे फोड़कर और मिठाई बांटकर जीत की खुशी मनाई। शनिवार को कर्नाटक विधानसभा चुनाव में मिले भारी बहुमत के बाद कांग्रेस पार्टी के समर्थकों और कार्यकताओं में भारी उत्साह देखने को मिला। देशभर में कांग्रेस कार्यकर्ता आतिशबाजी कर और मिठाइयां बांटकर जीत का जश्न मना रहे हैं। वहीं सिविल लाइन्स स्थित धरना स्थल पर जुटे कांग्रेस कार्यकताओं ने पटाखे जलाए और मुंह मीठा करवाकर खुशियां मनाई। इस दौरान पार्टी नेताओं ने बजरंग बली के चित्र के साथ जयकारा भी लगाया। प्रदेश महासचिव विवेकानंद पाठक ने कहा की देश में भाजपा के नफरत के बाजार में राहुल गांधी की मोहब्बत की दुकान चल गई। कर्नाटक की जनता ने भाजपा की नफरत की राजनीति को सिरे से नकार दिया है। देश की जनता मोहब्बत चाहती है। आपस में भाईचारा चाहती है। भाजपा की नफरत की राजनीति ज्यादा दिनों तक चलने वाली नहीं है। वहीं पार्टी नेता किशोर वार्ष्णेय और जिला प्रवक्ता हसीब अहमद ने भाजपा द्वारा चुनाव में बजरंग बली के नाम से राजनीति करने पर तंज कसते हुए कहा कि बजरंग बली भगवान हैं। उनके लिए सब राजनीतिक पार्टियां एक बराबर हैं। इस बार बजरंगबली ने कांग्रेस पार्टी को आशीर्वाद दिया है, जिसके चलते कांग्रेस ने कर्नाटक विधानसभा में बंपर जीत हासिल की है। कर्नाटक विधानसभा चुनाव में मिली बंपर जीत की खुशी मना रहे कांग्रेस कार्यकर्ता जश्न में बजरंगबली के जयकारे लगाकर जश्न मनाते हुए दिखाई दिए। इस दौरानः सुरेश यादव, विवेकानंद पाठक, किशोर वार्ष्णेय, हसीब अहमद, रजनीश विश्रामदास, शकील अहमद, विजय यादव, राकेश पटेल, मनोज पासी, शादाब अहमद, अभिन्न वार्ष्णेय, सियाराम मौर्या, शाहनवाज आलम, अजीत भारतीय, अभिषेक शुक्ला, धीरज विश्वकर्मा, अल्ताफ अहमद, मो०हसीन समेत आदि लोग मौजूद रहें।

दुर्गावती इण्टरनेशनल स्कूल एण्ड कॉलेज में माताओं के सम्मान में किया गया भव्य कार्यक्रम का आयोजन

अखंड भारत संदेश

सिरसा। मेजा क्षेत्र के उरूवा ब्लाक गोशौरा कला ग्राम में मदर्स डे एण्ड प्राइस डे दुर्गावती इण्टरनेशनल स्कूल एण्ड कालेज में माताओं के सम्मान के लिए भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती नन्दिनी ठाकर चेयरमैन उपभोक्ता निवारण आयोग एवं जस्टिस मा० हाईकोर्ट डॉ के०जे० ठाकर , एवं कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि एकता सिंह एडिसन जिलाजज कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ० तृप्ति कुमार प्रो०एम०एएन०आई०टी०, प्रयागराज ने किया। मुख्य अतिथि प्रबन्ध समिति एवं अतिथिगणों के साथ मिलकर द्वीप प्रज्जवलित करके किया गया तत्पश्चात माताओं एवं सम्मानित अतिथियों के साथ मिलकर मदर्स डे के लिए डॉ० स्वतन्त्र मिश्रा, प्रबन्धक दुर्गावती ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन का केक काटा गया। तत्पश्चात बच्चे अपनी माताओं को टीका लगाकर माला पहनाया एवं चरण पखारे और अपनी-अपनी माताओं को मातृ दिवस की बधाई दी एवं माताओं से जुड़े अनेक मनमोहक कार्यक्रम प्रस्तुत करके सबका दिल जीत लिया। तत्पश्चात माताओं एवं बच्चों ने अनेक प्रतियोगिताओं गेम में भाग लिया और पुरस्कार प्राप्त किया। तत्पश्चात स्काउट एवं टापटेन बच्चों को कक्षावार पुरस्कार एवं प्रसस्तिपत्र एवं मेडल भी वितरित किया गया। कार्यक्रम का संचालन जुवेरिया इबकार तथा विशाखा ने किया। स्वागत भाषण विद्यालय के चेयरमैन सुशील मिश्रा के द्वारा किया गया एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ स्वंतत्र मिश्रा ने किया। कार्यक्रम का संयोजन सृजन मिश्रा एवं गौरव ने किया । जिसमें अमित, रियंका, तनिष्का, रितु, प्रिति, अंकूर, सत्यम, एलसिफा, प्रशांत, हिमान्शु, ऋषि, देविका, प्रिंसी, स्नेहा, सरोज, विवके, तनुश्री, अंशिका, आकांक्षा अरविन्द, शरद एवं सुधा सिंह आदि लोग उपस्थित रहे।

न्यूज झरोखा

अतीक अहमद के वार्ड से सपा प्रत्याशी ने दर्ज की जीत

प्रयागराज। जिले की सबसे संवेदनशील सीट मानी जाने वाली माफिया अतीक अहमद के वार्ड से समाजवादी पार्टी ने जीत दर्ज की है। सपा प्रत्याशी जहां आरा ने भाजपा के प्रत्याशी को पराजित किया। अतीक के बेटे असद के एनकाउंटर और अतीक और अशरफ की हत्या के बाद यह सीट चर्चा में आ गई थी। माना जा रहा था कि कम मतदान होने के कारण यहां पर सपा को नुकसान हो सकता है। नगर निगम वार्ड नंबर 44 चकिया से समाजवादी पार्टी के नेता और निवर्तमान पार्षद आजम खां की पत्नी सपा के टिकट पर चुनाव मैदान में थी। माफिया के खिलाफ कार्रवाई के बाद यह सीट काफी चर्चा में आ गई थी। मतदाताओं का रुझान कांग्रेस की ओर बढ़ता दिख रहा था, इससे अनुमान लगाया जा रहा था कि यहां से भाजपा की प्रत्याशी जीत सकती है।मतगणना शुरू होने के बाद पहले जहां आरा ने बढ़त बनाई थी, लेकिन दो राउंड की गणना के बाद अचानक भाजपा प्रत्याशी ने बढ़त बना ली थी, लेकिन अंतिम परिणाम आते आते भाजपा की प्रत्याशी पिछड़ गईं और सपा की जहां आरा ने जीत दर्ज की। चकिया वार्ड से आजम खां लगातार चार बार से पार्षद का चुनाव जीत रहे हैं। इसी 44 नंबर वार्ड में माफिया अतीक का पुश्तैनी मकान पड़ता है।

मदर्स डे पर माताओं का करे सम्मान : अंकिता खेड़ा

मेजा। सेंट पीटर्स को-एजुकेशनल इंग्लिश मीडियम स्कूल मदर्स डे मनाया गया। छात्र छात्राओं ने विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों की प्रस्तुति दी। स्कूल में मदर्स डे थीम पर फोटो फ्रेम मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। छात्राओं को संबोधित करते हुए प्रिंसिपल अंकिता खेड़ा ने कहा कि मां बच्चे का पहला प्यार होती है। बच्चे को हमेशा अपनी मां का सम्मान करना चाहिए। समाज को आकार देने की जिम्मेदारी एक मां की होती है। माताएं अत्यधिक जिम्मेदार महिलाएं होती हैं। वे निश्चित रूप से एक बच्चे की परवरिश में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सबसे उल्लेखनीय, बच्चे के दृष्टिकोण को निर्धारित करने में माताएँ बहुत बड़ी भूमिका निभाती हैं। भविष्य में बच्चा अच्छा होगा या बुरा यह माँ पर निर्भर करता है। माँ द्वारा सिखाए गए नैतिक मूल्य शायद बहुत बड़ी भूमिका निभाते हैं। व्यक्ति अक्सर वृद्धावस्था तक अपनी माँ के मूल्यों को याद करते हैं। इसलिए समाज की भलाई के लिए मां जिम्मेदार है। समाज का भविष्य काफी हद तक एक माँ की शिक्षा का परिणाम है।

नर्सिंग छात्रों ने निःस्वार्थ मरीजों की सेवा करने की ली शपथ

नैनी। इंटरनेशनल नर्सेस डे के अवसर पर आरके स्कूल ऑफ नर्सिंग, मवैया, नैनी में लैम्प लाईटिंग एण्ड ओथ टेकेन सेरेमनी समारोह का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि करछना विधायक पीयूष रंजन निषाद, विशिष्ट अतिथि कमलेश द्विवेदी ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि सहित संस्थाध्यक्ष डॉ. आशुतोष त्रिपाठी, निदेशक इंजी. आशीष त्रिपाठी की उपस्थिति में नर्सिंग प्राचार्या विक्टोरिया देवी ने छात्र-छात्राओं को कैंडल लाईट के साथ बिना किसी भेद-भाव और निःस्वार्थ भाव से मरीजों की सेवा करने की शपथ दिलवाई। इसके बाद छात्र छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये जिसमें ग्रुप डांस एवं गीत, गायन आदि मुख्य रहे। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि आजकल पाठ्यक्रम से शिक्षित जरूर होते हैं, लेकिन शपथ और संकल्प के साथ ली गई शिक्षा दीक्षा में परिवर्तित हो जाती है। अंत में संस्थाध्यक्ष डॉ. आशुतोष त्रिपाठी ने कहा कि अस्पताल में शिक्षक की भूमिका तो रहती ही है लेकिन नर्स की भूमिका कहीं अधिक रहती है। कार्यक्रम में सुरेश पाण्डेय ग्राम प्रधान पुरैनी समेत अन्य लोग मौजूद रहे।

हाई स्कूल में 95 फीसद हासिक किए अपूर्व ने अंक

सहसों। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की हाई स्कूल की परीक्षा में सहसों निवासी अजय केसरवानी के पुत्र अपूर्व केसरवानी को पंचानवे प्रतिशत अंक प्राप्त हुए हैं। जिससे विद्यालय सहित परिजनों का नाम रोशन किया है। छात्र अपूर्व केसरवानी महेंद्र प्रताप सिंह पब्लिक स्कूल सराय इनायत में अध्ययनरत हैं। उन्होंने टॉप फाइव सब्जेक्ट में 96.7 प्रतिशत अंक प्राप्त किया है। उनकी इस उपलब्धि पर दादा अशोक कुमार केसरवानी नी लड्डू खिलाकर बधाई दी। तथा अन्य परिजनों ने उनकी उज्जवल भविष्य की कामना की है।

एमएल पब्लिक स्कूल 10वीं व 12वीं का परिणाम रहा शत प्रतिशत

सिरसा। मेजा क्षेत्र के ब्लाक उरूवा के बगहा, सिरसा स्थित एम एल पब्लिक स्कूल का कक्षा 10 वीं एवं 12 वीं का परिणाम शत प्रतिशत रहा विद्यालय में खुशी का माहौल रहा और बच्चे शिक्षक एक दूसरे को मिठाई खिलाकर खुशियां मनाएं कक्षा 10 वीं में रवीना गुप्ता 93% ,प्रतिभा पटेल 87% ,उत्कर्ष प्रताप सिंह 87% , सुष्मिता शुक्ला 86% ,सौभाग्य कृष्ण राय 86%, संदीप यादव 85%, आनंद मोहन पांडे 85 % ,प्रिया पटेल 85 %, आदित्य पांडे 84,% मनीष 84 %,आलोक पांडे 83%, कौशिकी गुप्ता 83%, राज दुबे 82%, राज किरण प्रजापति 82% , नाजमिन बानो 81% ,रवि सिंह 80%, सुमित कीर्तनया 80% , सान्या मिश्रा 80% ,आशुतोष सिंह 77% ,दीप्तेश यादव 76% अंक हासिल किए। इसी प्रकार कक्षा 12 में तृषा श्रीवास्तव 90%, अंजली कुमारी 86% ,प्रिंस केसरी 84%, गौरीश केसरी 81% ,कृष्णा मिश्रा 80% ,हिमांशु यादव 78%, खुशी केसरी 78%, सनी सिंह 77% ,अक्षत केसरी 76% , शिक्षा गुप्ता 72% ,अभय तिवारी 72% , नैतिक अग्रवाल 71% अंक प्राप्त करके करके स्कूल का मान बढ़ाया प्रधानाचार्य सतीश उपाध्याय और स्कूल के प्रबंधक दुर्गा प्रसाद गुप्ता एवं निदेशक बबीता गुप्ता ने बच्चों के अच्छे प्रदर्शन के लिए उन्हें बधाई देते हुए भविष्य में आगे कड़ी मेहनत करके विद्यालय और क्षेत्र का नाम रोशन करने के लिए प्रेरित किया।

उचक्के ने जरुरी कागजात व रूपया सहित उड़ाया बैग

फूलपुर । लखनऊ से घर वापस आते समय प्रयागराज जंक्शन के पास बाइक सवार उचक्के ने छात्र को झांसे में लेकर हाई स्कूल इंटरमीडिएट अंकपत्र व प्रमाण पत्र ,आधार कार्ड ,पैन कार्ड सहित अन्य जरूरी कागजात व 3000 रुपए से भरे बैग को लेकर फरार हो गया। फूलपुर कोतवाली क्षेत्र के इफको पुलिस चौकी अंतर्गत चिरौंडा. गांव निवासी मोहम्मद इमरान पुत्र मोहम्मद सलीम लखनऊ से वापस आते समय प्रयागराज जंक्शन से जैसे ही हुआ अलोपीबाग चुंगी की तरफ आ ही रहे थे कि बाइक सवार उचक्के ने अपने झांसे में लेकर युवक को बातों में उलझाए रखा। तब तक बाइक सवार उसके बैग को लेकर फरार हो गया। मोहम्मद इमरान ने कर्नलगंज कोतवाली में तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है।

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा नाम कक्षा 8 के रिजल्ट में धर्मवीर अंकित हो गया है। जबकि हाई स्कूल के रिजल्ट एवम समस्त पत्रावली में धरमवीर भास्कर दर्ज है। यही सत्य एवम सही है। अतः हमें धरमवीर भास्कर पुत्र स्वर्गीय श्री किशन लाल 145वी/19ए 1 चांदपुर सलोरी तेलियर गंज इलाहाबाद सिविल लाइंस के नाम से ही जाना एवम पहचाना जाय।

हरि प्रताप सिंह छठी बार बने नगर पालिका अध्यक्ष

अध्यक्ष पड़ पर हुई जीत का प्रमाण.पत्र लेते हरि प्रताप सिंह।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर निकाय के चुनाव में भाजपा प्रत्याशी हरि प्रताप सिंह 10 हजार मतों से अपने प्रतिद्वंदी सपा प्रत्याशी सन्तोष कुमार यादव को हराकर विजयी हुए हैं। इससे भाजपा समर्थकों में खुशी की लहर है। जीत के बाद उन्होंने जीत का प्रमाण पत्र हासिल किया। उस दौरान हरि प्रताप सिंह ने कहा कि ये जीत मेरी नहीए जनता की जीत है। इस दौरान सदर विधायक राजेन्द्र मौर्याए भाजपा जिला अध्यक्ष हरिओम मिश्राए पूर्व नगर पालिकाध्यक्ष प्रेमलता सिंह आदि भाजपाई मौजूद रहे।

पांचवीं बार सहोदरपुर पश्चिमी से निर्वाचित हुए धर्मशील शुक्ला

जीत के बाद प्रसन्नमुद्रा में धर्मशील शुक्ला।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सहोदरपुर पश्चिमी वार्ड से निर्वाचित धर्मशील शुक्ला इस बार पांचवीं बार सभासद बने हैं। वैसे वे भाजपा के सिम्बल पर चुनाव लडे.थे लेकिन उनका कहना है कि वह जनता की सेवा के बलबूते आज विगत 20 वर्षों से जनता का उन्हें प्यार और दुलार मिल रहा है। इस बार 1306 मत पडे.थे जिसमें से 902 मत धर्मशील को मिले हैं जबकि इनके प्रतिद्वन्दी संदीप शुक्ला को 287 मत और दिलषाद को 85 मत मिले हैं।

कुण्डा में जनसत्ता दल प्रत्याशी ऊषा त्रिपाठी रही आगे

प्रतापगढ़। कुंडा तहसील में मतगणना के नगर पंचायतों के तृतीय चरण के रिजल्ट में कुंडा नगर पंचायत में उषा त्रिपाठी जनसत्ता दल 4578, सीमा यादव सपा 2712 सपा, सुमन देवी भाजपा 779, मानिकपुर नगर पंचायत में चंद्रकला भाजपा 3165, फोजिया निर्दल 1435, मीना देवी निर्दल 1628, हीरागंज नगर पंचायत में सुरेखा देवी भाजपा 2913, निर्मला देवी जनसत्ता दल 1012, निर्दल अनु देवी 1720, डेरवा नगर पंचायत में कुंवर बहादुर जनसत्ता दल 2651, पारसनाथ भारतीय जनता पार्टी 1166, उमेश कुमार निर्दल 1392 व राम आसरे को 768 मिले हैं।

लालगंज में कांग्रेस प्रत्याशी अनीता द्विवेदी जीती

अखंड भारत संदेश

जीत का जश्न मनाती कांग्रेस प्रत्याशी अनीता द्विवेदी।

प्रतापगढ़। लालगंज नगर पंचायत चुनाव में कांग्रेस की प्रत्याशी अनीता द्विवेदी ने निर्दल प्रत्याशी रागिनी कौशल को 2812 मतों से हराया। भाजपा तीसरे नम्बर पर पहुची। अनिता द्विवेदी कांग्रेस को 5525, ममता तिवारी भाजपा को 2570, अफरोज बानो सपा को 2245 व रागिनी कौशल निर्दल को 2713 मत मिले। अनीता द्विवेदी की जीत की खुशी में पूरा लालगंज बाजार खशी से झूम उठा। लगातार दूसरी बार कांग्रेस प्रत्याशी अनीता द्विवेदी ने इतिहास रचा। बता दें कि राज्यसभा सांसद प्रमोद तिवारी व विधायक आराधना मिश्रा समर्थित प्रत्याशी अनीता द्विवेदी हैं। जीत के बाद कांग्रेस सांसद व विधायक समेत निर्वाचित नगर अध्यक्ष अनीता द्विवेदी ने क्षेत्रीय जनता का आभार जताया।

राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन 21 मई को

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। अपर जिला जज/सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण नीरज कुमार बरनवाल ने बताया है कि माननीय उ0प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के निदेर्शानुसार एवं जनपद न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण प्रदीप कुमार सिंह के आदेशानुसार 13 मई 2023 को आयोजित होने वाली राष्ट्रीय लोक अदालत अब 21 मई 2023 दिन रविवार को पूर्वान्ह 10 बजे से जनपद मुख्यालय के साथ ही साथ समस्त तहसील मुख्यालयों पर आयोजित की जायेगी। नगरीय निकाय चुनाव के मद्देनजर तिथि परिवर्तन का निर्णय लिया गया है। उन्होने बताया है कि राष्ट्रीय लोक अदालत में विशेष रूप से आपराधिक शमनीय वाद, धारा 138 पराक्रम्य लिखित अधिनियम वाद, बैंक वसूली वाद, मोटर दुर्घटना प्रतिकर याचिकायें, पारिवारिक वाद, श्रम वाद, भूमि अधिग्रहण वाद, विद्युत एवं जल बिल विवाद (चोरी से सम्बन्धित विवादों सहित), सर्विस में वेतन सम्बन्धित विवाद एवं सेवानिवृत्ति लाभों से सम्बन्धित विवाद, राजस्व वाद, अन्य सिविल वाद (किराया, सुखाधिकार, व्यायादेश, विशिष्ट अनुतोष वाद), आपसी सुलह समझौते के आधार पर निस्तारित हो सकने वाले समस्त प्रकार के वादों का निस्तारण किया जायेगा। उन्होने वादकारियों से कहा है कि अपने सम्बन्धित न्यायालय में सम्पर्क कर अपने वादों को राष्ट्रीय लोक अदालत हेतु सन्दर्भित कराकर लोक अदालत का लाभ उठाएं।

तालाब में डूबकर किशोर की मौत, मचा कोहराम

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। नवाबगंज थाना क्षेत्र के पासिन का पुरवा झुकवारा गांव मे शनिवार की शाम लगभग चार बजे गांव के बगिया के बगल मे बड़े तालाब मे गांव के पीयूष पुत्र पंकज सरोज (10) वर्षीय अपने बड़े भाई के साथ तालाब मे भरे पानी मे किसी काम से गया जो गहरे मे चला गया और डूबने लगा तो साथ मे गया बड़ा भाई शोर मचाते हुए घर की तरफ भागा और बताया कि पीयूष तालाब मे डूब गया घर के परिजन व गांव वाले दौड़ पड़े और पीयूष को तालाब से बाहर निकाला जिसकी सांसे थम गई थी परिजन लोग उपचार के लिए स्थानीय चिकित्सक के यहां ले गये जहां चिकित्सको ने पीयूष को मृत्यु घोषित कर दिया मौत की खबर मिलते ही परिजनों मे कोहराम मच गया। घटना की जानकारी परिजनों ने नवाबगंज पुलिस को दी।

अवैध रुप से फल फूल रहा आरा मशीन का धंधा

अखंड भारत संदेश

सुवसा बाजार के निकट कई वर्षो से धड़ल्ले से चल रही मशीन

प्रतापगढ़। फतनपुर थाना क्षेत्र में अवैध रूप से संचालित आरा मशीन का धंधा जोर शोर से फल फूल रहा है। ग्रामीणों का आरोप है कि लोकल पुलिस का इसको संरक्षण प्राप्त है। हालांकि पुलिस वाले इससे इंकार कर रहे हैं, बल्कि जांच कराने का भरोसा दिया है। जानकारी के अनुसार सुवंसा और पूरे गोंसाई के आसपास संचालित आरामशीन के लाइसेंस का नवीनीकरण पिछले कई वर्षों से नहीं हुआ है। ग्रामीणों का कहना है कि जिसके नाम से आरा मशीन थी। कुछ साल पहले उसकी मौत हो चुकी है। विवाद के चलते नवीनीकरण नहीं हो पाया है। आरोप है उसके बाद से लोग बिना लाइसेंस के मशीन धड़ल्ले से चला रहे हैं। बताया जाता है कि चोरी छिपे हरे पेड़ों की कटाई भी यहां पर होती है। ग्रामीणों का आरोप है कि इसकी जानकारी स्थानीय पुलिस को भी। इस बारे में एसओ फतनपुर ने बताया है कि उन्हें इसकी जानकारी नहीं है। फिलहाल वे फौरी तौर चैकी इंचार्ज से इसकी जांच करवा रहे हैं।

शहर में नो एंट्री सिस्टम की उड़ रही धज्जियां

यातायात पुलिस आशीर्वाद लेकर बेधड़क करवा रही भारी वाहनों की एंट्री

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। शहर के अव्यवस्थित यातायात को नियंत्रित करने प्रशासन द्वारा शुरू की गई नो एंट्री व्यवस्था भी लचर साबित हो रही है। आए दिन ट्रैफिक पुलिस की लापरवाही का खामियाजा लोगों को जाम के झाम की समस्या के रूप में भुगतना पड़ता है, लेकिन इस ओर जिला प्रशासन व यातायात पुलिस का कोई ध्यान नहीं है, जिससे लोगों को जाम की समस्या से निजात मिल सके। यह नजारा शनिवार की दोपहर प्रतापगढ़ के भंगवा चुंगी चैराहे का है। जहां बड़े वाहन दिनदहाड़े आंख मूंदकर शहर के अंदर एंट्री कर जाते हैं, जिसके चलते शहर में जाम की स्थिति बनी रहती है। साथ ही बड़े वाहनों की चपेट में आने से कई बार हादसे होने की संभावना बनी रहती है। शहर में नो एंट्री के नाम पर केवल खानापूर्ति की जा रही है। जबकि शहर के हर चैराहे पर यातायात पुलिस तैनात रहती है जिससे कि शहर नो एंट्री के समय में सुबह से लेकर रात तक बड़े वाहन प्रवेश ना कर सके, लेकिन लोगों का आरोप है कि यातायात पुलिस कर्मी आशीर्वाद के रूप में सुविधा शुल्क लेकर बड़े वाहन को आसानी से शहर के अंदर प्रवेश करा देते हैं, जिनका खामियाजा स्थानीय व राहगीरों को जाम की समस्या के रूप में भुगतना पड़ता है। इस बात की फिक्र नहीं रहती है कि भारी वाहनों के चलते दुर्घटनाएं हो सकती हैं। ट्रैफिक पुलिस कर्मी ऐसे वाहनों को शहर के अंदर जाने से रोक लगाते हैं तो काफी हद तक शहर के अंदर हर समय रहने वाली जाम की समस्या से लोगों को काफी राहत मिल सकेगी।

मजदूर यूनियन में बगावत, दो नेताओं ने मेंस का दामन थामा

मंडल मंत्री आरके पांडेय ने माला पहनाकर किया शामिल

मण्डल मंत्री का माला पहनाकर स्वागत करते नेतागण।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। अंतर्कलह से जूझ रही उत्तरीय रेलवे मजदूर यूनियन की स्थानीय शाखा में अब बगावत शुरू हो गई है। शनिवार को यूनियन के दो बागी नेताओं ने मंडल मंत्री आरके पांडेय की मौजूदगी में मेन्स यूनियन का दामन थाम लिया। इससे मजदूर यूनियन और उनके नेताओं को झटका लगा है। हालांकि उनका कहना है कि दोनो को पहले से ही निकाल दिया गया था। लेकिन दोनो मेंस यूनियन में शामिल हो जाएंगे यह सोचकर लोग हैरान जरूर है।

नार्दन रेलवे मेंस यूनियन शाखा के नवीन कार्यालय का उद्घाटन करने आए लखनऊ डिवीजन के मंडल मंत्री आर के पांडे ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि यूनियन कर्मचारियों के हितों के लिए सदैव संघर्ष करती रही है। आगे भी करती रहेगी। किसी भी कर्मचारी का शोषण नहीं होने पाएगा। उन्होंने कर्मचारियों की समस्याओं के निस्तारण का भरोसा दिलाया है। इस मौके पर उत्तरीय रेलवे मजदूर यूनियन शाखा के सहायक शाखा मंत्री केडी तिवारी और डेलिगेट्स उदय राज वर्मा अपने दर्जनभर साथियों के साथ मजदूर यूनियन छोड़कर मेंस यूनियन में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि उस यूनियन में उन्हें घुटन महसूस हो रही थी। कर्मचारी हित की बात नहीं की जा रही थी। शाखा अध्यक्ष मोहम्मद शफीक, मंत्री अनिल शुक्ला ने दोनो का यूनियन में स्वागत किया। इस मौके पर मंडल से आए सहायक मंडल मंत्री सुधीर तिवारी, रंजन सिंह,उपाध्यक्ष वसीम सज्जाद, प्रयागराज शाखा अध्यक्ष एसएस सिंह, गोविंद यादव, सीडीओ दिनेश यादव, कोषाध्यक्ष विजय मिश्रा, सीआईटी राकेश सिंह ,विनय मिश्रा, डीके शर्मा, अजय आनंद, मोहम्मद अनीस, मनीष पांडे समेत कई कर्मचारी और नेता मौजूद थे। उधर, मजदूर यूनियन के शाखा अध्यक्ष अफजल अहमद खान का कहना है कि केडी तिवारी और उदय राज को शिथिलता के कारण यूनियन से 14 अप्रैल को निकाल दिया गया था। इसका पत्र भी जनरल सेक्रेटरी बी सी शर्मा को भेज दिया गया था। केडी तिवारी का कहना है कि उन्हें निकाला नहीं गया हैं। 18 अप्रैल शाम को उन्होंने अपना इस्तीफा दे दिया था। उदय राज का कहना है कि 28 साल तक वे मजदूर यूनियन में रहें लेकिन पद नहीं दिया गया। केवल इस्तेमाल किया गया।

पहले भी छोड़ चुके हैं यूनियन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। मजदूर यूनियन को वीके तिवारी, सीडीओ दिनेश यादव, पूर्व एसएस अनिल दुबे जैसे जुझारू नेता पहले ही छोड़ चुके हैं। वीके और दिनेश यादव मेंस का दामन थाम चुके हैं। अब केडी और उदय भी। जानकार बताते हैं कि अगर ऐसे ही चलता रहा तो शाखा यूनियन का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जायेगा। ऐसा इसलिए कि पता चला है कि बागी मेंस के नेताओं के संपर्क में बने हैं। अध्यक्ष अफजल का कहना है कि जो कर्मचारी हित की बात करेगा। वही यूनियन में रहेगा।

वृद्ध माताओं का सम्मान समारोह आज

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। एलायंस क्लब इंटरनेशनल प्रतापगढ़ द्वारा 14 मई को मातृ दिवस पर वृद्धाश्रम महुली में रह रही वृद्ध माताओं का सम्मान समारोह आयोजित किया जाएगा। क्लब के इंटरनेशनल डायरेक्टर समाजसेवी रोशनलाल उमरवैश्य ने बताया कि क्लब गत वर्षो की भांति मातृ दिवस पर माताओं को उपहार आदि देकर सम्मानित करता आ रहा है। उसी क्रम में इस वर्ष भी 14 मई को वृद्धाश्रम महुली में रह रही माताओं को क्लब के पदाधिकारी सम्मानित कर माताओं का पूजन कर आशीर्वाद प्राप्त करेंगे।

23 मई से मिशन लाईफ कैम्पेन का होगा आयोजन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। प्रभागीय निदेशक सामाजिक वानिकी वन एवं वन्य जीव प्रभाग ने अवगत कराया है कि विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर मिशन लाईफ कैम्पेन का आयोजन 23 मई से 26 मई तक किया जायेगा। राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के निदेर्शों के अनुसार जनपद में गंगा चैपाल/पब्लिक मीटिंग्स, क्यूज एण्ड पेंटिंग काम्पटिशन, गंगा आरती एवं क्लीन लाईन्स ड्राइव्स का आयोजन किये जाने के निर्देश प्राप्त हुये है। उन्होने बताया है कि 23 मई को मोहम्मदाबाद उपरहार व गोतनी ग्राम समाज में ग्राम चैपाल/पब्लिक मीटिंग का आयोजन होगा। 24 मई को हनुमत इण्टर कालेज एवं बाबू लाल इण्टर कालेज मऊदारा में क्विज और पेंटिंग काम्पटिशन का आयोजन होगा। 25 मई को गंगा घाट राजभवन कालाकांकर तथा गंगा घाट मानिकपुर पर घाट पर हाट व गंगा आरती कार्यक्रम का आयोजन होगा। 26 मई को गंगा घाट राजभवन कालाकांकर व गंगा घाट मानिकपुर में क्लीन लाईन्स ड्राइव्स का आयोजन किया जायेगा। उन्होने क्षेत्रीय वनाधिकारी कालाकांकर एवं कुण्डा को निर्देशित किया है कि जनपद स्तर पर मिशन लाईफ कैम्पेन के अन्तर्गत निर्धारित तिथि के अनुसार कार्यक्रम से सम्बन्धित गतिविधियों/कार्यक्रमों में विद्यालीय छात्र-छात्राओं एवं यूथ समूहों को सम्मिलित कराते हुये कार्यक्रम का सफल आयोजन कराना सुनिश्चित करें।

कम्प्यूटर प्रशिक्षण कराने के लिये 30 मई तक करें आवेदन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी ज्योति त्रिवेदी ने अवगत कराया है कि वित्तीय वर्ष 2023-24 में पिछड़े वर्ग के बेरोजगार युवक/युवतियों के लिये निःशुल्क ओ लेवल एवं सी0सी0सी0 (ट्रिपल-सी) कम्प्यूटर प्रशिक्षण योजना संचालित की जा रही है। वर्ष 2023-24 में इस योजना के अन्तर्गत भारत सरकार की अधिकृत संस्था नीलिट (राष्ट्रीय इलेक्ट्रानिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान) से मान्यता प्राप्त संस्थानों द्वारा अन्य पिछड़े वर्ग के युवक/युवतियों को ओ लेवल एवं सीसीसी कम्प्यूटर प्रशिक्षण कराने हेतु आवेदन किया जा सकता है। आनलाइन आवेदन किये जाने की तिथि 15 मई से 30 मई 2023 तक है। आवेदन करने के उपरान्त संस्था द्वारा आनलाइन भरे गये आवेदन की प्रति डाउनलोड कर प्रिन्ट आउट प्राप्त कर हस्ताक्षरित करते हुये समस्त अभिलेखों तथा उपलब्ध संसाधनों से सम्बन्धित विवरण सहित निदेशालय पिछड़ा वर्ग कल्याण इन्दिरा भवन 10वां तल, अशोक मार्ग, लखनऊ/सम्बन्धित जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी कार्यालय प्रतापगढ़ में 17 मई से 31 मई तक सायं 5 बजे तक अनिवार्य रूप से हार्डकापी उपलब्ध करायी जायेगी। पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग उ0प्र0 की वेबसाइट पर दिये गये लिंक से निर्धारित प्रारूप पर संस्था द्वारा आनलाइन आवेदन किया जा सकता है। इस हेतु दिशा निर्देष/समय सारिणी वेबसाइट पर प्रदर्शित कर दी गयी है। अधिक जानकारी के लिये कार्यालय जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी प्रतापगढ़ से सम्पर्क करें।

साहित्यकार के निधन पर शोक जताने वालों का लगा तांता

भारत विकास परिषद, लायंस क्लब व व्यापार मण्डल ने जताया शोक

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जनपद के वरिष्ठ एडवोकेट, साहित्यकार, कवि, अपने गीतों व रचना के लिए जाने जाने वाले सत्येंद्र नाथ मिश्र ह्मदुलह्म जी के असामयिक मृत्यु के बाद उनके निवास पर शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी भावना व्यक्त करने के लिए अनेक गणमान्य नागरिकों का आना जाना लगा है।

इसी क्रम में जनपद के विभिन्न साहित्यिक, सांस्कृतिक, कला क्षेत्रों से जुड़े संगठन एवं गणमान्य नागरिकों ने कल सायं उनके आवास पर पहुंचकर उन्हें

साहित्यकार सत्येन्द्र नाथ मिश्र (फाइल फोटो)।

भावभीनी श्रद्धांजलि व्यक्त की। संस्कार भारती के अध्यक्ष शिशिर खरे के संयोजकत्व में भारत विकास परिषद, लायंस क्लब प्रतापगढ़ गौरव, कवि कुल, व्यापार मंडल के वरिस्ठ सदस्यों और वरिष्ठ नागरिकों ने उनके चित्र पर माल्यार्पण कर व पुष्प अर्पित कर अपनी भावनाएं व्यक्त की। इस अवसर पर अशोक शर्मा, रतन चंद्र जैन, शिव प्रकाश मिश्र सेनानी, डा. राजेन्द्र राज, शरद केसरवानी, डा. पियूष कान्त शर्मा, शिवानी मातनहेलिया, अवधेश उपाध्याय, सत्यम शार्दुल, संजीव आहूजा, सुरेश संभव, सुनील प्रभाकर, सुनील दुबे आदि ने भी अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुए उनके कुछ संस्मरणों को भी साझा किया।

अवैध तमंचा के साथ एक अभियुक्त गिरफ्तार

परियावां, प्रतापगढ़। पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर नवाबगंज उप निरीक्षक प्रदीप कुमार क्षेत्र भ्रमण के दौरान अपने हमराही के साथ थाना क्षेत्र के मदद्पुर गांव के पास खड़े ब्यक्ति के पास तलाशी के दौरान एक अदद 315 बोर तमंचा व एक जीवित कारतूस बरामद किया जिसे पकडकर थाने ले गये। पूछताछ में अभियुक्त ने अपना नाम प्रदीप कुमार मिश्रा पुत्र कृष्ण कुमार निवासी शिवानी का पुरवा देवर पट्टी थाना बाघराय जनपद प्रतापगढ़ बताया जिसकी लिखा पढ़ी करके पुलिस ने अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया।

दिव्यांगजन शादी विवाह प्रोत्साहन पुरस्कार योजना का उठाएं लाभ

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी सच्चिदानन्द तिवारी ने जनपद के समस्त दिव्यांगजनों को सूचित किया है कि दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग द्वारा संचालित शादी विवाह प्रोत्साहन पुरस्कार योजनान्तर्गत आनलाइन आवेदन वेबसाइट पर स्वीकार किये जा रहे है। आवेदन पत्र साइबर कैफे, निजी इण्टरनेट केन्द्र, जनसुविधा केन्द्रों के माध्यम से किया जा सकेगा। उन्होने बताया है कि इस योजनान्तर्गत दिव्यांग सम्पत्ति को विवाह करने पर पुरूष के दिव्यांग होने पर प्रोत्साहन पुरस्कार 15000 रुपए एवं महिला के दिव्यांग होने पर 20000 रुपए तथा यदि दम्पत्ति (पति-पत्नी) दिव्यांग है तो 35000 रुपए पुरस्कार स्वरूप प्रदान किया जाता है। इच्छुक पात्रता रखने वाले दिव्यांगजन आनलाइन आवेदन भरते समय आवेदक दम्पत्ति को दिव्यांगता प्रदर्शित करने वाला संयुक्त नवीनतम फोटोग्राफ, आयु प्रमाण पत्र जिसमें जन्म तिथि का अंकन हो, सक्षम स्तर से निर्गत दिव्यांगता प्रमाण पत्र, विवाह पंजीकरण प्रमाण पत्र, अधिवास प्रमाण पत्र, आधार कार्ड, आय प्रमाण पत्र, जाति प्रमाण पत्र, राष्ट्रीयकृत बैंक में संचालित संयुक्त खाता आदि अभिलेख पूर्ण कर आनलाइन आवेदन कर हार्डकापी मय संलग्न सहित कार्यालय जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी प्रतापगढ़ कक्ष संख्या-25 में जमा करा दें ताकि नियमानुसार अग्रेतर कार्यवाही की जा सके। दिव्यांगजन आनलाइन आवेदन पर सकते हैं। किसी भी असुविधा हेतु कार्यालय जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी से किसी कार्य दिवस में सम्पर्क कर सकते है।

झाड़फूंक के बहाने दलित किशोरी के साथ किया दुष्कर्मए आरोपी पर मुकदमा दर्ज

अखंड भारत संदेश

पट्टी। थाना के एक गांव की 17 वर्षीय किशोरी ने एक तांत्रिक पर झाड़फूंक के बहाने दुष्कर्म करने का आरोप लगाया है। किशोरी की तहरीर पर पुलिस ने आरोपी तांत्रिक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। आरोपी की खोजबीन की जा रही है। किशोरी का आरोप है कि वह कंधई थाना क्षेत्र भैंसौनी गांव निवासी कथित तांत्रिक विकास यादव उर्फ गोल्डी यादव के घर वह दो वर्ष से झाड़फूंक कराने जाती थी। युवक उसके साथ झाड़फूंक के बहाने धमकी देकर लगातार दुष्कर्म करता रहा। तांत्रिक की करतूत से परेशान होकर किशोरी ने अपने परिजनों को आपबीती सुनाई तो वह सन्न रह गए। परिजनों ने आरोपी के खिलाफ थाने में तहरीर दी। पुलिस ने आरोपी तांत्रिक के खिलाफ दुष्कर्मए पाक्सो एवं एससीएसटी एक्ट सहित अन्य धाराओं में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी। एसओ कंधई धीरेन्द्र ठाकुर ने बताया कि तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर आरोपित की तलाश की जा रही है।

खबर संक्षेप

चेकिंग के दौरान की गई कार्यवाही

कौशाम्बी। जनपद में चलाये जा रहे यातायात से सम्बन्धित अभियान के क्रम में जनपद स्तर पर विभिन्नथानों व यातायात पुलिस द्वारा यातायात नियमों का पालन न करने वालों के विरुद्ध सघन चेकिंग की गई एंव चेकिंग के दौरान दो पहिया व चार पहिया वाहनों को चेक किया गया जिसमे यातायात नियमों का उल्लघन करने वाले 159 वाहनों का ई-पालान किया गया तथा एक वाहन से 1000 रुपए सम्मन शुल्क वसूला गया।

निरोधात्मक कार्यवाही मे तीन अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अपराध के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में साधारण मारपीट व शांति भंग करने के आरोप में थाना मंझनपुर से एक थाना सैनी से दो कुल तीन अभियुक्तों को गिरफ्तार कर चालान न्यायालय किया गया।

दो नगर पालिका और आठ नगर पंचायत का चुनाव परिणाम हुआ घोषित

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। नगर निकाय के चुनाव में कौशांबी जनपद की दो नगर पालिका भरवारी मंझनपुर और आठ नगर पंचायत सराय अकिल चायल चरवा पश्चिम सरीरा करारी अझुवा सिराथू कड़ा दारानगर का चुनाव परिणाम घोषित कर दिया गया है मतगणना के दिन सुबह से ही प्रत्याशियों के दिलों की धड़कने बढ़ गई तमाम प्रत्याशियों की करारी हार हुई है जिससे उनके चेहरे में हवाइयां उड़ने लगी हैं नगर निकाय के चुनाव में प्रदेश और केंद्र में भारतीय जनता पार्टी की सरकार होने के बाद भी मतदाताओं ने कई सीट पर भाजपा प्रत्याशियों को नकार दिया है कई सीट पर निर्दलीय प्रत्याशियों के सिर पर जीत का सेहरा बंधा है पूर्व काबीना मंत्री समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव इंद्रजीत सरोज का भी जादू नगर निकाय के चुनाव में नहीं चल सका है नगर पंचायत और नगर पालिका के चुनाव में बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशी काफी पीछे छूट गए हैं चुनाव परिणाम आने के बाद जीते प्रत्याशियों के घरों में जश्न का माहौल है एक नगर पंचायत में आम आदमी पार्टी के प्रत्याशी ने जीत दर्ज कर कौशांबी जिले में आम आदमी पार्टी का खाता खोल दिया है दो नगरपालिका

और आठ नगर पंचायत की सीट पर अध्यक्ष पद के प्रत्याशियों की जीत का दावा करने वाले भाजपा नेताओं के मंसूबे पर पानी फिर गया है मतगणना स्थल में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच मतगणना संपन्न हुई है पल-पल की जानकारी डीएम एसपी लेते रहे मतगणना स्थल पर पत्रकारों के प्रवेश पर भी रोग लगाए जाने के बाद पत्रकार धरने पर बैठ गए थे चुनाव परिणाम आने के बाद दबी जुबान से तमाम प्रत्याशियों ने तरह-तरह के आरोप-प्रत्यारोप लगाना शुरू कर दिया है।

मतगणना के दौरान लगातार भ्रमणशील रहे डीएम एसपी

कौशाम्बी। नगर निकाय चुनाव की मतगणना को सकुशल संपन्न कराने के लिए जिलाधिकारी कौशांबी सुजीत कुमार एवं पुलिस अधीक्षक कौशाम्बी बृजेश श्रीवास्तव लगातार मतगणना स्थल का भ्रमण करते रहे डीएम एसपी द्वारा नगर निकाय निर्वाचन 2023 की मतगणना के दौरान शांति एवं सुरक्षा व्यवस्था के दृष्टिगत लगातार ओसा, भरवारी एवं सिराथू में बने मतगणना स्थलों का लगातार भ्रमणशील रहते हुए निरीक्षण किया है मतगणना की पल-पल की जानकारी दोनों अधिकारी लेते रहे इस दौरान ड्यूटी में तैनात अधिकारियों कर्मचारियों को डीएम एसपी द्वारा आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए मतगणना शांतिपूर्ण संपन्न कराने में लगातार डीएम एसपी प्रयासरत रहें और मतगणना शांतिपूर्ण संपन्न हुई है।

महिला की हत्या के बाद जांच पड़ताल करती पुलिस

दिन दहाड़े महिला की गोली मारकर हत्या

महिला की हत्या क्यों की गई है यह अभी स्पष्ट नहीं हो सका है

कौशाम्बी। प्रयागराज जनपद के पूरा मुफ्ती थाना क्षेत्र के मर्दानपुर गांव में घर में अकेली मौजूद महिला को शनिवार की दोपहर गोली मारकर हत्या कर दी गई है हत्या की जानकारी मिलते ही क्षेत्र में अफरा-तफरी मच गई है मामले की सूचना मिलते ही घटनास्थल पर इलाके की पुलिस पहुंची है और महिला के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है महिला की हत्या क्यों की गई है यह अभी स्पष्ट नहीं हो सका है मृतक महिला के लड़के सराफा की दुकान करते हैं। जानकारी के मुताबिक पूरामुफ्ती थाना क्षेत्र के मर्दानपुर गांव की महिला कलावती उम्र लगभग 45 वर्ष पत्नी स्वर्गीय धर्मपाल शनिवार की दोपहर अपने घर में अकेले मौजूद थी इसी बीच अचानक कुछ लोग पहुंचे और महिला को गोली मार दी मौके पर महिला की तड़प तड़प कर मौत हो गई आवाज सुनकर आसपास के लोग घटनास्थल पर पहुंचे महिला की हत्या की जानकारी मिलते ही इलाके में अफरा-तफरी मच गई मामले की सूचना पुलिस को दी गई सूचना पाकर घटनास्थल पर पुलिस पहुंची लोगों से पूछताछ और जांच पड़ताल करने के बाद थाना पुलिस ने महिला के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है पुलिस महिला के हत्या के कारण की जांच कर रही है और हत्यारों की गिरफ्तारी करने का प्रयास पुलिस कर रही है।

भाजपा प्रत्यासी शान्ती कुशवाहा ने मारी बाजी, निर्दल प्रत्यासी प्रीति साहू को नजदीकी मुकाबले में हराया

शान्ती कुशवाहा ने नगर भ्रमण कर नगर वासियों को किया शुक्रिया

नगर पंचायत अझुवा से जीती शांति कुशवाहा

अखंड भारत संदेश

अझुवा कौशाम्बी। नगर पंचायत अझुवा में ओमप्रकाश कुशवाहा ने फिर एक बार बाजी मारी है उन्होंने अपने निकटत प्रतिद्वंद्वी प्रीति साहू पत्नी प्रदीप साहू को 217 मतों के अंतर से हराया है जीतने के बाद शान्ती कुशवाहा ने नगर भ्रमण क नगर वासियों का शुक्रिया अ किया बता दें कि 2012 के चुनाव में इन्होंने नगर पंचायत अझुवा की निर्दलीय प्रत्यासी के रूप में कमान संभाली थी नगर पंचायत को विकास के रास्ते पर ले जाते हुए 2017 के चुनाव में एससी सीट होने पर भी अपने प्रत्यासी को जीत दिलवाई थी आज मतदान गणना में फिर एक बार शांती कुशवाहा विजयी हुई। नगर पंचायत अझुवा से भाजपा प्रत्यासी शांति देवी कुशवाहा 2671 मत पाकर बिजयी घोषित हुई है दूसरे स्थान पर निर्दल प्रत्याशी प्रीति साहू को 2454 वोट मिले बीजेपी प्रत्याशी 217 वोट से विजयी हुई भाजपा के अध्यक्ष प्रत्याशी शांति देवी कुशवाहा इसके पहले भी नगर पंचायत अझुवा का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं पहले वह समाजवादी पार्टी से चुनाव जीतकर अध्यक्ष बन चुकी हैं उनके पति ओमप्रकाश कुशवाहा भी समाजवादी पार्टी से नगर पंचायत अझुवा से अध्यक्ष रह चुके हैं।

तीसरी बार राजेंद्र यादव ने फिर दर्ज की जीत

कौशांबी। नगर पंचायत सिराथू से दो बार समाजवादी पार्टी से जीत दर्ज करने वाले राजेंद्र यादव इस बार भारतीय जनता पार्टी से अध्यक्ष पद के प्रत्याशी थे और उन्होंने तीसरी बार फिर सिराथू नगर पंचायत में जीत का झंडा गाड़ दिया है बीजेपी के राजेंद्र प्रसाद उर्फ भोला यादव ने तीसरी बार हैट्रिक लगाई है 4606 वोट पाकर भाजपा प्रत्याशी राजेन्द्र यादव ने समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी दयाशंकर यादव को हराकर 1906 वोटों से विजई हुए।

नगर पंचायत सराय अकिल में आप प्रत्यासी ने दर्ज की जीत

कौशाम्बी। नगर निकाय के चुनाव में नगर पंचायत सराय अकिल में आम आदमी पार्टी के प्रत्याशी अनूप सिंह ने सपा बसपा भाजपा का सफाया करते हुए जीत दर्ज की है झाड़ू की आंधी में साइकिल कमल का फूल और हाथी उड़ गया आम आदमी पार्टी के प्रत्याशी अनूप सिंह को कुल 3914 वोट मिले हैं 1624 वोट से अनूप सिंह ने जीत दर्ज की है सपा प्रत्यासी दिलीप कुमार को 2290 मत मिला है इसी के साथ नगर पंचायत के 5 वार्ड में आम आदमी पार्टी के प्रत्याशी में सभासद पद पर जीत दर्ज की है आम आदमी पार्टी के सभासद प्रत्याशियों में जीतने वालों में सभासद वार्ड 7 से प्रकाशचंद्र गुप्ता सभासद वार्ड 1 से जितेन्द्र सभासद वार्ड 6 से रोशन लाल सभासद वार्ड 12 से आदित्य आनन्द सिंह और फहीम अहमद वार्ड 10 से आम आदमी पार्टी के प्रत्याशी के रूप में सभासद पद पर विजई हुए हैं।

सपा भाजपा कांग्रेस को पराजित कर निर्दलीय प्रत्याशी जग नारायण ने दर्ज की जीत

कौशाम्बी। नगर पंचायत चरवा में सपा भाजपा कांग्रेस प्रत्यासी को पराजित करते हुए अध्यक्ष पद से निर्दलीय जगनारायण 2547 मत पाकर विजयी घोषित हुए है दूसरे स्थान पर लाल जी वर्मा निर्दलीय प्रत्याशी को 2481 मत मिले है तीसरे स्थान पर समाजवादी पार्टी के उम्मीदवार राम करन निर्मल को 2342 मत से ही सन्तोष करना पड़ा नगर पंचायत चरवा में भाजपा प्रत्याशी की दुर्गति हुई है भाजपा प्रत्याशी चौथे स्थान पर चले गए हैं भाजपा के प्रमुख दावेदार को टिकट न देने का खामियाजा भारतीय जनता पार्टी को करारी हार का सामना करते हुए भुगतना पड़ा है।

सपा भाजपा प्रत्याशी को हराकर रागिनी देवी ने दर्ज की जीत

कौशांबी। नगर पंचायत दारानगर कड़ा से निर्दल प्रत्यासी रागिनी देवी केसरवानी ने अध्यक्ष पद पर 5094 मत पाकर जीत दर्ज की है समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी को 3047 मत पर संतोष करना पड़ा 2047 मतों से जीत दर्ज कर रागिनी देवी ने सपा भाजपा प्रत्याशियों को पीछे छोड़ दिया है रागिनी देवी के पति अरुण केसरवानी भाजपा से अध्यक्ष पद के दावेदार थे लेकिन ऐन वक्त पर भाजपा ने अरुण को टिकट नहीं दिया जिस पर रागिनी देवी ने निर्दल प्रत्याशी के रूप में दावा ठोक दिया रागिनी देवी के मैदान में आने के बाद सपा भाजपा प्रत्याशी की करारी हार हुई है पार्टी के टिकट बंटवारे के खामियाजा के चलते दारा नगर कड़ा नगर पंचायत में भाजपा प्रत्याशी को पराजय का मुंह देखना पड़ा है।

नगर पंचायत चायल में निर्दलीय प्रत्याशी जीते

कौशाम्बी। चायल नगर पंचायत से निर्दलीय प्रत्यासी अमर सिंह ने 345 वोट से जीत दर्ज किया है दूसरे स्थान पर भाजपा उम्मीदवार राजेन्द्र कुमार सोनकर और तीसरे स्थान पर सपा उम्मीदवार रामकैलाश रहे टिकट बंटवारे का खामियाजा भाजपा प्रत्याशी को भुगतना पड़ा है।

न्यूज झरोखा

नगरपालिका भरवारी से भाजपा प्रत्याशी जीती

कौशाम्बी। जिले में नगर पालिका भरवारी की गणना पूरी हो गई है।अंतिम परिणाम में भाजपा प्रत्याशी कविता पासी को 16805 मत मिले हैं वही सपा प्रत्याशी सुनीता सरोज को 10129 मत मिले हैं 6676 मत से भाजपा प्रत्याशी कविता पासी नगर पालिका परिषद भरवारी में अध्यक्ष पद पर विजई घोषित हुई है।

भाजपा प्रत्याशी को पराजित करते हुए सपा उम्मीदवार तारा देवी ने दर्ज की जीत

कौशांबी। पूरब पश्चिम शरीरा नगर पंचायत मे सपा प्रत्यासी तारा देवी ने 4424 मत पाकर भाजपा प्रत्याशी को पराजित कर दिया है समाजवादी पार्टी की प्रत्याशी तारा देवी की 750 वोट से जीत हुई है सपा प्रत्यासी को 4424 मत और भाजपा प्रत्यासी को 3376 मत मिले है।

नगर पालिका मंझनपुर में बसपा को पछाड़कर भाजपा ने दर्ज की जीत

कौशाम्बी। नगर पालिका परिषद मंझनपुर से भाजपा प्रत्याशी वीरेन्द्र फौजी 10726 मत पाकर विजई घोषित किए गए हैं उन्होंने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी बसपा प्रत्याशी दशरथ लाल सरोज को 5959 वोटों से हराया है गौरतलब हो की भाजपा प्रत्याशी वीरेन्द्र फौजी को 10726 मत मिले जबकि बसपा प्रत्याशी को 4767 मत मिला। सपा प्रत्यासी को 4231 मतो के साथ तीसरे नंबर पर संतोष करना पड़ा।

पिता की विरासत को बचाने में सफल हुए शमशाद बख्स

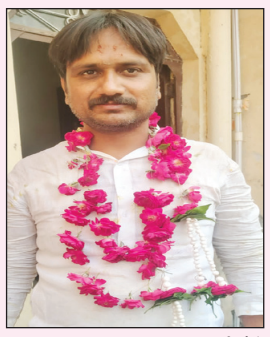

कौशाम्बी। समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता मौला बख्श लगातार नगर पंचायत करारी से अध्यक्ष का चुनाव जीत रहे थे लेकिन इस बार पार्टी ने उन्हें प्रत्याशी नही घोषित किया जिस पर उनके बेटे शमसाद बख्स ने करारी नगर पंचायत से अध्यक्ष पद पर दावा ठोक दिया नगर क्षेत्र की जनता ने मौला बख्श के बेटे शमशाद बख्श पर भरोसा जताया अध्यक्ष पद के प्रत्याशी शमशाद बख्श ने 2014 वोट प्राप्त कर 441 वोटों से जीत दर्ज की है वहीं दूसरे स्थान पर मदन जायसवाल को 1573 वोट प्राप्त हुए नगर पंचायत करारी में मौला बख्श लगातार अध्यक्ष पद पर विजई होते रहे हैं पिता की विरासत को संभालने में उनके बेटे शमशाद बख्स सफल हुए हैं।

कर्नाटक की जीत पर कांग्रेसियों ने मनाया जश्न, बांटी मिठाईयां

कौशाम्बी। कर्नाटक में कांग्रेस पार्टी के नेताओं की भारी जीत के बाद कौशांबी में कांग्रेस नेताओं ने जश्न मनाया है और इस मौके पर मिठाई बांटकर कहा कि कर्नाटक में कांग्रेस की जीत ने यह साबित कर दिया है कि लोकतंत्र की जीत हुई है कांग्रेस नेता आशीष कुमार उर्फ पप्पू मिश्रा ने कहा कि राहुल गांधी की भारत भारत जोड़ो यात्रा सफल रही और मतदाताओं ने राहुल गांधी पर भरोसा जताया उन्होंने कहा कि हम सब के नेता राहुल गांधी ने साबित कर दिया कि कर्नाटक में मतदान का प्रयोग किया गया है कांग्रेस पार्टी को प्रचंड बहुमत मिला है कांग्रेस के जिला उपाध्यक्ष आशीष कुमार उर्फ पप्पू मिश्रा ने ओसा चौराहा कांग्रेस कार्यालय में कर्नाटक में कांग्रेस की जीत पर मिठाई वितरण किया है जिला महामंत्री बरसती लाल पंडा ने कर्नाटक में कांग्रेस प्रत्याशी की जीत पर लोकतंत्र की जीत बताया उन्होंने कहा कि सेमीफाइनल का सेमी फाइनल जीता उन्होंने कहा कि यहीं से लोक सभा 2024 की तैयारी हो रही है और आने वाले लोकसभा 2024 के चुनाव में भाजपा का सफाया तय है इस मौके पर राजकुमार यादव यूथ कांग्रेस के जिला अध्यक्ष अंकित शुक्ला सचिन शुक्ला अंगूर तिवारी अंबुज तिवारी अखिलेश द्विवेदी कमलेश द्विवेदी सहित तमाम कांग्रेसी नेता मौजूद रहे।

सभी नहरों एवं रजबहों में टेल तक जलापूर्ति न हुई तो किसानो का होगा धरना प्रदर्शन : अजय सोनी

कौशाम्बी। शुक्रवार को समर्थ किसान पार्टी के तत्वावधान में ग्राम जगन्नाथपुर ब्लॉक सिराथू में किसानो ने बैठक की। बैठक में नहरों में पानी न आने को लेकर चर्चा हुई। इस अवसर पर समर्थ किसान पार्टी के नेता एवं जिला पंचायत सदस्य अजय सोनी ने जिला प्रशासन कौशांबी एवं सिंचाई विभाग से करारी माइनर समेत जिले की सभी सूखी नहरों एवं रजबहों में टेल तक पानी छोड़े जाने की मांग की। शुक्रवार को किसान नेता अजय सोनी ने सिराथू ब्लॉक के ग्राम जगन्नाथपुर में किसानो के साथ बैठक की। बैठक में किसानो ने आरोप लगाया कि करीब तीन महीने से नहरों में पानी नही आ रहा है जिसके चलते पहले रबी की फसल सूख गई और अब जायद की फसल सूखने के कगार पर पहुंच गई है। किसानो का कहना था कि सिंचाई विभाग के अधिकारियों की लापरवाही के चलते नहरों में पानी न आने से सैकड़ों बीघे फसल सूख रही है और हम लोग बहुत परेशान हैं। मजबूरी में निजी नलकूपों से सिंचाई करनी पड़ रही है जिसकी हमें भारी कीमत चुकानी पड़ती है। इस संबंध में अजय सोनी ने जिला प्रशासन कौशांबी एवं सिंचाई विभाग के अधिकारियों से मांग किया है कि जल्द ही करारी माइनर समेत जिले की सभी नहरों में टेल तक पानी छोड़ा जाए जिससे जायद की फसलों की सिंचाई हो सके। आगे कहा कि सिंचाई विभाग के अधिकारियों की मनमानी के चलते किसानो की फसलें सूख रहीं हैं, साथ ही भारी गर्मी के समय में गांवों के तालाब सूखे पड़े हैं जिसके चलते पशुओं के लिए पीने के पानी की भारी

करारी माइनर समेत जिले की सभी नहरों एवं रजबहों में टेल तक जलापूर्ति की सकिपा ने उठाई मांग

पानी छोड़े जाने की मांग करते किसान

समस्या है। इसी के साथ अजय सोनी ने कहा की गांवो के तालाबों में पानी भर जाने से आगजनी की समस्या से भी ग्रामीणों को राहत मिलती है। इन सबके बावजूद भी जिला प्रशासन कौशांबी और सिंचाई विभाग नहरों में टेल तक पानी नही छोड़ रहा है। आगे कहा कि जल्द ही जिले भर की सभी नहरों एवं रजबहों में टेल तक पानी न छोड़ा गया तो समर्थ किसान पार्टी के तत्वावधान मे सैकड़ों किसानो के साथ जिला प्रशासन एवं सिंचाई विभाग के खिलाफ धरना प्रदर्शन किया जाएगा। इस मौके पर अयूब प्रधान, राकेश सोनकर, तुलसी कुमार, प्रेम सिंह लोधी, परवेज अहमद, शकील अहमद, राज बहादुर सिंह, लालचंद्र सरोज, अनिता, शकुंतला, रमा देवी आदि लोग मौजूद रहे।

अवैध बालू खनन में लगे माफियाओं को नहीं है प्रशासन का भय

कौशाम्बी। जिले के बालू ओवरलोडिंग बन्द करना प्रशासन के लिये नामुमकिन साबित हो रहा है।अभी हाल ही में अवैध खनन और ओवरलोडिंग के मामले में लखनऊ की टीम कौशाम्बी आई थी लेकिन कौशाम्बी के लोगो ने केवल दो घाट के ही बारे में जानकारी दिया और कुछ ओवरलोड वाहन पकड़कर कोरम पूरा कर दिया गया।सड़को पर ओवरलोड वाहन बालू लादे खड़े रहते है जिम्मेदार आते जाते है लेकिन इन माफियाओ को तनिक भी प्रशासन का भय नही।पूरे जिले में अवैध खनन और ओवरलोडिंग का कारोबार बेखौफ चल रहा है।अब तो दिन में भी सड़को पर वाहन फरार्टे मारते नजर आ रहे है।क्या कौशाम्बी जिले के जिम्मेदार इनके आगे घुटने टेक दिए है। अब तो मीडिया से भी कहा जाने लगा कि चाहे जितना छापो कोई फर्क नही पड़ने वाला है।आखिर किसके सह पर यह कार्य बेखौफ तरीके से हो रहा है। जगह जगह अवैध खनन हो रहा है लेकिन कार्यवाही के नाम पर केवल कोरम पूरा किया जाता है।अगर जिले के जिम्मेदार केवल एक दिन कार्यवाही करे तो जिले के शायद ही कोई चौकी और थाना मिलेगा जहा ओवरलोड वाहनों की कतारें न दिखे।

तमंचा कारतूस के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। थाना पश्चिम शरीरा पुलिस बल द्वारा अभियुक्त प्रदीप कुमार उर्फ गोलू पुत्र राम सजीवन निवासी चपरी का पूरा मजरा बरुआ थाना पश्चिम शरीरा को चांदेराई नहर पुलिया के पास से एक अदद तमचा 315 बोर व दो अदद जिन्दा कारतूस 315 बोर के साथ गिरफ्तार कर

12.05.2023 को सोशल मीडिया ट्यूटर पर एक व्यक्ति का अवैध तमंचा के साथ फोटो वायरल

गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर थाना स्थानीय पर मुकदमा पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना करारी पुलिस बल द्वारा वांछित अभियुक्त सुरेश कुमार पुत्र भुल्लन लाल निवासी अर्का फतेहपुर थाना करारी को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है। इसी प्रकार थाना मझनपुर पुलिस बल द्वारा वाछित अभियुक्त बिहारी लाल गौतम पुत्र स्व0 प्यारेलाल निवसु बहादुरपुर थाना मंझनपुर को ओसा नहर पुलिया के पास से गिरफ्तार कर कब्जे से घटना में प्रयुक्त एक अदद मोबाइल फोन बरामद कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

संपादकीय

जनता की सुरक्षित यात्रा से बेपरवाह सत्ताधीश

मध्यप्रदेश में मंगलवार की सुबह साढ़े पांच बजे के लगभग खरगोन में एक भयंकर सड़क हादसा हुआ। खरगोन जिले के डोंगरगांव में यात्रियों से भरी बस एक पुल की रेलिंग तोड़ते हुए नीचे सूखी हुई नदी में जा गिरी। इस हादसे में 15 से अधिक लोगों की मौत की खबर है, जबकि कई लोग घायल हैं। राज्य के गृहमंत्री के मुताबिक इस घटना में मजिस्ट्रियल जांच के आदेश दिए गए हैं। इस जांच के बाद ही दुर्घटना की सही वजह पता लगेगी। शिवराज सिंह चौहान की सरकार ने हादसे में मृतकों के परिजनों को 4 लाख रुपये, गंभीर रूप से घायल व्यक्तियों को 50 हजार रुपये और मामूली घायलों को 25 हजार रुपये बतौर मुआवजा देने का ऐलान किया है। अब गंभीर और मामूली घायलों को किस तरह अलग-अलग परिभाषित किया जाएगा, यह अलग सवाल है। वैसे इस बात पर किसी को शोध करना चाहिए कि एक साल में हमारी निर्वाचित सरकारें कितने लाख या करोड़ रूपए उन दुर्घटनाओं के लिए मुआवजे के तौर पर देती हैं, जिन्हें रोका जा सकता था। प्राकृतिक हादसों पर तो किसी का जोर नहीं, लेकिन भगदड़, दीवार या छत गिरना, सड़क दुर्घटना, जहरीली शराब ये सब सरकार-प्रशासन निर्मित दुर्घटनाएं हैं, जिनके लिए सरकारों को दंडित किया जाना चाहिए, मगर सरकारें जनता की गाढ़ी कमाई को मुआवजे के तौर पर देकर एहसान जताती हैं। चुनावों के वक्त घोषणापत्रों में तमाम तरह के वादे किए जाते हैं, भाषणों में हिंदू-मुसलमान के नाम पर बेशर्मी से वोट मांगे जाते हैं, लेकिन कभी कोई ये वादा नहीं करता कि इस तरह के हादसों को रोकने की ईमानदार कोशिश की जाएगी। इसमें पूरा दोष सरकारों पर नहीं डाला जा सकता। जनता भी इस तरह के हादसों को अपनी नियति मान चुकी है। इसलिए वह सरकार से जवाब नहीं मांगती, केवल सड़कों-पुलों के शिलान्यास पर ताली बजाने के लिए भीड़ के रूप में जुट जाती है। ऐसा एक दिन भी नहीं गुजरता जब देश में कहीं कोई सड़क दुर्घटना न हुई हो। किसी न किसी हिस्से में दुर्घटनाएं होती ही रहती हैं। अगर एक-दो लोगों की जान जाए, तो उसे अब लोग सामान्य खबर की तरह लेने लगे हैं और अगर अधिक लोग हताहत हों, तो थोड़ा बहुत अफसोस पीड़ितों के लिए किया जाता है, लेकिन सरकार से जवाबदेही मांगने जैसी कोई पहल कहीं दिखाई नहीं देती। वैसे भी सड़क हादसों में मरने वाले अधिकतर गरीब, निम्न मध्यमवर्गीय लोग होते हैं, जिनका जिंदा रहना राजनैतिक दलों के लिए इसलिए जरूरी है कि उनसे उन्हें वोट मिल जाते हैं, इससे अधिक उनकी जिंदगी की उपयोगिता नहीं मानी जाती है। अभी 4 मई को अजमेर जा रहे श्रद्धालुओं की एक कार पर टैंकर पलट गया तो 8 लोगों की मौत हो गई। इसी दिन छत्तीसगढ़ में धमतरी के पास नेशनल हाइवे पर सड़क हादसे में 10 लोग मारे गए। 6 मई को लखनऊ- बहराइच मार्ग के पास कैसरगंज कस्बे में एक ऑटो को दूसरे वाहन की टक्कर से ऑटो सवार 6 लोगों की मौत हो गई। 7 मई को मुरादाबाद में दलपतपुर-काशीपुर हाइवे पर दो वाहनों की भिड़ंत में 10 लोग मारे गए। यानी पिछले पांच-छह दिनों में अलग-अलग राज्यों में कम से कम 50 लोग सड़क हादसों का शिकार हो गए। इनमें एक-दो मृतकों वाले हादसों को शामिल ही नहीं किया गया है, वर्ना आंकड़ा और बढ़ जाएगा। भारत विश्व की सड़क हादसों में होने वाली 11 प्रतिशत मौतों के साथ शीर्ष पर ऐसे ही नहीं आया है। सड़क यातायात और राजमार्ग मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट 'रोड एक्सीडेंट्स इन इंडिया 2021' में बताया गया है कि भारत में सड़क दुर्घटनाओं में हर घंटे 18 लोगों की जान जा रही है और औसतन 44 लोग घायल हो रहे हैं। इन हादसों में मृतकों के 67 प्रतिशत लोग 18 से 45 आयु के हैं। यानी युवाओं की बड़ी संख्या सड़क हादसे का शिकार हो रही है। 2021 में देश में नेशनल हाइवे पर कुल 1,28,825 हादसे हुए थे। अब 2022 की रिपोर्ट आएगी, तब और पता चलेगा कि देश में सड़क हादसे कम हो रहे हैं या बढ़ रहे हैं। मौजूदा हालात देखकर अच्छी रिपोर्ट की उम्मीद कम ही है। सड़क यातायात और राजमार्ग मंत्रालय की वर्षांत समीक्षा 2022 में बताया गया है कि भारत में सड़कों का नेटवर्क लगभग 63.73 किमी है, जो दुनिया में सबसे विशाल है। सरकार ने राजमार्ग विकास पर विशेष जोर दिया गया है। प्रधानमंत्री ने 230,802 करोड़ रुपये से अधिक कीमत की परियोजनाओं का उद्घाटन/शिलान्यास किया है। रिपोर्ट के मुताबिक सरकार ने हिट एंड रन यानी मार कर भाग जाने वाले अपराध में पीड़ितों के लिए मुआवजा भी बढ़ा दिया है। रिपोर्ट को पढ़ें तो लगेगा कि देश कितने चिकने, साफ-सुथरे रास्ते पर चलते हुए विकास की ओर बढ़ रहा है। सरकारें दावा भी तो ऐसा ही करती हैं। भारत के शहरों को शंघाई, टोक्यो, न्यूयार्क जैसा बना देने के कितने सपने लोगों को दिखाई गए हैं। अभी इस साल की शुरूआत में ही मध्यप्रदेश में 6,800 करोड़ रुपये की परियोजनाओं का उद्घाटन करते हुए केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि वर्ष 2024 तक राज्य में जिस तरह की सड़कों का जाल विकसित किया जा रहा है वो अमेरिका की सड़कों से भी बेहतर होंगी। श्री गडकरी अगले साल तक अमेरिका जैसी सड़कों के ख्वाब दिखा रहे हैं, लेकिन मुख्यमंत्री श्री चौहान ने तो 2018 में ही कह दिया था कि मध्य प्रदेश की सड़कें अमेरिका से कम नहीं हैं। अब जनता समझ ले कि अमेरिका के नाम पर किस तरह उसे मूर्ख बनाया जा रहा है। वैसे जब शिवराज सिंह चौहान ने मध्यप्रदेश की सड़कों को अमेरिका से बेहतर बताया था, उसके कुछ दिनों बाद एक ट्वीट उन्होंने मिशन इंद्रधनुष के अंतर्गत शतप्रतिशत टीकाकरण के दावे का किया था और लिखा था कि छतरपुर के तीन गांवों तक सड़कें न होने से टीम 10 किमी पैदल, नाव से जंगल व अन्य बाधाओं को पार कर पहुंची।

दिल्ली पर सुप्रीम कोर्ट का सर्वसम्मत फैसला

डॉ. ज्ञान पाठक

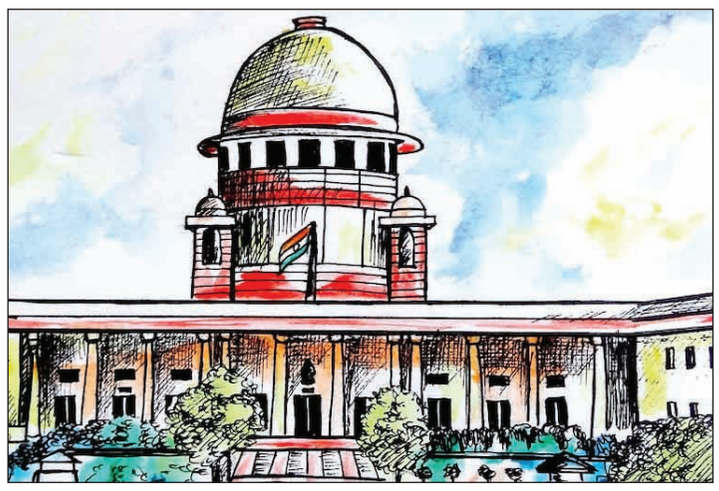

भारत के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ के नेतृत्व वाली पांच-न्यायाधीशों की सुप्रीम कोर्ट की बेंच, जिसमें जस्टिस एमआर शाह, कृष्ण मुरारी, हेमा कोहली और पी एस नरसिम्हा शामिल हैं, ने स्पष्ट रूप से कहा है कि केंद्र राज्यों के शासन और वास्तविक शक्ति को अपने हाथ में नहीं ले सकता है। ये शक्तियां राज्य की चुनी हुई सरकार के साथ रहनी चाहिए। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की निर्वाचित सरकार और राज्य की शक्तियों को हड़पने के केंद्र के कदमों के बीच दिल्ली में सत्ता संघर्ष पर भारत के सर्वोच्च न्यायालय की पांच-न्यायाधीशों की संवैधानिक पीठ द्वारा ११ मई को दिया गया सर्वसम्मत फैसला देश के लिए महत्वपूर्ण है, विशेषकर इसलिए कि केंद्र की मोदी सरकार पर राज्यों की शक्तियों का अतिक्रमण कर देश के संवैधानिक संघवाद को नष्ट करने का आरोप लगाया गया है। भारत के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ के नेतृत्व वाली पांच-न्यायाधीशों की सुप्रीम कोर्ट की बेंच, जिसमें जस्टिस एमआर शाह, कृष्ण मुरारी, हेमा कोहली और पी एस नरसिम्हा शामिल हैं, ने स्पष्ट रूप से कहा है कि केंद्र राज्यों के शासन और वास्तविक शक्ति को अपने हाथ में नहीं ले सकता है। ये शक्तियां राज्य की चुनी हुई सरकार के साथ रहनी चाहिए। बेंच ने यह फैसला इस मुद्दे पर दिया कि देश की राजधानी दिल्ली में सिविल सेवकों के ट्रांसफर और पोस्टिंग पर केंद्र सरकार का प्रशासनिक नियंत्रण है या दिल्ली सरकार का। हालांकि आप ने दावा किया है कि यह उनकी पार्टी के लिए एक बड़ी जीत है, लेकिन वास्तव में इसका असर उन सभी राज्यों पर पड़ेगा जहां गैर-भाजपा राजनीतिक दलों का शासन है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र की भाजपा सरकार द्वारा हस्तक्षेप करने का आरोप लगाया जाता रहा है। राज्य आरोप लगाते रहे हैं कि केंद्र कई केंद्र प्रायोजित योजनाओं के माध्यम से राजनीति कर रहा है और न केवल समवर्ती सूची के विषयों में बल्कि उन विषयों में भी हस्तक्षेप कर रहा है जो विशेष रूप से राज्य सूची या पंचायती राज के तहत विभागों में हैं। सुप्रीम कोर्ट ने राष्ट्रीय राजधानी में प्रशासनिक सेवाओं पर दिल्ली सरकार के नियंत्रण के पक्ष में फैसला सुनाया है और माना है कि नौकरशाहों पर उसका नियंत्रण होना चाहिए। फैसले में यह भी माना गया है कि यदि प्रशासनिक सेवाओं को विधायी और कार्यकारी डोमेन से बाहर रखा गया, तो मंत्रियों को उन सिविल सेवकों को नियंत्रित करने की प्रक्रिया से ही बाहर रखा जाना होगा जिन्हें कार्यकारी निर्णयों को लागू करना है। दिल्ली के मामले में, सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि सेवाओं पर नियंत्रण सार्वजनिक व्यवस्था, पुलिस और भूमि से संबंधित प्रविष्टियों को छोड़ अन्य सभी तक विस्तारित होगा। अन्य राज्यों के समान दिल्ली सरकार भी सरकार के प्रतिनिधि रूप में ही प्रतिनिधित्व करती है और इसलिए संघ की शक्ति का कोई और विस्तार देश की संविधान योजना के विपरीत होगा। इसके अलावा, यदि अधिकारी मंत्रियों को रिपोर्ट करना बंद कर देते हैं या उनके निदेर्शों का पालन नहीं करते हैं, तो सामूहिक उत्तरदायित्व का सिद्धांत प्रभावित होता है। संवैधानिक पीठ ने फैसला सुनाया है कि एलजी के पास केंद्र शासित प्रदेश दिल्ली से संबंधित सभी मुद्दों पर प्रशासनिक पर्यवेक्षण नहीं हो सकता है, और कहा कि एलजी की शक्तियां उन्हें दिल्ली विधानसभा और निर्वाचित सरकार की विधायी शक्तियों में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं देती हैं। यह एक महत्वपूर्ण निर्णय है क्योंकि कई विपक्षी शासित राज्यों को अपने राज्यपालों के साथ समस्या है, जो केंद्र द्वारा नियुक्त किये गये हैं। राज्यों के पास भी शक्ति है, बेंच ने कहा, लेकिन राज्य की कार्यकारी शक्ति संघ के मौजूदा कानून के अधीन होगी। यह सुनिश्चित करना होगा कि राज्यों का शासन भारत संघ द्वारा अपने हाथ में न ले लिया जाये। फैसले में कहा गया है कि लोकतंत्र और संघवाद का सिद्धांत संविधान की बुनियादी संरचना का एक हिस्सा है, जो विविध हितों के अस्तित्व को सुनिश्चित करता है और विविध आवश्यकताओं को समायोजित करता है। मई २०१४ में नरेंद्र मोदी के देश के प्रधानमंत्री बनने के बाद से एनसीटी दिल्ली भाजपा और आप के बीच सत्ता संघर्ष का शिकार रही है। उस समय दिल्ली में राष्ट्रपति शासन था, जब अरविंद केजरीवाल ने १४ फरवरी, २०१४ को इस्तीफा दे दिया था अपने प्रस्तावित भ्रष्टाचार विरोधी कानून के लिए समर्थन जुटाने में असमर्थता के कारण,केवल ४९ दिनों के लिए राज्य पर शासन करने के बाद। परन्तु जब २०१५ में विधान सभा के चुनाव हुए तो केजरीवाल के नेतृत्व वाली आप ने ७० में से ६७ सीटें जीतकर भाजपा को अपमानजनक हार दी। भाजपा केवल ३ सीटें जीत सकी। केंद्र की मोदी सरकार इस हार को टाल नहीं पाई और उपराज्यपाल के माध्यम से चुनी हुई दिल्ली सरकार के कामकाज में हर तरह की बाधा डालने लगी। इस प्रकार दिल्ली सरकार और उपराज्यपाल के बीच टकराव शुरू हुआ, जो बाद में २०१८ में और बढ़ गया, जिसने आप सरकार को यह तर्क देते हुए अदालत जाने के लिए प्रेरित किया कि उसके फैसलों को उपराज्यपाल (एलजी) द्वारा लगातार ओवरराइड किया जा रहा था, जो दिल्ली में केंद्र के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करते हैं। इसके बाद यह मामला दिल्ली सरकार बनाम केंद्र के रूप में जाना जाने लगा, जिसमें सुप्रीम कोर्ट ने इस मुद्दे को सुलझा दिया है कि दिल्ली में प्रशासनिक सेवा को कौन नियंत्रित करता है - एक ऐसा सवाल जिसके कारण अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व वाली आप सरकार और एलजी के बीच वर्षों तक खींचतान चली। दिल्ली सरकार ने अदालत को बताया था कि नौकरशाहों की नियुक्तियों को रद्द कर दिया गया था, फाइलों को मंजूरी नहीं दी गयी थी और बुनियादी निर्णय लेने में बाधा उत्पन्न हुई थी। अगले साल २०१९ में अपने ऐतिहासिक फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि दिल्ली की चुनी हुई सरकार बॉस है। सर्वोच्च न्यायालय ने यह भी स्पष्ट किया था किभूमि, पुलिस और सार्वजनिक व्यवस्था से जुड़े मामलों को छोड़कर अन्य सभी मामलों में, उपराज्यपाल के पास भारत के संविधान के तहत च्चकोई स्वतंत्र निर्णय लेने की शक्ति नहीं है।

एलजी को निर्वाचित सरकार की सहायता और सलाह पर काम करना है और 'एक बाधावादी' के रूप में कार्य नहीं कर सकता है, सर्वोच्च न्यायालय ने कहा था, 'निरंकुशता के लिए कोई जगह नहीं है और अराजकतावाद के लिए भी कोई जगह नहीं है।' बाद में, सेवाओं सहित व्यक्तिगत पहलुओं से संबंधित अपीलों पर एक नियमित तीन जजों की पीठ का गठन किया गया, जिसने अपील सुनी और केंद्र के अनुरोध पर इस मामले को संविधान पीठ को भेज दिया। आप ने राज्य के २०२० के आम चुनाव में ६२ सीटें जीतकर फिर से जीत हासिल की थी, जबकि भाजपा को फिर से अपमानजनक हार का सामना करना पड़ा और वह ८ सीटों पर ही जीत हासिल कर सकी। भाजपा के नेतृत्व वाले केंद्र ने २०२१ में जीएनसीटीडी अधिनियम में संशोधन किया और दिल्ली की चुनी हुई सरकार के स्थान पर दिल्ली सरकार का अर्थ बदलकर 'लेफ्टिनेंट गवर्नर' कर दिया। इसके बाद मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व वाली दिल्ली सरकार के लिए ठीक से और स्वतंत्र रूप से काम करना असंभव हो गया क्योंकि उन्हें बड़े फैसले में एलजी की पूर्व अनुमति की आवश्यकता थी। चुनाव के बाद से प्रशासनिक सेवाएं, सबसे अधिक प्रभावित हुईं, कर्मचारियों और अधिकारियों को नियुक्त करने, स्थानांतरित करने और नियंत्रित करने की सरकार की शक्ति समाप्त हो गयी। २०२२ के एमसीडी चुनाव के बाद स्थिति और खराब हो गयी, जिसमें आप ने भाजपा के १५ साल के शासन को समाप्त कर दिया उसने एमसीडी चुनाव में शानदार जीत हासिल की। भाजपा ने मेयर के चुनाव में भी अड़ंगा लगाया, और कानूनी लड़ाई के बाद अप्रैल २०२३ में जाकर आप को अपना मेयर मिल सका। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने अक्सर शिकायत की थी कि वह केंद्र की अनुमति के बिना एक 'चपरासी' भी नियुक्त नहीं कर सकते थे और नौकरशाह उनकी सरकार के आदेशों का पालन नहीं करते थे क्योंकि उनका कैडर नियंत्रण प्राधिकरण केंद्रीय गृह मंत्रालय था। इस पृष्ठभूमि में ऐतिहासिक है, और इसलिए न केवल आप बल्कि पूरे विपक्ष द्वारा भी इसका जश्न मनाया जाना चाहिए।

राज्यपाल की भूमिका पर विचार का वक्त

महेश कुमार

गुरुवार को देश की सर्वोच्च न्यायालय ने दिल्ली और महाराष्ट्र की सरकारों को लेकर दो अहम फैसले सुनाए। दोनों मामले अलग-अलग प्रकृति के हैं, लेकिन शीर्ष अदालत के आदेश में लोकतंत्र और संवैधानिक प्रक्रिया की रक्षा की फिक्र झलकती है,साथ ही केंद्र पर काबिज भाजपा नीयत पर सवाल भी खड़े करती है। दिल्ली में निर्वाचित आम आदमी पार्टी की सरकार औ? उपराज्यपाल के बीच इस बात का विवाद था कि प्रशासनिक सेवाएं किसके नियंत्रण में रहेंगी। 2019 से यह मामला चल रहा था, जिस पर अब शीर्ष अदालत ने कहा है कि केंद्र द्वारा सभी विधायी शक्तियों को अपने हाथ में लेने से संघीय प्रणाली समाप्त हो जाती है। अगर चुनी हुई सरकार अधिकारियों को नियंत्रित नहीं कर सकती तो वो लोगों के लिए सामूहिक दायित्व का निर्वाह कैसे करेगी? अफसरों की ट्रांसफर पोस्टिंग पर दिल्ली सरकार का अधिकार है। चुनी हुई सरकार में उसी के पास प्रशासनिक व्यवस्था होनी चाहिए। इस आदेश और टिप्पणी से दिल्ली सरकार और उपराज्यपाल के बीच शक्ति संतुलन कायम कर दिया गया है। इससे भावी उलझनों को टाला जा सकेगा। अदालत का दूसरा अहम फैसला महाराष्ट्र को लेकर आया है, जिसके मुताबिक उद्धव ठाकरे को महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री के रूप में बहाल नहीं किया जा सकता है क्योंकि उन्होंने फ्लोर टेस्ट का सामना किए बिना स्वेच्छा से पद से इस्तीफा दे दिया था। मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को अपना पद और अपनी सरकार बनाए रखने का मौका मिलेगा। सुप्रीम कोर्ट ने उद्धव ठाकरे की सरकार को बहाल करने के अनुरोध को भी खारिज कर दिया क्योंकि ठाकरे ने विधानसभा में शक्ति परीक्षण का सामना करने के बजाय इस्तीफा देना चुना था। लेकिन अदालत ने यह भी कहा कि महाराष्ट्र के तत्कालीन राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी का फ्लोर टेस्ट के लिए बुलाने का फैसला, जिसने अंततः उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली एमवीए सरकार को गिरा दिया, कानून के अनुसार नहीं था। गौरतलब है कि महाराष्ट्र में शिवसेना, एनसीपी और कांग्रेस के गठबंधन की महाविकास अघाड़ी सरकार थी, जिसमें उद्धव ठाकरे मुख्यमंत्री थी। लेकिन पिछले साल 21 जून को शिवसेना में 16 विधायकों ने बगावत कर दी थी, एकनाथ शिंदे इस बगावत के नेता थे। 24 जून को शिव सेना ने इन 16 विधायकों की सदस्यता रद्द करने की मांग विधानसभा के तत्कालीन उपाध्यक्ष नरहरि जिरवाल से की थी। इन 16 विधायकों को नोटिस भेजा गया, लेकिन फिर उद्धव ठाकरे ने इस्तीफा दे दिया था। इसके बाद एकनाथ शिंदे के गुट ने भाजपा के साथ मिलकर सरकार बनाई। भाजपा के साथ सरकार बनाने से पहले बागी विधायकों को असम से लेकर गोवा तक खूब इधर-उधर घुमाया गया। जाहिर है सत्ता में आने के लिए सारी तिकड़में भिड़ाई गईं और इसमें तत्कालीन राज्यपाल की अहम भूमिका रही, जिन्होंने वास्तव में संवैधानिक दायित्वों की उपेक्षा करते हुए भाजपा के एजेंट की तरह काम किया। अदालत ने इस पर महत्वपूर्ण टिप्पणी की है। अदालत ने तत्कालीन राज्यपाल कोश्यारी को शिंदे गुट की मदद करने वाले फैसले लेने के लिए कड़ी निंदा करते हुए कहा कि उन्होंने यह निष्कर्ष निकालने में 'गलतीइ की थी कि उद्धव ठाकरे ने विधायकों के बहुमत का समर्थन खो दिया था। अदालत ने कहा कि राज्यपाल द्वारा विवेक का प्रयोग संविधान के अनुरूप नहीं था। अगर स्पीकर और सरकार अविश्वास प्रस्ताव को दरकिनार करते हैं, तो राज्यपाल को मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह के बिना फ्लोर टेस्ट के लिए बुलाना उचित होता।

अदालत ने एक महत्वपूर्ण बात और भी कही कि न तो संविधान और न ही कानून राज्यपाल को राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करने और अंतर-पार्टी या अंतर-पार्टी विवादों में भूमिका निभाने का अधिकार देता है। राज्यपाल ने जिन पत्रों पर भरोसा किया उनमें ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे यह संकेत मिले कि असंतुष्ट विधायक सरकार से समर्थन वापस लेना चाहते हैं। सर्वोच्च अदालत की यह टिप्पणी से भाजपा और तत्कालीन राज्यपाल कोश्यारी सवालों के दायरे में आते हैं। श्री कोश्यारी तो शिवाजी महाराज पर टिप्पणी से उठे विवाद के बाद राज्यपाल पद से इस्तीफा दे चुके हैं, वे इस पर क्या कहेंगे, यह पता नहीं। लेकिन हैरानी यह देखकर होती है कि अदालत से आए इस फैसले को भाजपा अपनी बड़ी जीत बता रही है। सिर्फ इसलिए क्योंकि उसकी सरकार बच गई है और अदालत ने मुख्यमंत्री शिंदे को अयोग्य नहीं ठहराया, उनसे उनका पद नहीं छीना। उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने इस आदेश पर कहा कि यह लोकतंत्र और लोकतांत्रिक प्रक्रिया की जीत है। हम सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिए गए फैसले से संतुष्ट हैं। वहीं शिंदे गुट के नेता राहुल रमेश शिवालय ने कहा कि महाराष्ट्र में शिंदे सरकार को यह बड़ी राहत है। अब प्रदेश को स्थिर सरकार मिलेगी। इन टिप्पणियों से साफ है कि भाजपा और शिंदे गुट को गलत तरीके से सत्ता हथियाने पर कोई पछतावा नहीं है। उन्हें बस सत्ता चाहिए और अदालत के आदेश से फिलहाल वो सुरक्षित हैं। उद्धव ठाकरे और उनके दल के बाकी लोग इस फैसले से निराश हो सकते हैं कि बात उनके हक में नहीं रही। उद्धव ठाकरे अगर इस्तीफा नहीं देते, तो शायद बाजी पलट सकती थी। लेकिन अब कम से कम भाजपा का असली चेहरा उजागर हो गया कि किस तरह संवैधानिक पदों का दुरुपयोग वह सत्ता के लिए कर रही है। देश में जितने गैरभाजपा शासित राज्य हैं, वहां राज्यपाल और निर्वाचित सरकारों के बीच अक्सर टकराव की खबरें आती रहती हैं, जिससे संविधान का अनादर होता है।

अब वक्त आ गया है कि देश के सभी राजनीतिक दल इस बात पर मंथन करें कि आईंदा कोई राज्यपाल केंद्र के एजेंट के तौर पर काम न करे। लोकतंत्र की मजबूती इसी में है कि जनादेश का सम्मान हर हाल में हो।

इमरान खान की गिरफ्तारी से संकट में पाक

गौरव सिंह

भारत के पड़ोसी देश पाकिस्तान में इस वक्त गृहयुद्ध जैसे हालात बन रहे हैं। मंगलवार को पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को नेशनल अकाउंटिबिलिटी ब्यूरो (नैब) ने भ्रष्टाचार के आरोप में गिरफ्तार किया है। वैसे तो इमरान खान पर कुल 83 एफआईआर विभिन्न मामलों में दर्ज है, जिनमें महिला जज को धमकी देना, बतौर प्रधानमंत्री मिले तोहफों को तोशाखाने में जमा न करना आदि शामिल हैं। लेकिन अभी इमरान खान को अल कादिर यूनिवर्सिटी ट्रस्ट में कदाचार करने के जुर्म में नैब ने गिरफ्तार किया है। कहा जा रहा है कि कई नोटिस दिए जाने के बावजूद इमरान खान पेश नहीं हुए, तो उन्हें गिरफ्तार किया गया। हालांकि जिस तरह से इमरान खान की गिरफ्तारी हुई है, उस पर उनके समर्थक सवाल उठा रहे हैं। बताया जा रहा है कि इमरान खान किसी अन्य मामले में जमानत के लिए हाईकोर्ट गए थे, लेकिन उन्हें वहां अप्रत्याशित तरीके से गिरफ्तार किया गया। इमरान खान की पार्टी पाकिस्तान तहरीके इंसाफ के नेताओं ने इस गिरफ्तारी को अपहरण करार दिया है। आरोप है कि इमरान खान के साथ हिंसा भी हुई, हालांकि नैब ने ऐसे किसी आरोप से इंकार किया है। पिछले साल इमरान खान को सत्ता से हटाया गया था और तब से उन पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप मौजूदा शाहबाज शरीफ की सरकार ने लगाए हैं। लेकिन उन्हें गिरफ्तार नहीं किया गया था और इस दौरान सत्ता से हटने के बावजूद इमरान खान सरकार के लिए लगातार चुनौती खड़ी कर रहे थे। उनके समर्थकों की बड़ी तादाद है और उन्हीं के दम पर इमरान खान फिर से सत्ता में वापसी की उम्मीदें लगाए बैठे थे। वे लगातार अपनी सत्ता से बेदखली को गलत बताते हुए निष्पक्ष चुनाव की मांग कर रहे थे। लेकिन शरीफ सरकार ने चुनावों की कोई पहल नहीं की। बल्कि अब इमरान खान को गिरफ्तार कर उनके राजनैतिक भविष्य को पूरी तरह खत्म करने की तैयारियां दिख रही हैं। दरअसल इमरान खान इस समय अपनी लोकप्रियता के शिखर पर हैं और सरकार को लगता है कि खान अगर कुछ दिनों तक जेल में रहेंगे तो उनकी लोकप्रियता में कमी आएगी। इधर सेना से भी इमरान खान के रिश्ते बीते दिनों खराब हो गए हैं। इसलिए अगर इमरान खान चुनाव जीतकर फिर से प्रधानमंत्री बन जाते हैं तो सेना के लिए बहुत परेशानी हो जाएगी। इसलिए सरकार और सेना की कोशिश है कि इमरान खान को जेल में बंद करके चुनाव करवाएं जाएं। क्योंकि तब उनके जीतने की संभावनाएं कम रहेंगी। 2018 में नवाज शरीफ को भी जेल में बंद करके चुनाव करवाया गया था, और इसका नुकसान उन्हें हुआ था। शरीफ सरकार चुनाव कब करवाती है और इससे किसे फायदा और किसे नुकसान होता है, ये तो बाद की बात है। लेकिन अभी शरीफ सरकार के लिए चौतरफा मुश्किलें खड़ी हो रही हैं। इमरान खान की गिरफ्तारी पर उनके समर्थक देश भर में हिंसक प्रदर्शन तो कर ही रहे हैं, पाकिस्तानी सेना भी उनके निशाने पर आ गई है। कई जगह सेना के ठिकानों को आग के हवाले कर दिया गया है। पाकिस्तानी सेना के मुख्यालय में भी इमरान खान समर्थक घुस गए और तोड़फोड़ की है। पाकिस्तानी का सियासी इतिहास इस बात का गवाह है कि वहां निर्वाचित सरकारें भी सेना की बैसाखी के बिना कदम नहीं बढ़ा सकती हैं। ऐसे में इमरान खान ने सीधे सेना से मुठभेड़ कर ली है। अगर सेना कमजोर दिखी तो शरीफ सरकार की मुश्किल और बढ़ेगी। सरकार पहले ही पाकिस्तान के आर्थिक संकट की वजह से फंसी हुई है। पिछले साल सत्ता संभालने पर शहबाज शरीफ ने सबसे बड़ा वादा किया था कि वो पाकिस्तान को मौजूदा आर्थिक स्थिति से बाहर निकालेंगे। लेकिन अभी हालात इतने बदतर हैं कि लोग दाने-दाने को मोहताज हो रहे हैं। एक डॉलर की कीमत 285 पाकिस्तानी रुपए हो गई है, ब्याज की दर में 9.5 प्रतिशत की रिकॉर्ड वृद्धि दर्ज की गई है, पेट्रोल और डीजल की कीमत में लगभग 150 रुपए की बढ़ोतरी हुई है, देश का मुद्रा भंडार 10.5 अरब डॉलर से घटकर करीब 4.2 अरब डॉलर हो गया है।

अपने ही प्रधानमंत्रियों का दुश्मन पाक

आर.के. सिन्हा

पाकिस्तान में पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की गिरफ्तारी पर हैरान होने की जरूरत नहीं है। हालांकि वह रिहा हो चुके हैं। पाकिस्तान में इमरान से पहले भी कई प्रधानमंत्रियों को जेल की हवा खानी पड़ी है। सबसे पहले 1960 में सैनिक तानाशाह अयूब खान ने प्रधानमंत्री हुसैन शहीद सुहरावर्दी को जेल भेजा था। सुहारावर्दी देश के विभाजन से पहले बंगाल राज्य के प्रधानमंत्री थे। तब किसी राज्य के मुखिया को प्रधानमंत्री ही कहा जाता था। जब 1946 में जिन्ना के डायरेक्ट एक्शन के आह्वान के बाद कोलकाता में हिंसा भड़की तब सुहारावर्दी ही बंगाल के प्रधानमंत्री थे। कहते हैं कि उन्होंने हिन्दुओं के खिलाफ हिंसा को रुकवाने की कोई चेष्टा नहीं की थी। हिंसा को हवा जरूर दी। खैर, उनके बाद जुल्फिकार भुट्टो को जालंधर में पैदा हुए जिया उल हक ने जेल भेजा। उसके बाद भुट्टो को फांसी भी हुई। भुट्टो के बाद उनकी बेटी बेनजीर भुट्टो को भी जेल जाना पड़ा। फिर उनकी हत्या भी हुई। नवाज शरीफ और शाहिद अब्बासी ने भी प्रधानमंत्री के रूप में जेल की सलाखों के पीछे वक्त बिताया है। यही पाकिस्तान का चरित्र है। वहां पर निर्वाचित प्रधानमंत्रियों को पद से हटाने और गिरफ्तारकिये जाने की परंपरा पुरानी है। हां, इमरान खान की गिरफ्तारी के बाद पाकिस्तान जिस तरह से जलने लगा है, उस तरह के हालात पहले कभी देखने में नहीं आये। इस लिहाज से इमरान खान की गिरफ्तारी थोड़ी अलग जरूर है। इमरान खान को करप्शन के आरोपों में जेल में डालने के कारण पाकिस्तान जलने लगा है।

सारे देश का गुस्सा इमरान खान के सियासी शत्रुओं से ज्यादा सेना पर है। अवाम का कहना है कि पाकिस्तान को कभी पटरी पर आने ही नहीं दिया सेना ने। उसने देश में जम्हूरियत की जड़ों को मजबूत नहीं होने दिया। यह पाकिस्तान की जनता की सोच में बहुत बड़े बदलाव का संकेत भी है। एक दौर में पाकिस्तान की अवाम अपनी सेना के लिए जां निसार करती थी। पर अब उसे जन्नत की हकीकत समझ आने लगी है। उसके सामने सच्चाई आ गई है।

उसे पता चल गया है कि सेना के पूर्वी पाकिस्तान में कत्लेआम के कारण पूर्वी पाकिस्तान बांग्लादेश बना। उसे समझ आ गया है कि सेना ने अकारण भारत पर 1965 और फिर 1971 में हमले किए और फिर मुंह की खाई।

एक-दूसरे पर फोड़ रहे हार का ठीकरा

कयासबाजियों पर लगा विराम

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। निकाय चुनाव परिणाम आने पर जिले में कहीं खुशी-कहीं गम का आलम रहा। जीत की खुशी में जहां जमकर पी गई, वहीं हार का गम भी लोगों ने दारू के साथ मनाया। ऐसे लोगों की भीड़ शराब की दुकानों के आसपास देर रात तक लगी रही। लोग अपने हार का ठीकरा एक-दूसरे पर फोड़ते नजर आये।

निकाय चुनाव के नतीजे आने के बाद रोज-रोज की कयासबाजी दूर हो गई। हालांकि अध्यक्ष पद पर पहले ही तस्वीर खासी साफ नजर आ रही थी। इसके बावजूद अन्य प्रत्याशियों के दावों के चलते क्षणिक तस्वीर अवश्य धुंधली हुई थी। इस धुंधली तस्वीर के बाद सट्टेबाजों ने भाजपा प्रत्याशी नरेन्द्र गुप्ता पर ही मोटी बाजी लगा रखी थी। वह लोग आज खासे खुश नजर आ रहे हैं।

सर्वाधिक खुशी का आलम भाजपा प्रत्याशी नरेन्द्र गुप्ता के खेमे में ही नजर आ रहा है, वहीं हार का गम मना रहे सपा व निर्दल निशी सोनी व बसपा प्रत्याशी कुशल सिंह पटेल हार का ठीकरा एक-दूसरे पर फोड़ रहे हैं, फोड़ें भी क्यों न, भाजपा प्रत्याशी नरेन्द्र गुप्ता की जीत का अन्तर ज्यादा है। भाजपाई खेमे में भारी खुशी छायी है। यही हाल सदस्य पदों के प्रत्याशियों के भी है। एक-दूसरे पर दोषारोपण कर आत्मसंतोष कर रहे हैं। सदस्य पद के जीते समर्थकों के बीच खासी रौनक भले है, किन्तु इनके साथ कहीं-कहीं हारे प्रत्याशी भी पीने-पिलाने के दौर में साथ दे रहे हैं। ऐसे में शराब की दुकानों पर देर रात तक जमघट लगा रहा। बहरहाल कुछ भी हो, सभी कयासबाजियों का दौर फिलहाल लोकसभा चुनाव तक थम गया है। अब सिर्फ यही कयासबाजी रह गई है कि लोकसभा में किस दल से किसे टिकट मिलेगा।

कानपुर : गोविंद नगर में शांतिपूर्ण निकाय चुनाव कराने में सफल हुई पुलिस की सक्रियता

कानपुर। बहुत चुनौतीपूर्ण माने जाने वाले गोविंद नगर थाना क्षेत्र में भी निकाय चुनाव को शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न कराने में सफलता प्राप्त कर ली गई क

इसमें इंस्पेक्टर धनंजय पांडे की परिश्रम पूर्ण सक्रियता का भी बहुत अहम रोल रहा। इसके पहले वह लोगों को निर्भय होकर मतदान करने के लिए भी प्रेरित करते रहे ,जिसके फलस्वरूप मतदाता बड़ी संख्या में मतदान करने केंद्रों पर भी पहुंचे।

चुनौतीपूर्ण निकाय चुनाव को निष्पक्ष और शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न कराने में सफल गोविंद नगर के तेजतर्रार और व्यवहार कुशल इंस्पेक्टर धनंजय पांडेय की जनहित में कार्यशैली भी बहुत लोकप्रिय मानी जाती है`

मसलन जो भी पीड़ित थाने आता है, वह उसके लिए तब तक जुटे रहते हैं। जब तक उसकी शिकायत का संतोषजनक निस्तारण नहीं हो जाता।

फिलहाल पीड़ितों की तत्काल सहायता और अपराधियों के खिलाफ प्रभावी कार्यवाही के लिए भी चर्चित निष्पक्ष और पारदर्शी कार्यशैली के गोविंद नगर के जुझारू तेवरों वाले इंस्पेक्टर धनंजय कुमार पांडेय के बारे में यह भी अवगत कराते चलें निर्दोष फंसे नहीं और अपराधी बचे नहीं जैसी लोकहित की विचारधारा के अनुरूप अपने कर्तव्य का पालन पूरी निष्ठा और ईमानदारी से करने वाले सरल और शालीन स्वभाव के कठोर परिश्रमी धनंजय कुमार पांडेय की इंस्पेक्टर गोविंद नगर के रुप में उनकी नियुक्ति को कानून और शांति व्यवस्था के पक्ष में अपराधियों के खिलाफ और पीड़ितों के हित में अपने कर्तव्य का पालन सदैव निष्ठा और ईमानदारी के साथ करना ही माना जा रहा है। यही नहीं इसके पहले भी वह जहां भी पोस्ट रहे हैं, वहां भी वह अपराधियों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाही और पीड़ितों की हर सम्भव तत्काल सहायता को लेकर भी लोगों के बीच सराहनीय चर्चा का विषय रहे हैं।

इसी के साथ अपनी जुझारू नौकरी के अबतक के कार्यकाल में इसके पहले भी सभी संगीन घटनाओं का सटीक खुलासा करते हुए हर तरह के शातिर अपराधी अराजक तत्वों को भी भरपूर सबक सिखा चुके इंस्पेक्टर धनंजय कुमार पांडेय के यूपी पुलिस की सेवा के अबतक के कार्यकाल के विवेचन से यह भी साबित होता है कि हालात चाहे जैसे रहे हों लेकिन अपराधियों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाही और पीड़ितों की तत्काल सहायता के लिए भी चर्चित इंस्पेक्टर धनंजय ने अपनी कर्तव्य के प्रति निष्ठा के साथ समझौता आज तक नहीं किया। यही वजह है कि उनकी जुझारू नौकरी के अबतक के कार्यकाल में सभी संगीन घटनाओं का सटीक खुलासा करते हुए दर्जनों शातिरों को सबक सिखाने में मिली सफलता से क्षेत्र के अन्य अपराधी अराजक तत्वों में दहशत उन्हें क्षेत्रीय जनता के बीच लगातार लोकप्रिय भी बनाये हुए है।

बैलट बॉक्स से निकला सियासी सन्देश दूर तलक जाएगा

कन्नौज। सत्ता के गलियारे में हाई प्रोफाइल जिले में शुमार कन्नौज की सियासी परीक्षा अब शुरू हुई है। वोटर ने तो अपना फैसला सुना दिया है। वोटर ने किस नेता की सुनी और किसकी अनदेखी की इसका फैसला कल होने जा रही वोटों की गिनती में साफ हो जाएगा। नतीजों से न सिर्फ यहां की सियासी फिजा की तस्वीर साफ होगी, बल्कि सियासी चेहरों की हैसियत और कद भी तय होगा।

कभी समाजवादी पार्टी के गढ़ रहे कन्नौज में अब भाजपा का कब्जा है। लोकसभा चुनाव और विधानसभा चुनाव में सपा को पटखनी देकर क्लीन स्वीप करने वाली भाजपा ने पंचायत चुनाव के दौरान ब्लॉक प्रमुख और जिला पंचायत अध्यक्ष की कुर्सी भी लपक ली थी। अब बारी निकाय चुनाव की है। चूंकि वोटरों ने अपना फैसला सुना दिया है। उन्हें किसके नसीब पर अपनी रजमंदी का ठप्पा लगा है।

यह तो बैलेट बॉक्स में कैद हो गया है, लेकिन यह तय है कि 13 मई को जब पिटारा खुलेगा, तो उसमें से निकलने वाला सियासी संदेश सूबे की राजधानी लखनऊ और देश की राजधानी दिल्ली तक जाएगा। किस नेता का कितना जादू वोटर पर चला या किस नेता की बातों और वादों को जनता ने नकार दिया इससे भी बहुत कुछ साफ होगा। लोकसभा चुनाव से ठीक एक साल पहले के इस सियासी परीक्षा में पास होने के लिए नेता भी प्रार्थना कर रहे हैं।

पिछले चुनाव में जिले में भाजपा बहुत ज्यादा कमाल नहीं कर सकी थी। छिबरामऊ नगर पालिका और सौरिख नगर पंचायत में ही उसके टिकट पर खड़े हुए उम्मीदवारों को जीत मिली थी। सदर में भाजपा की काफी किरकिरी हुई थी। 2012 में सदर सीट जीतने वाली भाजपा सूबे की सत्ता में होते हुए भी 2017 में सदर सीट पर चौथे नंबर पर रही थी।

बसपा को गुरसहायगंज नगर पालिका और समधन नगर पंचायत में कामयाबी मिली थी। सपा का किसी सीट पर खाता नहीं खुला था। कन्नौज, तालग्राम, सिकंदरपुर, तिर्वा में निर्दलीय उम्मीदवारों ने सियासी पार्टियों को पटखनी देकर जीत हासिल की थी। अब इस बार जनता ने क्या संदेश दिया है, यह 13 मई को साफ होगा। साथ ही राजनैतिक पार्टियों का भविष्य भी तय होगा ।

जिले की आठ सीटों में से सदर नगर पालिका की सीट पर खूब सियासी गदर हुआ। यहां एक-दूसरे से आगे निकलने के लिए सियासी पार्टियों ने खूब तिकड़म किया। इस सीट पर कब्जे के लिए भाजपा ने अपने ही गुट से छिटके निर्दलीय उम्मीदवार को वोटिंग से ठीक 24 घंटे पहले अपने पाले में करके बढ़त लेने की कोशिश की लेकिन इस कोशिश में वो कामयाब नही हो पाई और अब बसपा के साथ साथ उसकी टक्कर इस निर्दलीय से भी होती दिख रही है।

सियासी जानकार यह भी कह रहे हैं कि कन्नौज नगर पालिका के नई परिसीमन के तहत नए इलाकों के शामिल होने से कईयों का समीकरण ही गड़बड़ा गया है। नए इलाकों के वोटर का साथ हासिल करने के लिए कोशिश सभी ने की, लेकिन वहां से निकले सियासी संदेश ने कईयों के चेहरे की हवाईयां उड़ा रखी हैं।

16 हज यात्रियों को जिला ट्रेनर ने दी ट्रेनिंग

गुलशन-ए-रजा-मुस्तफा कमेटी के सदर ने दी शुभकानायें

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। एक दिनी हज तरबियत प्रोग्राम जिला मुख्यालय तरौंहा में किया गया। जिला हज टेज्नर हाजी गुलाम मुस्तफा ने हवाई जहाज से लेकर मक्का मौज्जमी और मदीना मुनव्वरा जाने वाले यात्रियों को वहां अदा किये जाने वाले अरकान की बाबत जानकारी दी।

शनिवार को जिला मुख्यालय तरौंहा में जिला हज टेज्नर हाजी गुलाम मुस्तफा ने हज यात्रियों को एहराम पहनना सिखाया, मिनी, मुदल्फा, अराफात व जमरात में इबादत को लेकर तफसील से जानकारी दी। औरतों और मर्दों को अलग-अलग ढंग से शर्तें बताई। हवाई जहाज में सामान ले जाने के बारे में विस्तार से जानकारी दी। बीस-बीस किलो के दो सूटकेस व सात किलो वजन का हैंडबैग ले जाने की इजाजत है। इस कार्यक्रम को गुलशन-ए-रजा-ए-मुस्तफा कमेटी के जानिब से कार्यक्रम हुआ। कमेटी के मेम्बर जावेद खान, मोइनउद्दीन, इरफान खान, गुलाब ठेकेदार, जाहिद हुसैन संजरी, अयूब खान, अमजद शेख, अदनान

खां, कादिर भाई, भोला भाई, नूर मोहम्मद गोल्डी, हाजी इस्त्याक बाबू, फहीम राईन, जनाब हाजी अब्दुल जलील, हाजी हैदर अली, मुस्ताक अहमद खां, हाजी डॉ अफसर उल्ला खां, हाजी सैयद अख्तर फराज व कमेटी के सदर जनाब हाजी रज्जन अली व कमेटी के मेम्बर मौजूद रहे। कार्यक्रम की शुरूवात मौलाना उबैद साहब ने कुरान की तिलावत से की। हज में क्या-क्या करना है जरूरी बातों को अपनी तकरीर में बताया। हज में क्या-क्या जरूरी है, इस बारे में भी जानकारी दी। जिले से 13 लोग हज में जाने को मौजूद रहे। जिनमें असलम हुसैन, नफीसा, अहमद, नफीसा, इशरत, आस्मा, हामिद, सलमा, नसीमुननिशा, मो असलम, सबीहा, अबरार, बिलकीस मौजूद रहे। इसके अलावा मौदहा हमीरपुर से एक कवी-चित्रकूट से 13 व बदौसा बांदा से दो लोग शामिल रहे। अंत में गुलशन-ए-रजा-मुस्तफा कमेटी के जनाब हाजी रज्जन अली ने मौजूद हाजियों को शुभकामनायें दी।

जिले में लहरा गया योगी का भगवा

सभी के केन्द्रबिन्दु में रहे विजयी प्रत्याशी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। नगर निकाय चुनाव की समाप्ति के बाद अब हार-जीत का विश्लेषण लोग घर-घर कर रहे हैं। किसको किस बूथ से कितने मत मिले अथवा कौन प्रत्याशी कहां से हारा व जीता, इसकी चर्चा हो रही है। चक्रवार गिनती के दौरान भी एजेण्ट व समर्थक भी इसकी गणित लगाते रहे।

नगर पालिका कर्वी अध्यक्ष पद के 11 दावेदारों में भाजपा प्रत्याशी नरेन्द्र गुप्ता 5145 मतों से सपा प्रत्याशी जागेश्वर यादव से शाम साढे पांच बजे तक आगे चल रहे हैं। नरेन्द्र गुप्ता की जीत लगभग तय है। खासा रोचक रहा मुख्यालय की नगर पालिका के चुनाव में सभी के आंकलन जहां

पूरी तरह ध्वस्त नजर आये। तीनों विजयी प्रत्याशियों से सभी प्रत्याशी लड़ते नजर आये। जिस तरह से कर्वी नगर पालिका में सभी प्रत्याशियों के केन्द्र बिन्दु में नरेन्द्र गुप्ता रहे हैं। मानिकपुर नगर पंचायत की सीट में निर्दल रानी देवी कोल के साथ लगे पूर्व चेयरमैन विनोद द्विवेदी भी सभी 12 प्रत्याशियों के केन्द्र बिन्दु में रहे हैं। यहां खड़े ज्यादातर प्रत्याशियों ने मतदान के पहले ही हाथ खड़े कर कहा था कि विनोद द्विवेदी ने चुनाव में उतरकर अच्छे-अच्छों की गणित बिगाड़ दी है। कुल मिलाकर ये आंकलन शत-प्रतिशत खरा साबित हुआ है। इस बात को विजयी प्रत्याशी नरेन्द्र गुप्ता, रानी देवी कोल के समर्थक विनोद द्विवेदी व राजापुर नगर पंचायत अध्यक्ष पद पर विजयी संजीव मिश्रा व मऊ नगर पंचायत अध्यक्ष पद पर विजयी अमित द्विवेदी समेत पराजित प्रत्याशी भी स्वीकार कर रहे हैं।

प्रशासन की सख्ती से मतगणना स्थल तक नहीं फटके आवांक्षित

बारीकी से देखभाल में लगे रहे सीडीओ-डीएम-एसपी भी रखे रहे नजर

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। निकाय चुनाव की मतगणना के दौरान किसी भी तरह की हिंसक झड़पें अथवा नोंकझोंक न हो, इसके लिए जिला प्रशासन ने खासी सख्ती बरती है। मतगणना स्थल पर भारी तादाद में पुलिस व पीएसी बल लगाने के साथ आला अधिकारी खुद मौके पर डटे रहे। इससे कोई भी आवांक्षित तत्व मतगणना स्थल तक नहीं फटक सका। यहां तक कि नतीजों की गड्डियों को पत्रकार तक नहीं देख सके। चुनाव आयोग के निर्देश पर कोई भी विजयी प्रत्याशी जुलूस नहीं निकाल सका। कुछेक वार्ड मेम्बरों ने अवश्य आयोग के निर्देश का उल्लंघन किया है।

मतगणना के दौरान प्रशासन की सख्ती इस बार अन्य चुनाव की अपेक्षा कुछ ज्यादा नजर आई। मतगणना स्थल के बाहर भारी पुलिस व पीएसी बल होने के बावजूद प्रत्याशियों के हजारों समर्थक बाहर मौजूद रहे। सभी में नतीजे जानने की उत्सुकता देखी गई। बिना पास के किसी को मतगणना स्थल के अन्दर प्रवेश नहीं करने दिया गया। ऐसे में प्रत्याशियों के एजेण्ट एक बार अन्दर गये तो परिणाम पूरे होने के बाद ही बाहर निकल सके। बीच में निकलने वाले को दुबारा अन्दर नहीं जाने दिया गया। पत्रकारों की आवाजाही में कोई पाबन्दी नहीं रही।

प्रशासन की इस चैकस व्यवस्था से मतगणना स्थल पर मौजूद एजेण्टों के बीच भी नोंकझोंक व झड़पें नहीं हो सकीं, क्योंकि अन्दर भी भारी पुलिस बल मुस्तैद रहा। किसी भी तरह की चूं-चपड़ करने वाले से निपटने को पुलिस जवान लगे रहे। मतगणना कार्य की बारीकी से देखभाल को पूरे समय सीडीओ अमृतपाल कौर, अपर जिलाधिकारी कुंवर बहादुर सिंह, एएसपी चकपाणि त्रिपाठी, सीओ सिटी हर्ष पाण्डेय के अलावा सशस्त्र पुलिस व पीएसी जवान लगे रहे। डीएम अभिषेक आनन्द व पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला चारों सीटों पर पैनी नजर रखे रहे।

कर्वी नगर पालिका परिषद के पहले चरण में प्रत्याशियों को मिले मत

अखंड भारत संदेश

बसपा कुशल सिंह पटेल- 866, सपा जागेश्वर यादव- 2310, भाजपा नरेन्द्र गुप्ता- 3622, निर्दल निशी सोनी- 1320

कर्वी नगर पालिका परिषद के दूसरे चरण में प्रत्याशियों को मिले मत-

बसपा- 967, सपा- 4842, भाजपा- 6786, निर्दल निशी सोनी- 2631

भाजपा प्रत्याशी नरेन्द्र गुप्ता सपा प्रत्याशी से 9793 मतों से आगे

तीसरे राउंड में बीजेपी- 13906, सपा- 8761, बसपा- 3414, निर्दल निशी सोनी- 5161

कर्वी नगर पालिका फाइनल राउंड में कुल मिले मत- आप 1008, भाजपा 4095, सपा 6428, कांग्रेस 919, बसपा 3188। सपा ने कर्वी सीट 2333 मतों से जीती है। राजापुर से निर्दल प्रत्याशी श्रीमती आदर्श द्विवेदी व मानिकपुर से निर्दल विनोद द्विवेदी ने जीत हासिल की है।

दो के कब्जे से 43 क्वार्टर देशी शराब बरामद

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर अवैध शराब निर्माण एवं बिक्री की रोकथाम को जारी अभियान में पुलिस ने दो लोगों के कब्जे से 43 क्वार्टर देशी शराब बरामद की है।

शनिवार को कोतवाली कर्वी के दरोगा सदानन्द सिंह की टीम ने पप्पू पुत्र रामभाऊ निवासी हटवा थाना मऊ के कब्जे से 25 क्वार्टर देशी शराब समेत गिरफ्तार किया है। उसके खिलाफ कोतवाली कर्वी में आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया। टीम में दरोगा सदानन्द सिंह, सिपाही राहुल देव शामिल रहे।

इसी क्रम में पहाडी थाने के दरोगा रविकान्त राय की टीम ने सुनील पुत्र स्व मुन्नीलाल निवासी पहाड़ी के कब्जे से 18 क्वार्टर देशी शराब समेत गिरफ्तार किया है। उसके खिलाफ थाने में आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया है। टीम में दरोगा रविकान्त राय, सिपाही नरेन्द्र कुमार शामिल रहे।

प्रेक्षक के साथ डीएम-एसपी ने मतगणना का लिया जायजा, किसी प्रत्याशी को न हो परेशानी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। प्रेक्षक राजेश कुमार पांडेय, जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द व पुलिस अधीक्षक वृंदा शुक्ला ने नगर निकाय चुनाव की मतगणना की व्यवस्थाओं को देखा।

शनिवार को प्रेक्षक के साथ डीएम-एसपी ने नगर पालिका परिषद चित्रकूट धाम कर्वी के मतगणना स्थल चित्रकूट इंटर कॉलेज कर्वी, नगर पंचायत राजापुर के मतगणना स्थल तुलसी इंटर कॉलेज राजापुर का औचक निरीक्षण कर मतगणना की व्यवस्थाओं का जायजा लिया। जिलाधिकारी ने सभी रिटर्निंग ऑफिसर व सहायक रिटर्निंग ऑफीसरों से कहा कि राज्य निर्वाचन आयोग के दिए निदेर्शों के अनुसार मतगणना शांतिपूर्ण, निष्पक्ष ढंग से करायें। किसी भी प्रत्याशी को कोई समस्या नहीं होनी चाहिए।

इस मौके पर मुख्य विकास अधिकारी अमृतपाल कौर, अपर जिलाधिकारी कुंवर बहादुर सिंह, एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी, एसडीएम सदर राजबहादुर, सीओ सिटी हर्ष पांडेय, एसडीएम राजापुर प्रमोद कुमार झा, सीओ राजापुर शीतला प्रसाद पांडेय समेत अधिकारीगण मौजूद रहे।

कर्वी नगर पालिका समेत भाजपा ने तीन सीट पर मारी बाजी, मानिकपुर सीट निर्दल रानी देवी ने जीती

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। नगर पालिका कर्वी से भाजपा प्रत्याशी नरेन्द्र गुप्ता, नगर पंचायत मानिकपुर से निर्दल रानी कोल व नगर पंचायत राजापुर से भाजपा प्रत्याशी संजीव मिश्रा व नगर पंचायत मऊ से भाजपा प्रत्याशी अमित द्विवेदी ने जीत हासिल की है।

नगर पालिका कर्वी के बैलेट पेपर की मतगणना में पोस्टल बैलेट में सपा प्रत्याशी जागेश्वर यादव को 17 मत, भाजपा प्रत्याशी नरेन्द्र गुप्ता को छह, बसपा प्रत्याशी कुशल सिंह पटेल को दस, कांग्रेस प्रत्याशी निरंजन कुशवाहा को एक, निर्दल निशी सोनी को छह मत मिले। नगर पालिका परिषद अध्यक्ष पद के प्रत्याशी भाजपा नरेन्द्र गुप्ता ने 13906 मत पाकर सपा के जागेश्वर यादव 5145 मतों से हराया है। बीजेपी के नरेन्द्र गुप्ता पुनः नगर पालिका अध्यक्ष बने हैं।

मानिकपुर नगर पंचायत में निर्दल रानी देवी को पूर्व चेयरमैन विनोद द्विवेदी ने चुनाव जितवाने में अहम भूमिका निभाई है। रानी देवी को 1114 वोट मिले हैं। वह भाजपा प्रत्याशी से काफी आगे रही हैं। राजापुर नगर पंचायत अध्यक्ष पद के तीन राउंड में बसपा 1855, भाजपा के संजीव मिश्रा 2444, सपा 1048 और निर्दल आदर्श द्विवेदी 1652 मत पाये। संजीव मिश्रा 792 वोट से आगे हैं। मऊ नगर पंचायत अध्यक्ष पद के भाजपा प्रत्याशी अमित द्विवेदी बीएसपी की उमा देवी से 470 वोटों से आगे है।

तीन दिन बाद भी नहीं कानपुर के लोहा व्यापारी हत्याकांड का खुलासा

कानपुर। यूपी के विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना के आवास क्षेत्र में लोहा व्यापारी की गोली मारकर हत्या के बाद 5 लाख की नगदी लूट ले जाने जैसी संगीन घटना का खुलासा तीन दिन बाद भी नहीं हो पाया है। इससे व्यापारियों में जबरदस्त रोष भी व्याप्त है और वह विरोध में पुलिस के खिलाफ प्रदर्शन की तैयारी कर रहे हैं` अवगत कराते चलें कि बीते बुधवार की देर शाम लोहा कारोबारी संजय गौड़ की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। उनकी शिवकटरा मोड़ के पास रामा आयरन ट्रेडर्स के नाम से दुकान है।यह घटना तब हुई थी जब वह गुरुवार को रोजाना की तरह वह अपनी दुकान पर बैठे हुए थे और दिन भर के लेन देन का हिसाब किताब कर रहे थे। इसी दौरान शाम करीब साढ़े सात बजे अपाचे बाइक सवार तीन बदमाश उनके प्रतिष्ठान पर पहुंचे और लूटपाट शुरू कर दी। लूटपाट का विरोध करने पर बदमाशों ने संजय गौड़ के सीने में गोली मार दी, जिससे उनकी मृत्यु हो गई थी।

इस घटना के बाद चकेरी थाना क्षेत्र में ही रहने वाले उत्तर प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष सतीश महाना भी मौके पर पहुंचे थे और घटना का खुलासा नहीं करने पर पुलिस कर्मियों के खिलाफ कार्रवाई की चेतावनी भी दी थी। जिसके बाद पुलिस इस घटना के जल्द खुलासे के लिए लगातार प्रयासरत भी है लेकिन उसे 8 दिन बाद भी सफलता नहीं मिल पाई है

रूस के इनकार के बाद यूक्रेन ने बखमुत में बढ़त का किया दावा, कहा- दो किमी आगे बढ़ी सेना

मास्को। रूस और यूक्रेन के बीच चल रहे संघर्ष को 15 महीने से ज्यादा समय हो चुका है। इसी बीच यूक्रेन ने दावा किया है कि उसने बखमुत पर फिर से कब्जा कर लिया है। यह यूक्रेन के पूर्वी शहर में लगातार रूस के आगे बढ़ने के महीनों के बाद एक दुर्लभ बढ़त है। कीव ने कहा कि उसकी सेना एक हफ्ते में दो किमी (1.2 मील) आगे बढ़ गई है। वहीं, रूस ने कहा कि उसके सैनिक एक क्षेत्र में फिर से एकत्रित हो गए हैं। ये दावे बखमुत में एक बदलाव का संकेत देते हैं, लेकिन यूक्रेन के जवाबी हमले का व्यापक रूप से कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं है। हालांकि, रूस के कब्जे वाले लुहांस्क शहर में दो विस्फोट की सूचना मिली थी। सोशल मीडिया पर पोस्ट की गई तस्वीरें, शहर से उठते काले धुएं का एक बड़ा गुबार दिखाती हैं, जो पूर्वी यूक्रेन में फ्रंट लाइन के पीछे लगभग 90 किमी (55.9 मील) की दूरी पर स्थित है। हालांकि विस्फोट के कारणों की पुष्टि नहीं हुई है, लेकिन यह विस्फोट ब्रिटेन के उस बयान के एक दिन बाद हुए हैं, जिसमें ब्रिटेन ने कहा था कि उसने यूक्रेन को लंबी दूरी की स्टॉर्म शैडो क्रूज मिसाइलों की आपूर्ति की है।

लुहांस्क हिमर्स रॉकेट की पहुंच से बाहर है, जिसपर यूक्रेन पहले से रूसी लक्ष्यों के खिलाफ बड़े हमलों के लिए भरोसा करता आया है। लेकिन इस क्षेत्र में रूस द्वारा नियुक्त अधिकारियों ने कहा कि उन्हें लगता है कि इस विस्फोट के लिए यूक्रेनी निर्मित मिसाइलें जिम्मेदार थीं, जो दो निष्क्रिय उद्यमों की प्रशासनिक इमारतों पर हमला कर रही थीं। इससे पहले रूस के रक्षा मंत्रालय ने कहा था कि बखमुत क्षेत्र में रूसी सैनिकों ने रणनीतिक कारणों से अपनी स्थिति बदल ली है।

इमरान पर सरकार व सुप्रीम कोर्ट आमने-सामने, सत्ताधारी दल करेगा अदालत के बाहर प्रदर्शन

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में अब भी हालात बहुत अच्छे नहीं हैं। परिस्थितियां कुछ ऐसी बन रही हैं कि आने वाले दिनों में हालात और भी खराब हो सकते हैं, क्योंकि सत्तापक्ष के गठबंधन ने अब पीटीआई के खिलाफ सीधा मोर्चा खोल दिया है।? इमरान को सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट से मिली रियायतों पर सत्ताधारी गठबंधन पीडीएम के संयोजक मौलाना फजलुर रहमान ने ऐलान किया है कि सोमवार को गठबंधन से जुड़े सभी दलों के कार्यकर्ता इस्लामाबाद में सुप्रीम कोर्ट के सामने विरोध प्रदर्शन करेंगे। पीडीएम का आरोप है कि चीफ जस्टिस उमर अता बंदियाल इमरान खान के समर्थक हैं और उनके पक्ष में फैसले सुना रहे हैं। पीडीएम के संयोजक ने कहा, बंदियाल की सास इमरान की पार्टी की सदस्य हैं। इससे पहले लाहौर पुलिस की एक टीम पंजाब प्रांत में दर्ज मामलों को लेकर इमरान खान को गिरफ्तार करने इस्लामाबाद पहुंची। हालांकि उनकी गिरफ्तारी की आशंका बहुत कम रह गई?है। वहीं, इमरान ने 9 मई के बाद उनके खिलाफ दर्ज मामलों पर एक अलग याचिका देकर कोर्ट से कहा कि उन्हें हिंसा की कोई जानकारी नहीं है लेकिन उनके खिलाफ मामले दर्ज किए गए। इस पर उन्हें जमानत देते हुए जस्टिस मियांगुल हसन औरंगजेब ने कहा कि गिरफ्तारी के दौरान हिंसा की निंदा की जानी चाहिए। दूसरी ओर, इस्लामाबाद हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस आमेर फारूक ने तोशाखाना मामले में इमरान खान के अभियोग पर रोक लगा दी। खान के वकील ख्वाजा हैरिस ने हाईकोर्ट में दलील दी कि चुनाव आयोग ने कानून के मुताबिक उनके मुवक्किल के खिलाफ कोई शिकायत नहीं की।

Indian Ocean के तटवर्ती देशों के लचीले भविष्य के लिए आपसी विश्वास, सम्मान की आवश्यकता: हसीना

ढाका। बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना ने कहा कि हिंद महासागर के तटवर्ती राष्ट्रों के लचीले भविष्य के लिए उनके बीच सम्मान और आपसी विश्वास की आवश्यकता है। उक्त विषय पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि उनका देश क्षेत्र में शांति के लिए अपनी भूमिका निभाने के लिए प्रतिबद्ध है। बांग्लादेश की राजधानी में दो दिवसीय हिंद महासागर सम्मेलन (आईओसी) के छठवें संस्करण का उद्घाटन करते हुए हसीना ने कहा कि हिंद महासागर न केवल बांग्लादेश के लिए, बल्कि इस क्षेत्र के सभी देशों के लिए अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण महत्व रखता है।उन्होंने सम्मेलन के दौरान कहा, हम इस क्षेत्र में शांति के लिए अपनी भूमिका निभाने के लिए प्रतिबद्ध हैं और उम्मीद करते हैं कि अन्य सभी देश एक लचीला भविष्य सुनिश्चित करने के लिए भी ऐसा ही करेंगे। हिंद महासागर सम्मेलन (आईओसी) के छठवें संस्करण का आयोजन बांग्लादेश के विदेश मंत्रालय द्वारा नई दिल्ली स्थित विचारक संस्था (थिंक टैंक) इंडिया फाउंडेशन के साथ मिलकर किया जा रहा है। हसीना ने कहा कि एक तटीय देश होने के नाते बांग्लादेश सदियों से समुद्री गतिविधियों का केंद्र रहा है और वह कई क्षेत्रीय मंचों पर सक्रिय है।

तीन साल सूखा झेलने वाले इथियोपिया व सोमालिया में बाढ़ से तबाही

अदिस अबाबा/ मोगादिशु तीन साल तक सूखा झेलने वाले इथियोपिया व सोमालिया में अब भीषण बाढ़ से तबाही मच गई है। अब तक दर्जनों लोगों की मौत हो चुकी है और तीन लाख से अधिक लोग पलायन को विवश हो गए हैं।

इथियोपिया व सोमिलिया में तीन साल के सूखे के बाद मार्च में तेज बारिश हुई। मार्च के पहले 25 दिन इथियोपिया में सामान्य से अधिक बारिश वाले रहे। जलवायु वैज्ञानिकों के मुताबिक आमतौर पर केन्या में बारिश ज्यादा समय तक रहती है। बाद में इथियोपिया और सोमालिया में बारिश होती है।

इस साल बारिश साथ में ही शुरू हुई और मार्च के आखिरी दो सप्ताह में तीनों देशों में इतनी बारिश हुई कि बाढ़ ही आ गई। इथियोपिया में तेज बारिश के चलते शबेले और जुबा नदियां ओवर फ्लो हो गई। मानवीय मामलों का समन्वय करने वाले संयुक्त राष्ट्र संघ के कार्यालय के अनुसार, दक्षिणी सोमालिया और पूर्वी इथियोपिया में दो नदियों के बांध टूट जाने से वहां घरों, स्कूलों और स्वास्थ्य सुविधाओं को नुकसान पहुंचा। इथियोपिया और सोमालिया में हुई बारिश से करीब 1,000 हेक्टेयर से अधिक फसल बर्बाद हो गई। इन देशों के लोगों का रोजगार ही कृषि है। दोनों देशों के तीन लाख से अधिक लोग पलायन को विवश हो गए हैं।

नवाज शरीफ ने पार्टी को इमरान खान की रिहाई के खिलाफ विरोध-प्रदर्शन का निर्देश दिया

लाहौर। पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) ने घोषणा की कि वह पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की रिहाई के अदालत के फैसले खिलाफ लाहौर समेत देश भर में बड़े शहरों में विरोध-प्रदर्शन करेगी। स्थानीय मीडिया रिपोर्टों में यह बात कही गई है। विवरण के अनुसार, इस्लामाबाद उच्च न्यायालय (आईएचसी) की खंडपीठ ने अल-कादिर ट्रस्ट भ्रष्टाचार मामले में पाकिस्तान तहरीक-ए इंसाफ (पीटीआई) प्रमुख इमरान खान को दो सप्ताह की अंतरिम जमानत दी। समा टीवी ने बताया कि पीएमएल-एन प्रमुख नवाज शरीफ ने पार्टी नेतृत्व से विरोध-प्रदर्शनों के लिए अपने समर्थकों को जुटाने का आह्वान किया है। रैलियां लाहौर, फैसलाबाद, सरगोधा, गुजरांवाला और कसूर में आयोजित की जाएंगी, जिनमें मरियम नवाज पंजाब की प्रांतीय राजधानी में विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व करेंगी।इसके अलावा, पीएमएल-एन ने खैबर पख्तूनख्वा (केपी), क्वेटा और कराची में विरोध रैलियां आयोजित करने की भी योजना बनाई है। आगामी विरोध-प्रदर्शनों के लिए पार्टी की रणनीति और कार्य योजना पर चर्चा करने के लिए साहीवाल, बहावलपुर और रावलपिंडी में भी बैठकें आयोजित की जाएंगी।

इमरान खान लाहौर में घर पहुंचे, जोरदार स्वागत, पुलिस पर रोकने का आरोप जड़ा

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान गिरफ्तारी के बाद कानूनी राहत पाकर अपने लाहौर स्थित आवास पहुंच गए हैं। उन्होंने पुलिस पर जबरन रोकने का आरोप जड़ा है।

इमरान खान को सुप्रीम कोर्ट ने फौरी तौर पर रिहा करने के आदेश दिया। हाई कोर्ट ने उन्हें जमानत प्रदान की। इस राहत के बाद इमरान शनिवार सुबह लाहौर के जमान पार्क स्थित अपने आवास पहुंचे। इस्लामाबाद से लाहौर तक जगह-जगह उनका स्वागत किया गया।

घर पहुंचे खान ने कहा कि इस्लामाबाद पुलिस ने उन्हें लाहौर न जाने देने के हर संभव प्रयास किए। दरअसल, जमानत दिए जाने के बावजूद सुरक्षा मुहैया कराने को लेकर खान को अदालत परिसर में रखा गया था। इमरान ने कहा कि वह जबरन हिरासत में लेने की घटना के बारे में पूरे देश को बताएंगे। पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ के कार्यकर्ताओं

ने इमरान खान का घर पहुंचने पर जोरदार स्वागत किया। स्वागत करने वालों में इमरान की बहनों के अलावा परिवार के अन्य सदस्य भी शामिल हैं। सभी ने उनकी सेहत के बारे में जानकारी ली। बाद में इमरान ने एक वीडियो संदेश में कहा कि इस्लामाबाद के पुलिस महानिरीक्षक अकबर नासिर ने उन्हें इस्लामाबाद उच्च न्यायालय में रखने की पूरी कोशिश की। उन्होंने मुझे तीन घंटे तक बाहर नहीं निकलने दिया। ये तीन घंटे बेहद खतरनाक रहे। इमरान के मुताबिक उन्होंने पुलिस महानिरीक्षक से कहा कि वह पूरे पाकिस्तान को बता देंगे कि उनका अपहरण किया जा रहा है।

अरब क्षेत्र में सैन्य मौजूदगी बढ़ाएगा अमेरिका

वाशिंगटन। अमेरिकी सेना अरब क्षेत्र में अपनी मौजूदगी बढ़ाएगी। अरब क्षेत्र की समुद्री सीमा में ईरान द्वारा कई व्यापारिक जहाजों का उत्पीड़न किये जाने का मामला सामने आने के बाद अमेरिका ने यह फैसला किया है।

पिछले दो वर्ष में खाड़ी से गुजरने वाले 15 अंतरराष्ट्रीय जहाजों का उत्पीड़न हुआ या फिर उन पर हमला किया गया। इन स्थितियों के लिए ईरान को जिम्मेदार ठहराया गया है। आरोप है कि बीते महीने ईरान की नौसेना ने पनामा के एक व्यापारिक जहाज को जब्त कर लिया था, जिसे लेकर काफी तनाव बढ़ गया था। उससे पहले भी ईरान ने मार्शल आइलैंड के एक तेल के टैंकर को जब्त कर लिया था।

इस पर अमेरिका ने सख्त रुख अख्तियार किया गया है। व्हाइट हाउस के प्रवक्ता जॉन किर्बी ने कहा कि रक्षा विभाग खाड़ी में अपनी रक्षात्मक क्षमता को मजबूत करने की योजना बना

रहा है। इसके लिए क्षेत्रीय ताकतों के साथ मिलकर सहयोग और समन्वय बढ़ाया जाएगा। अब अमेरिका ने बहरीन स्थित अमेरिकी नौसेना की पांचवीं फ्लीट के माध्यम से पेट्रोलिंग बढ़ाने का फैसला लिया है। अमेरिका की पांचवीं फ्लीट के कमांडर वाइस एडमिरल ब्रैड कूपर ने अपने बयान में कहा कि ईरान गैरजिम्मेदार तरीके से व्यापारिक जहाजों का उत्पीड़न और उन्हें जब्त कर रहा है और इसे रोका जाना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय सीमा में नेवीगेशन और जहाजों की आवाजाही किसी भी दबाव से मुक्त होनी चाहिए।

पाकिस्तान :सेना का लोकतंत्र में विश्वास का दावा, मार्शल लॉ लगाए जाने से इनकार

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में पूर्व प्रधानमंत्री व पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के अध्यक्ष इमरान खान की गिरफ्तारी के बाद से चल रहे हंगामे के बीच पाकिस्तानी सेना ने लोकतंत्र में विश्वास का दावा किया है। साथ ही मार्शल लॉ लगाए जाने से साफ इनकार किया।

पाकिस्तान में इमरान खान की गिरफ्तारी के बाद से ही पूरे देश में घमासान मचा है। देश भर में हुई हिंसा व आगजनी में एक दर्जन से अधिक लोगों की मौत हो गई, जबकि सैकड़ों लोगों पर मुकदमे दर्ज किये गए हैं। आंदोलित लोगों के निशाने पर सेना है और रावलपिंडी में सैन्य मुख्यालय व लाहौर में कोर कमांडर के आवास पर भी हमला किया गया। ऐसे में पाकिस्तान में

मार्शल लॉ लगाए जाने की चर्चा भी तेजी से हो रही थी। इस बीच सेना ने ऐसी किसी भी चर्चा को खारिज कर दिया है।

पाकिस्तानी सेना की मीडिया विंग इंटर-सर्विसेज पब्लिक रिलेशंस (आईएसपीआर) के महानिदेशक मेजर जनरल अहमद शरीफ चौधरी ने कहा कि सेना लोकतंत्र का समर्थन करती है और आगे भी करती रहेगी।

उन्होंने कहा कि सेना प्रमुख जनरल असीम मुनीर और सेना के बड़े-बड़े अधिकारी भी लोकतंत्र में विश्वास करते हैं। उन्होंने पाकिस्तान में चल रही अराजकता के कारण सेना के अधिकारियों के इस्तीफा देने की खबरों को भी खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि कई लोग अराजकता की स्थिति उत्पन्न करने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन इन दुश्मनों के सभी प्रयासों के बावजूद सेना एकजुट होकर काम कर रही है। न तो किसी सेना के अधिकारी ने इस्तीफा दिया है और न ही किसी आदेश की अवहेलना की है।

ढाका में भारत और नेपाल के विदेश मंत्रियों के बीच हुई बैठक

काठमांडू। नेपाल के विदेश मंत्री एनपी साऊद ने भारत के विदेश मंत्री डॉ एस जयशंकर के बीच बैठक की। बांग्लादेश के ढाका में हुई इस बैठक में दोनों देशों के बीच संबंधों को मजबूत करने पर चर्चा हुई। यह जानकारी भारत के विदेश मंत्री जयशंकर ने ट्वीट कर दी।उन्होंने बताया कि दोनों देशों के बीच ऊर्जा, कनेक्टिविटी और लोगों के बीच संबंधों को और मजबूत करने पर चर्चा हुई। जयशंकर ने साऊद को विदेश मंत्री का प्रभार मिलने पर बधाई भी दी। साऊद विदेश मंत्री बनने के बाद पहली बार अपने समकक्ष जयशंकर से मिले। उल्लेखनीय है कि छठवां हिंद महासागर सम्मेलन में ढाका में हो रहा है। इसी सम्मेलन में शामिल होने के लिए साऊद और जयशंकर दोनों ढाका में हैं।

मध्यपूर्व के एक छोटे से देश में बनाया जा रहा भव्य नया अमेरिकी दूतावास, इस वजह से आया विवादों में

लेबनान। लेबनान में निर्माणाधीन नया अमेरिकी दूतावास परिसर अपने विशाल आकार और संपन्नता को लेकर विवाद पैदा कर रहा है। अमेरिका एक ऐसे देश में बड़े आकार के संपन्न दूतावास कर निर्माण कर रहा है जहां की लगभग 80 फीसदी आबादी गरीबी रेखा के

क्या अमेरिका लेबनान में शिफ्ट हो गया? वहीं, एक अन्य यूजर अबेद ए अय्यूब ने नए परिसर की भव्यता का जवाब देते हुए ट्वीट किया, हो सकता है कि आपको उन सभी लंबित वीजा आवेदनों पर काम करने के लिए ज्यादा जगह की आवश्यकता हो। अय्यूब अमेरिकी-अरब विरोधी भेदभाव समिति के राष्ट्रीय कार्यकारी निदेशक हैं। दूतावास द्वारा प्रकाशित कंप्यूटर-जेनरेटेड तस्वीरें एक अति-आधुनिक परिसर दिखाती हैं, जिसमें ऊंची कांच की खिड़कियों वाली बहुमंजिला इमारतें, मनोरंजक क्षेत्र और हरियाली से घिरा एक लेकिन इसमें लेबनानी मूल के अमेरिकी निवासियों की अच्छी खासी आबादी है। सोशल मीडिया एक्टिविस्ट सैंडी ने ट्वीट किया, स्विमिंग पूल और लेबनान की राजधानी के दृश्य दिखाई देते हैं।

इस परियोजना की वेबसाइट के अनुसार, परिसर में एक बड़ा न्यायालय, वकालती प्रतिनिधि और कर्मचारियों के आवास, समुदाय और उनके सहयोगियों के लिए सुविधाएं शामिल हैं। कोरोना महामारी से लेकर 2020 के बेरूत विस्फोट तक, लेबनान को कई संकटों का सामना करना पड़ा है। जिसने इसकी अर्थव्यवस्था को बर्बाद कर दिया है। कई लेबनानी भोजन, दवा और बिजली सहित अन्य बुनियादी वस्तुओं को वहन करने में असमर्थ हैं। एक अन्य यूजर ने ट्वीट किया, 'इन्हें कंक्रीट खाने दीजिए।' बता दें कि दूतावास परिसर के लिए योजनाओं की घोषणा 2015 में की गई थी और बताया जाता है कि इसकी लागत एक अरब डॉलर है।

26 वर्षीय युवती ने कराया गर्भपात, तो गुस्से से आगबूबला हुए प्रेमी ने सिर में मारी गोली

वाशिंगटन। अमेरिका के कई राज्यों में महिलाओं और लड़कियों को गर्भपात नहीं कराने की अनुमति है। यह नियम टेक्सास पर भी लागू होते हैं। टेक्सास ने सितंबर 2021 में लगभग छह सप्ताह की गर्भावस्था के बाद गर्भपात पर प्रतिबंध लगा दिया था। हालांकि बाद में, मेडिकल इमरजेंसी के मामलों में छूट दे दी गई थी। अब इन्हीं नियमों के चलते एक 26 वर्षीय युवती को अपनी जान से हाथ धोना पड़ गया। दरअसल, युवती के दूसरे राज्य में गर्भपात कराने के बाद उसके प्रेमी ने गोली मारकर हत्या कर दी। फिलहाल आरोपी जेल में है। पुलिस के अनुसार, गैब्रिएला गोंजालेज कोलोराडो से वापस आई थीं। उन्होंने वहां अपना गर्भपात कराया था। जब

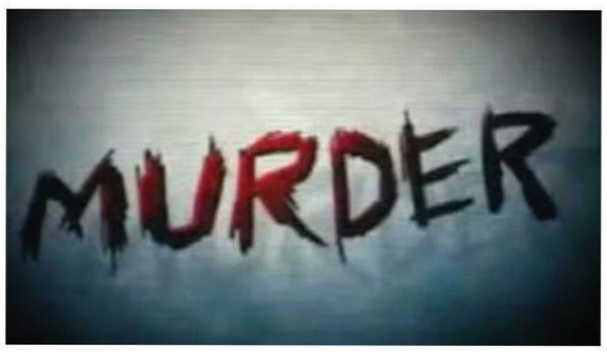

इसकी जानकारी 22 वर्षीय हेरोल्ड थॉम्सन (जो उनके प्रेमी थे) को हुई तो वह तिलमिला गया। पार्किंग स्थल में लगे सीसीटीवी कैमरे से पता चलता है कि आरोपी ने कैमरे से बचाने के लिए कार को थोड़ा आगे बढ़ाया। बाद में, गुस्से में युवती को कार से धकेल दिया और बंदूक बाहर निकाल ली। युवती ने भागने की कोशिश की, तो उसके सिर पर गोली मार दी। आरोपी ने भागने से पहले कई बार गोंजालेज को गोली मारी। थॉम्सन को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। उसे अभी डोलास की जेल में रखा गया है। बताया जा रहा है कि युवती की बहन घटनास्थल के पास मौजूद थी। उसने गोली की आवाज सुनी थी। वहीं एक व्यक्ति ने बताया कि गोंजलेज के पास फोन नहीं था, जिससे वह पुलिस को बुला सकती। बता दें, थॉम्सन पर पहले से ही एक मामला दर्ज है। उस पर परिवार के एक सदस्य के साथ मारपीट करने व गला घोंटने का आरोप है।

अफगानिस्तान के दौरे पर पहुंचे कतर के प्रधानमंत्री, पश्चिम एशिया की राजनीति में बड़े बदलाव के संकेत

काबुल। कतर के प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री शेख मोहम्मद बिन अब्दुलरहमान अल थानी अफगानिस्तान के दौरे पर पहुंचे। कंधार में कतर के प्रतिनिधिमंडल ने तालिबान के शीर्ष नेतृत्व से मुलाकात की। कतर के प्रधानमंत्री के अफगानिस्तान दौरे पर के बड़े मायने निकाले जा रहे हैं। बता दें कि साल 2020 में जब अमेरिका, अफगानिस्तान से निकला था, तो दोनों देशों के बीच बातचीत में कतर ने ही मध्यस्थ की भूमिका निभाई थी।

दोनों देशों में सहयोग बढ़ाने पर होगी चर्चा

कतर के प्रधानमंत्री, अफगानिस्तान के प्रधानमंत्री मोहम्मद हसन अखुंद से मुलाकात करेंगे। दोनों नेताओं की मुलाकात से पहले तालिबान के प्रवक्ता जैबुल्लाह मुजाहिद ने ट्वीट करते हुए लिखा कि 'दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों की मुलाकात में संबंधों को मजबूत करने और दोनों देशों के बीच विश्वास को बढ़ाने पर चर्चा होगी। साथ ही शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक क्षेत्रों में भी अफगानिस्तान और अफगानिस्तान के बीच सहयोग बढ़ाने पर चर्चा होगी।'

अमेरिका और तालिबान के बीच कराई थी मध्यस्थता

29 फरवरी 2020 को अमेरिका और तालिबान के बीच शांति समझौते पर हस्ताक्षर हुए थे। इस शांति समझौते में

कतर ने ही मध्यस्थ की भूमिका निभाई थी। साल 2013 में कतर ने ही पहली बार तालिबान को दोहा में अपना कार्यालय खोलने की इजाजत दी थी। अमेरिका और तालिबान के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाकर कतर की पश्चिम एशिया में भूमिका बढ़ी है।

पश्चिम एशिया की राजनीति में पकड़ मजबूत करने की चाह

विदेश मामलों पर नजर रखने वाले लोगों का कहना है कि कतर, पश्चिम एशिया की राजनीति में अपनी ताकत को बढ़ाना चाहता है। अभी पश्चिम एशिया में सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और ईरान का दबदबा है लेकिन ऊर्जा क्षेत्र की ताकत होने के चलते अब कतर भी पश्चिम एशिया की राजनीति में अपनी पकड़ को मजबूत करने में जुट गया है। अमेरिका और तालिबान के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाकर कतर ने अपनी इस महत्वकांक्षा की तरफ कदम भी बढ़ा दिए हैं। कतर की सऊदी अरब और यूएई के साथ तनातनी का इतिहास रहा है, यही वजह है कि पश्चिम एशिया में तेजी से बदल रहे हालातों को देखते हुए कतर पीछे नहीं रहना चाहता।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।